।। श्री हरिः ।। ।। श्री श्रीर्जयति ।। ।। श्री स्वामिनी जी ।।

"ऋते ज्ञानान मुक्तिः"

'नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रं इह विद्यते ।'

"महासाम्राज्य पदवीं आरूढा परमेश्वरी"

श्री वैदिक सनातन

व्रतोत्सव पर्व प्रकाशिनी

विक्रम सम्वत् २०८२, राष्ट्रीय (शक) सम्वत् १९४७

बार्हस्पत्य मानेन – षष्टि अब्दानां मध्ये रूद्र विंशतिकायां सिध्दार्थीनाम संवत्सरः प्रवर्तते

।। जय जय श्रीजी परम कृपालु शिव कामेश्वर वृहद् गोपाल ।।

अखण्ड भूमण्डलाचार्य प्रातः स्मरणीय
अनन्त श्री विभूषिताचार्य श्री श्री शीलचन्द्राचार्य महाराज्ञानां
ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठस्य (श्रीजी दरबार–बड़ी हवेली)
मतानुसारेण–सनातन धर्म मूल 'काल व्यापिन मतानुसारेण'
श्री वैदिक सनातन धर्म परिषद देन् :
प्रकाशितं

कर्मणो यस्य यः कालस्तत्काल व्यापिनी तिथिः।
तथा कर्माणि कुर्वीत, ह्यास वृद्धि न कारणम्।। (वृद्ध याज्ञवल्क्य)

अखण्ड भूमण्डलाचार्य प्रातः स्मरणीय अनन्त श्री विभूषिताचार्य
ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठाधीश्वर श्री श्री श्रीपाद् आचार्य
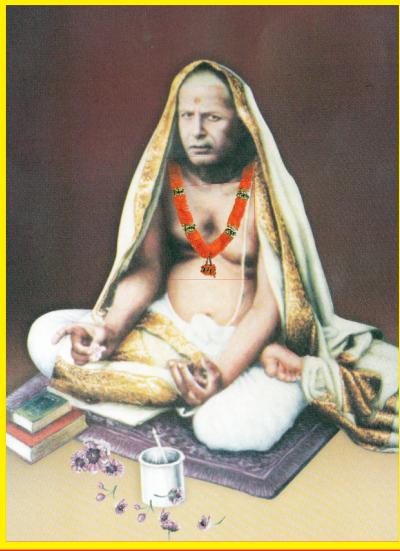
श्री श्री 1008 श्री वासुदेव जी बाबा महाराज
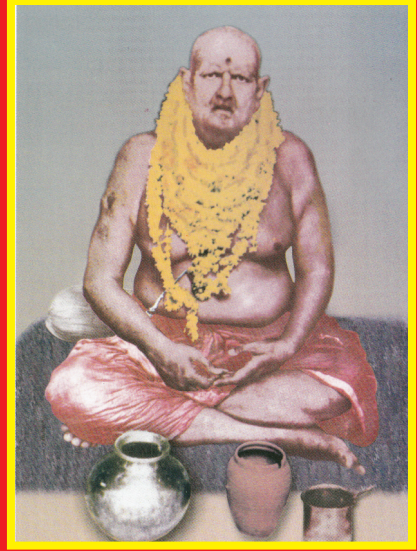
श्री श्री 1008 श्री केशवदेव जी महाराज
(गुरुजी महाराज)
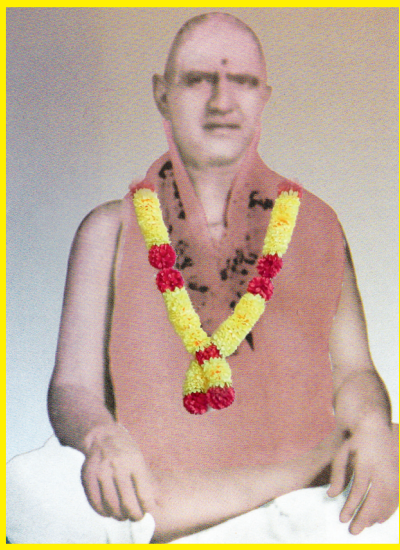
श्री श्री 1008 श्री शिवप्रकाश देव जी महाराज
(लाल बाबा महाराज)

श्री श्री 1008 श्री लक्ष्मीपति देवाचार्य जी महाराज
(मुन्ना बाबा महाराज)

बिन्दुत्रिकोणवसुकोणदशार युग्ममन्वस्रनागदलासंयुत षोडशारम्
वृत्तत्रयं च धरणी सदन त्रयं च श्रीचक्रमेतदुदितं परदेवतायाः।।
''सा तेजः पुंजाकृतिःऽनामाख्या श्रीविद्येति, परब्रह्मस्वरूपिणी चिच्छक्तिः
श्री विद्यैव अनामेति।'' ......भगवान श्री गौडपादाचार्यः

''बिन्दु त्रिकोण, अष्ट कोण, दशकोण पुनः दशकोण, चतुर्दश कोण, अष्टदल पद्म, षोडश दल पद्म, त्रिवृत्त और चतुरस्र ऐसे महान चक्रराज श्रीचक्र में जगत के एकमात्र अधिष्ठान अद्वय परतत्व परदेवता श्री श्रीजी महाराज का उदय होता है अर्थात् परदेवता पराम्बा श्रीमाता त्रिपुरसुन्दरी भगवान त्रिपुरसुन्दर श्रीजी महाराज का पूजन किया जाता है।''

''परदेवता भगवान–भगवती का वह तेजपुञ्ज वह परतत्व सच्चिदानन्द अद्वय परब्रह्म जो श्रीविद्यान्तर्गत प्रकट होता है, वह अनामाख्य है।''
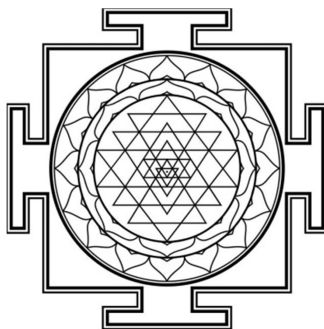
''जब मनुष्य अपनी मति को किसी विशिष्ट प्रकार की बना लेता है तब उसको तत्व का दर्शन नहीं होता है, उसे विशेषण का दर्शन होता है। जब किसी मत विशेष का आग्रह कर लोगे तो जो अमत है, जो सर्वतन्त्र स्वतन्त्र है जो सर्वोच्च परब्रह्म है जो 'यन्मनसा न मनुते येनाहुर्मनो मतम् ।' तुम्हारी मति का भी प्रेरक है, जो तुम्हारी मति के भी पेट में बैठा हुआ है उस चिन्मात्र सर्वोच्च तत्व का दर्शन किस प्रकार होगा? लाल, पीले, हरे चश्मे से तो लाल, पीला, हरा ही दिखेगा ना !''

''भगवान श्रीजी महाराज ये उस परम तत्त्व का, उस अद्वय ज्ञान का सच्चिदानन्द स्वरूप का उस परम शक्ति का वह नाम है जो अशेष देव विग्रहों का प्रतिनिधि है। उस असीमित सर्वतन्त्र स्वतन्त्र पूर्णतत्व को राजराजेश्वरी श्रीजी महारानी/श्रीजी महाराज इस नाम से पुकारना सर्वथा उपयुक्त है।''

''जिसके मन में सत्य से प्रेम नहीं होता, उसके मन में ज्ञान से भी प्रेम नहीं होता ।''

– अखण्डभूमण्डलाचार्य प्रातः स्मरणीय ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठाधीश्वर श्रीश्री 1008 श्री लक्ष्मीपतिदेवाचार्य जी महाराज (श्री मुन्ना बाबा महाराज)

।। श्री श्रीर्जयति ।।

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः ।। । परांम्बा श्री राजराजेश्वरी श्री श्रियै नमः।।

श्री सत्यसनातनधर्मोविजयतेतराम्

।। श्री बाबा महाराजाय नमः ।।

प्राक्कथन

कला मुहूर्त काष्ठाहर्मासर्तु शरदात्मने।
नमः सहस्राशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

(भगवान ऋषि बदरायण व्यास)

– काल (अर्थात समय के जितने भी स्वरूप हैं), काष्ठा (15 बार पलक झपकने का समय) कला (30 बार पलक झपकने का समय) मुहूर्त (30 कला का समय या 2 घड़ी अर्थात 48 मिनट का समय) अर्ह (अहोरात्र अर्थात 24 घण्टे का समय) मास (महीना अर्थात् 30 दिन) और शरदादि ऋतु (2 मास अर्थात महीना) आदि आपका ही स्वरूप हैं। ऐसी महान महिमावान महाकालस्वरूप सहस्रों मुख और सहस्रों नेत्रों वाली परांम्बा पराभट्टारिका श्रीमाता जो दिव्य हैं, अलौकिक हैं, उन्हें मेरा शत शत प्रणाम है।

'**प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रम्** ज्योतिषशास्त्र में प्रत्यक्षता का अर्थ होता है – "गणितागणित परिणाम का ज्यों का त्यों दिखलाई देना।'' **ज्योतिषां सूर्यादि ग्रहाणां शास्त्रम्"** – सूर्यादि ग्रह और काल का बोध कराने वाले शास्त्र को ज्योतिष शास्त्र कहा जाता है। अतः ज्योतिष में दृक् सिद्ध या प्रत्यक्षा का विशेष महत्व है। उदाहरणार्थ जिस समय गणित से पूर्णिमा आये उस समय चन्द्रमा का परिपूर्ण बिम्ब दिखलाई दे आदि–आदि। हमारे पूर्वज ऋषियों ने अत्यन्त सूक्ष्म निरीक्षण के द्वारा समय का विभाजन, उसका प्रभाव और देशकाल की स्थिति आदि का विवेचन कर उसको पूर्ण वैज्ञानिकता प्रदान की है। पंचागों का गणित दृकतुल्य होना ही श्रेष्ठ और शास्त्र सम्मत है, जैसा कि वसिष्ठ महाराज कहते हैं कि–

'यस्मिन् पक्षे येन काले दृश्यते गणितैक्यम।
तेन पक्षेण ते कार्या ग्रहास्तत्समयोद्भवाः ।'

अप्रत्यक्ष स्थूल गणित को दिव्यदृष्टि का आर्षगणित बतलाकर उसका अनुसरण करना आचार्यों के उस आदेश की अवेलहना है जो उन्होंने पंचागों को दृक् तुल्य बनाने के लिए बड़े–बड़े ग्रन्थ लिखकर दिये हैं। वास्तव में तो सूर्य चन्द्रमा के द्वादश अंशात्मक पूर्वापर सरलान्तर का मान ही तो एक तिथि का मान है अर्थात् सूर्य और चन्द्रमा के बीच की अंशात्मक दूरी के अनुसार ही प्रतिपदादिक तिथियां होती हैं तथा वार का प्रारंभ सूर्योदय से माना जाता है। अतः दृश्य की महत्ता समझी जा सकती है। अस्तु ।

दृश्य सृष्टि अर्थात् नाम, रूप और कर्मात्मक सृष्टि, हमारे वैदिक ऋषियों का यह स्पष्ट सिद्धान्त है कि इस नाम रूपात्मक आवरण के लिए आधार भूत एक अरूपी सर्वतन्त्र स्वतन्त्र और अविनाशी आत्मतत्व है जिसे '**इदं सर्वं यदात्मा।' – आत्मा वा इदं सर्वं।'**, '**कालात्मा भगवान स्वयं'** आदिक नामों से श्रुति पुकारती है और तदनुसार प्राचीन मनीषी और ऋषि ज्योतिष शास्त्र के लिए ज्योतिः शास्त्र' ऐसा कथन करते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि समस्त भारतीय वांगमय दर्शन या विज्ञान का एकमात्र लक्ष्य स्व चेतना का विकास कर उसे परमात्मा में मिला देना या तत्तुल्य बना देना है। **भारतीय दर्शन / विज्ञान की प्रमुख विशेषता आत्मा की प्रेष्ठता या आत्मज्ञान है।** परन्तु वर्तमान में कई प्रकार की विसंगतियां देखने में आती हैं, जिनके कारण व्रत पर्वो आदि में भिन्नता आ जाती है, जिसका मुख्य कारण है – विभिन्न सम्प्रदायों की मान्यताऐं और कुछ आग्रह विशेष जो तद्–तद् सम्प्रदायों के नियामक ग्रन्थों पर आधारित होती हैं। बृहद योगी याज्ञवल्क्य के शब्दों में '**कर्मणो यस्य यः कालस्तत्काल व्यापिनी तिथिः। तथा कर्माणि कुर्वीत ह्रासवृद्धिम् न**

कारणम्।।' अर्थात् कर्म के किये जाने के समय व्याप्त तिथि ही वास्तविक तिथि है और इस प्रकार जब कार्य किया जाता है तो ह्रास और वृद्धि कोई कारण ही नहीं है। वास्तव में न तो सम्प्रदाय धर्म है और न ही धर्म सम्प्रदाय ।धर्म मुख्य है और सम्प्रदाय गौण, धर्ममूल वेद हैं, इसमें कोई संशय नहीं है – **'वेदोऽखिलोधर्ममूलं'।** श्री वैदिक सनातन धर्म अपने मूल स्वभाव में श्रौत स्मार्त धर्म है, यज्ञोपवीत धारण का विनियोग ही है कि **'श्रौत स्मार्त कर्म सिद्धयर्थं यज्ञोपवीत धारणे विनियोगः।'** अतः स्पष्ट है कि यज्ञोपवीत। जनेऊ या ब्रह्मसूत्र धारण करने वाले द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) मात्र श्रौत स्मार्त हैं। जैसा कि करपात्री जी महाराज कहते थे कि ये वैष्णव, शैव, शाक्तादि हो तो सकते हैं किन्तु श्रौत स्मार्त धर्म से अविरुद्ध सम्प्रदाय विशेष की परम्परा का ही पालन कर सकते हैं। **अर्थात् पहले ये श्रौत स्मार्त हैं और श्रौत स्मार्त धर्म का ही इनके यहां प्राधान्य रहेगा तदन्तर स्वरूचि के अनुसार ये वैष्णव शैव आदि हो सकते हैं किन्तु उन वैष्णव शैव आदिक सम्प्रदायों के सिद्धान्तों को केवल उसी सीमा तक मान सकते हैं जहां तक कि वे मूल श्रौत स्मार्त धर्म के विरूद्ध न हों।**

व्रतोत्सव पर्व दीपिका के प्रकाशन का प्रमुख उद्देश्य सरलतापूर्वक श्रौत स्मार्त सद्गृहस्थों को मूल सनातन धर्मानुसार व्रत–पर्व–उत्सवादिक का ज्ञान कराना है तथा मथुरास्थ वैदिक सनातन सत् सम्प्रदाय धर्म पीठ–श्रीपीठ, श्री श्रीजी मंदिर, बड़ी हवेली, महाराजश्री की ठेक, गतश्रम टीला के उत्सवों एवं पर्वो की जानकारी देना है। हमें स्मरण है कि पूर्व में जब प्रकाशन की इतनी सुविधाएं नहीं थीं तो चैत्र सुदी प्रतिपदा को श्रीजी दरबार में मथुरा के सभी बड़े–बड़े विद्वान इकट्ठे हुआ करते थे और प्रतिपदा को ही वर्षभर के तिथि और उत्सव निश्चित किये जाते थे। आज प्रसन्नता का विषय है कि श्रीजी दरबार की परम्परानुसार इस टिप्पणी के प्रकाशन का संयोग बना है। ज्ञात रहे कि 'श्रीपीठ–श्रीजी मंदिर' बड़ी हवेली आप्त महर्षियों वैदिक ऋषियों द्वारा उपदेशित श्रौत स्मार्त – वैदिक सत् सम्प्रदाय परंपरा का अवलम्बन करता है और वैष्णव, शैव आदिक सभी सम्प्रदायों की श्रद्धा का केन्द्र रहा है। श्रीजी दरबार का सिद्धान्त है कि **''एकम् सत्विप्रा बहुधा वदन्ति – एकं सन्तम् बहुधा कल्पयन्ति''**। आगे श्रीमद्भगवत्गीता में कहा है कि **''मया तत्मिदं सर्वम् जगत् अव्यक्तमूर्तिना'' – अव्यक्त मूर्तिना मया इदम् सर्वम् जगत् ततम्।** अर्थात् यह सम्पूर्ण जगत् मेरी ही अव्यक्त तत्नाम्नी मूर्ति में अवस्थित है।

श्रीजी दरबार बड़ी हवेली की ये परम्परा सर्वथा ऊर्ध्वरेता आप्तकाम ऋषियों की गरिमा के अनुकूल है। जिसके अनुसार ज्ञान ही प्रधान है, ज्ञान ही वरणीय है इससे इतर सब कुछ गौण। भगवान श्री कृष्ण गीता में कहते हैं कि– **'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रं इह विद्यते।'** – इस लोक में ज्ञान सदृश पवित्रतम वस्तु कोई दूसरी नहीं है। सभी प्रकार के कर्मों की परिसमाप्ति ज्ञान में ही हो जाती है **'सर्व कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्तये।' 'ज्ञानाग्निः सर्व कर्माणि भस्मात् कुरूते तथा।'** अर्थात् तत्वज्ञान होने पर संचित प्रारब्ध और क्रियमाण आदिक सभी कर्म अकर्म हो जाते हैं। श्रीमद् भागवत के उद्धव गीता प्रकरण में श्री भगवान कहते हैं कि–

ज्ञानविज्ञानसंसिद्धाः पदं श्रेष्ठं विदुर्मम ।
ज्ञानी प्रियतमोऽतो मे ज्ञानेनासौ बिभर्ति माम्।। (भाग. 11/16/3)

जो ज्ञान और विज्ञान से सम्पन्न सिद्ध पुरुष हैं, वे ही मेरे वास्तविक स्वरूप को जानते हैं। इसलिए ज्ञानी पुरुष मुझे सबसे प्रिय हैं। उद्धव जी, ज्ञानी पुरुष अपने ज्ञान के द्वारा निरन्तर मुझे अपने अंतःकरण में धारण करता है, क्योंकि मैं ज्ञान स्वरूप हूं। (श्रीमद्भागवत)

जहां तक कालव्यापिनी तिथि की बात है तो कालव्यापिनी तिथि ही हर स्थिति में हरेक व्यक्ति चाहे वह किसी भी सम्प्रदाय से हो, ग्रहण करता ही है। उद्धरण के लिये किसी

बालक के जन्म की दशा में यदि जन्म रात्रि आठ बजे है और सात बजे तक नवमी तिथि है और उसके पश्चात् दशमी, तब दशमी ही जन्मतिथि ग्रहण की जायेगी। अतः समझा जा सकता है कि कालव्यापिनि ही सनातन धर्म का मूल सिद्धान्त है जिसके अनुसार जिस समय जो तिथि होगी, वही मान्य होगी और यही सिद्धान्त क्षयादिक में भी अनुसरण किया जाता है। तब विसंगति विडम्बना ही है।

केवल एकादशी व्रत के सम्बन्ध में एक अलग व्यवस्था है, और वह भी केवल इसलिये कि एकादशी व्रत आध्यात्म से सम्बन्धित है, काल से सम्बन्धित नहीं। ध्यान दें कि 'एकादशी तिथि नहीं, एकादशी व्रत और तदनुसार व्रतोत्सव पर्व दीपिका की व्यवस्था है।

हमारे महान प्रपितामह एवं **गुरू अखण्डभूमण्डलाचार्य प्रातःस्मरणीय ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठाधीश्वर श्रीश्री 1008 श्री शिवप्रकाशदेव जी महाराज (श्री लालबाबा महाराज) जो भारतवर्ष के मान्य विद्वानों में थे, और आगम–निगम दोनों के विद्वान एकमत से आपसे नतमस्तक थे,** के शब्दों में, "उपोष्या द्वादशी शुद्धाः– द्वादशी ही एकादशी मानी जानी चाहिये एवं पंचदशी के दोनों कूटों का योग मान लेना चाहिये। दशमी विद्धा एकादशी उपोष्या नहीं होती, यहां स्मरण रहे कि एकादशी दशमी विद्धा तभी मानी जायगी जब एकादशी को अरूणोदयकाल में दशमी का स्पर्श हो। जब अरूणोदय काल से पूर्व दशमी समाप्त हो जाय तब दशमी का वेध नहीं माना जा सकता क्योंकि यह शास्त्र विरूद्ध है। शास्त्रानुसार, रात्रि स्नान का निषेध है केवल अरूणोदयकाल में ही स्नान किया जा सकता है और एकादशी व्रत का नियम किया जा सकता है। श्रीमद्भागवत प्रमाण है कि रात्रि स्नान किस प्रकार निषिद्ध है। अतएव सभी धर्मप्रेमी जो यज्ञोपवीत या जनेऊ धारण करते हैं, को इस मर्यादा का पालन करना चाहिये। प्रत्युत द्वादशी विद्धा होनी चाहिये अन्यथा शुद्ध द्वादशी ही उपोष्या माननी चाहिये। **"एकादश्यां दशमी वेधे दशमीत्वात्" "उपोष्या द्वादशी शुद्धेति वचनाद्द्वादश्या एवैएकादशीत्वाच्चरमखण्ड ग्रहणीयाद्"** – भाव यह है कि जब दशमी एकादशी में लय हो जाती है तो एकादशी को दशमी का अंश मानते हैं। शुद्ध द्वादशी ज्यों की त्यों रहती है। तदनुसार द्वादशी में एकादशी का अंश है। दश तिथियों एवं **श्रीविद्या पंचदशी** के दश अक्षरों का सम्बन्ध दश इन्द्रियों से है, **मन एकादशी है। मन का योग जब तक इन्द्रियों से बना रहता है, तब तक वह उपोष्या नहीं होती अर्थात् वृत्ति बहिर्मुखी रहती है।** बुद्धि द्वादशी, चित्त त्रयोदशी अहंकार चतुर्दशी और महत्तत्व पूर्णिमा है।" ऐसा ही मत अठारवीं शताब्दी के उद्भट विद्वान श्रीमान् भास्करराय जी का भी है। जहां तक प्रदोष की बात है तो शास्त्राज्ञा है कि **'त्रिमुहूर्तः प्रदोषः स्याद्भानवस्तंगते सती।'** प्रतिदिन सूर्यास्त के पश्चात् 2 घन्टा 24 मिनट का समय प्रदोष काल होता है और द्वादशी को यदि इस प्रदोषकाल में त्रयोदशी का स्पर्श हो जाय तो प्रदोषव्रत होता है।"

व्रतोत्सव पर्व दीपिका में प्रत्येक तिथि के आगे उसकी समाप्ति का भारतीय स्टैण्डर्ड समय घण्टा मिनटों में दिया गया है। सर्वसुलभार्थ सर्वार्थ सिद्धि आदि योगों का समय भी घण्टा–मिनटों में ही दिया गया हैं। व्रतोत्सव पर्व दीपिका का मूल आधार केतकी चित्रापक्षीय दृक तुल्य गणित पंचांग ही हैं। प्रतिमास सूर्य संक्रांति की तिथि निरयन सूर्य के आधार पर है। प्राप्त सुझावों के अनुसार प्रत्येक पृष्ठ पर राहुकाल का समय भी दे दिया गया है। वेदमाता गायत्री के स्वरूप पर कुछ प्रकाश 'श्रीपीठ–बड़ी हवेली' के आदेश/संदेश/उपदेश स्तंभ में दिया गया है। आशा है धर्मप्रेमी आत्मीय जन लाभान्वित होंगे। हेमाद्रि, कालमाधव, स्कन्द पुराणादिक में भी कहा गया है कि– **'अमा षोडशभागेन देवि प्रोक्ता महाकला। संस्थिता परमा माया देहिनां देह धारिणी। अमादि पौर्णमास्यन्ता या एव शशिनः कलाः । तिथियस्ताः समाख्याताः षोडशैव वरानने।' चन्द्रमण्डलस्य षोडश भागेन परिमिता देह धारिणी आधारशक्तिरूपा अमानाम्नी महाकला प्रोक्ता क्षयोदयरहितत्वान्नित्या**

स्त्रकसूत्रवत् सर्वानुस्यूता तदन्याः पञ्च दश कलाः प्रतिपदादि तिथि विशेष रूपा इति षोडशैव कला स्थितय इति ।

इत्यादि के अनुसार 15 तिथि नित्याओं को भी तिथियों के साथ ही दे दिया गया है और अमा नाम्नी महाकला तो सर्वानुस्यूत है ही। अर्थात् तिथि नित्या जो तिथि काल में वर्तमान है के पश्चात् महानित्या महात्रिपुरसुंदरी का पारायण है। भगवान वेदव्यास कहते हैं कि **'तिथिनित्याः कालरूपा विश्वं व्याप्यैव संस्थिताः । अर्थात् जो तिथि नित्याऐं हैं वे कालरूप अर्थात् समय बताने वाली हैं और इन्ही में तिथियां व्याप्त हैं।**

व्रतोत्सव पर्व दीपिका के आरम्भ में ऊर्ध्वाम्नाय श्रीपीठ, श्रीजी मन्दिर (बड़ी हवेली) में प्रति संवत्सर के आरम्भ में आयोजित नवरात्र महोत्सव का आमन्त्रण दिया गया है, जिसे धर्मप्रेमी सत्संगी आत्मीय आमन्त्रण समझें और महोत्सव में सम्मिलित होकर लाभान्वित हों। ऐसे ही शारदीय नवरात्र महोत्सव का आयोजन आश्विन शुक्ल पक्ष में किया जाता है जिसका विवरण 'तिथि पत्रक' में यथा स्थान दिया है, सभी धर्म प्रेमी/प्रभु प्रेमी जन दोनों महोत्सवों में सम्मिलित होकर लाभान्वित हों, कल्याण के भागी हों।

यह व्रतोत्सव–पर्व–दीपिका उद्भट् विद्वान एवं मुमुक्षु ऋषि–परम्परा के पोषक एवं पालक, मेरे सद्गुरू **अखण्डभूमण्डलाचार्य प्रातः स्मरणीय ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठाधीश्वर श्रीश्री 1008 श्री लक्ष्मीपतिदेवाचार्य जी महाराज, स्वामी विद्यानन्द जी एवं मेरे पितृचरण ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठाधीश्वर श्रीश्री 1008 श्री सुरेश जी बाबा महाराज – स्वामी रघुनाथानन्द** जी के चरणकमलों में सादर समर्पित है।

श्रीमते विद्यानन्दयोगिने परमात्मने।
रक्तशुक्लप्रभामिश्रतेजसे गुरुवे नमः।।
'सर्वतन्त्र स्वतन्त्रान् श्री चतुर्वेद कुलगुरुन्।
विद्यागुरुन् श्री लक्ष्मीपतिदेवाचार्यः प्रणमामि मुहुर्मुहुः ।।

भवन्निठः
ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठाधीश्वर
अखण्ड भूमण्डलाचार्य प्रातः स्मरणीय
अनन्त श्री विभूषिताचार्य श्री श्री शीचन्द्राचार्य महाराज्ञानां वंशावतंस
श्रृद्धेय श्रीः श्रीकान्त श्रीजी महाराज 'वेदान्त भूषण'
एम.ए., एम.कॉम, साहित्य तीर्थ सिद्धान्त ज्योतिषाचार्य
(श्रीमद् भागवत, रामकथा एवं देवी भागवत के मर्मज्ञ प्रवक्ता)
श्रीपीठ, श्री श्रीजी मंदिर (बड़ी हवेली)
महाराजश्री की ठेक, गतश्रमटीला, श्रीधाम मथुरा
मो0 8266996012

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः ।।

।। राजराजेश्वरी श्री श्रीजी महारानी की जय।। ।। राजराजेश्वर श्री श्रीजी महाराज की जय।।

।। श्री श्रीर्जयति।।

विश्वसृष्टिमान

श्री विश्वप्रबोधकाय भगवते श्री भुवनभास्कराय नमः ।।

ज्योतिष्चक्रस्य केन्द्राय जगतः स्थिति रूपिणे । त्रिनेत्र नेत्र रूपाय ग्रहेशाय नमो नमः ।

अथास्मिन् विक्रमाब्दे सृष्टितो गताब्दाः 1,95,58,85,126 श्री रामरावणयुद्धतो गताब्दाः 8,80,167 एवं च श्रीकृष्णाऽवतारतो गताब्दाः 5,251 कुरुपाण्डव युद्धतो गताब्दाः 5,126 एवं च कालक्रमानुगते **श्री विक्रमादित्य राज्यात् गताब्दाः 2082 श्री बार्हस्पत्यमानेन प्रभवादिषष्टियब्दानां मध्ये रुद्र विंशतिकायां श्री सिद्धार्थी नाम् संवत्सरः प्रवर्तते ।**

विक्रम संवत संख्या	:	2082
संवत नाम	:	श्री सिद्धार्थी (षष्टि संवत्सरानां क्रमेण त्रिपंचाशद 53 क्रमांक)
संवत वास	:	वैश्य गृहे
रोहिणी निवास	:	संधि
मेघ	:	संवर्त
वर्ष नाम	:	कार्तिक्
ईस्वी सन्	:	2025–26

आकाशस्थ ग्रहमन्त्रिपरिषद् (दश–विभागाधिकारी)

राजा	:	शनि (संहितामतान्तरे उपेश सूर्य)
मंत्री	:	सूर्य
सस्येश	:	बुध
धान्येश	:	चन्द्र
मेघेश	:	सूर्य
रसेश	:	शुक्र
नीरसेश	:	बुध
फलेश	:	शनि
धनेश	:	मंगल
दुर्गेश	:	शनि

'एते वर्षमध्ये विश्ववृतीय संसदीय विमंडले दशाऽधिकारिणः'

यस्मिन्पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यम् ।

दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम् ।। वशिष्ठ

इस संवत् में दो चन्द्रग्रहण और दो सूर्यग्रहण हैं। दोनों सूर्यग्रहण दिनांक 21–09–2025 एवं 17–02–2026 भारत में दृश्य नहीं हैं अतः सूतक नहीं लगेंगे।
दोनों चन्द्रग्रहण दिनांक 07–09–2025 तथा 03–03–2026 के भारत में दृश्य हैं अतः चन्द्रग्रहण के सूतक मान्य होंगे जिनका उल्लेख यथास्थान कर दिया गया है।

।। श्री मन्महागणाधिपतये नमः ।।

।। भगवती राजराजेश्वरी श्रीजी महारानी ।। ।। भगवान राजराजेश्वर श्रीजी महाराज ।।

संवत फलादेश भैरव–भवानी संवाद

आद्य सनातन शक्ति हो ! जीव जगत प्रतिपाल। विक्रमाब्द अभिनव बना, कहो भुवन के हाल ।।

सुनो देव! इस वर्ष में अधिनायक पद काज। शनि देवता मन्दश्री नेता नायक राज ।।

आतंक द्वन्द्व, हिंसा मति, तृष्णा तंत्र अपार। अदल बदल बहुधा बने, प्रजा तंत्र अभिसार ।।

नीति राज नवचक्र की मुद्रा पंथ प्रभार। जनमानस ले आपदा, ऋतु प्रकोप संसार।।

मंत्री पद श्री सूर्य का अभिनव पंथ निहार। नेता शासी दलपति, विग्रह विविध प्रकार ।।

सस्य धान्य के श्रीपति, बुध–चन्द्र अधिवर्ष। हरित श्वेत क्रान्ति सबल, कृषि सम्पदा हर्ष।।

रसाधीश भृगु देवता, बुध नीरस का पक्ष। खनिज सम्पदा देश की, भूमि भारत दक्ष।।

देव शनि रक्षा पदे, धन नायक श्री भौम। व्यय विशेष की धारणा, मुद्रा मार्ग विलोम।।

अर्थ तन्त्र चिन्तन गति, विश्व पक्ष अधिभार। फलाधीश शनि देवता, नहीं सुखद संसार।।

रोहिणी वास संधि भुवन, वर्ष वैश्य का कक्ष । वृष्टि खंड रचना बने, भेद भूमि को लक्ष।।

नृप फलेश दुर्गेश हो, एकै ग्रह संयोग। कम वर्षा दुर्भिक्ष दुःख, बढ़े प्रजा में रोग।।

षडाष्टकी शनि भौम की, विग्रह विविध प्रकार । यान खान कम्पन्न गति, जन धन क्षति प्रहार।।

शनि वक्र सावन बदी, बना दुःखद दुर्योग। ऋतु कोप भय आपदा, जन धन क्षति कुयोग।।

लेख सुलेख लिखे सभी, कोविद करे विचार। निर्णय गणना शास्त्र की, ग्रह गति संसार।।

धर्म कर्म पर दृढ़ रहो, राष्ट्र सत्व परिवेश। विज्ञ भवानी सुत कहें, मौलिक सूत्र निवेश ।।

....

पद्मालयां पद्मकरां पद्मपत्र निभेक्षणाम्। वन्दे पद्ममुखीं देवीं पद्मनाभप्रियां शुभाम्।।

ऊँ सर्वज्ञे सर्व वरदे सर्वदुष्ट भयंकरी। सर्व दुःखहरे देवि महालक्ष्मी नमोस्तु ते।।

जयति कञ्जपत्राक्षि जयति श्रीपति प्रिये। जय मातर्महालक्ष्मी संसारार्णवतारिणी।।

भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकाम प्रदायिनी। सुपूजिता प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।

नमस्तेस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते। शंखचक्रगदा हस्ते महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।।

श्रीवर्धन श्रीः यंत्रराज

6	1	8
7	5	3
2	9	4

पन्द्रिया यंत्र

।। जय जय श्रीजी परम कृपालु, शिवकामेश्वर वृहद् गोपाल।।
अखण्डभूमण्डलाचार्य श्री वैदिक सनातन सद्धर्म मार्ग संरक्षक श्री वैदिक सत् सम्प्रदायनिष्ठ निगमागम सार ह्रदय माथुर चतुर्वेद ब्राह्मणानां कुलगुरु प्रातः स्मरणीय श्री श्री शीलचन्द्राचार्य महाराज्ञानां ऊर्ध्वाम्नाय श्रीपीठ श्री श्रीजी मंदिर, बड़ी हवेली, श्रीजी दरबार

वर्तमान पीठाधीश्वर – **श्रृद्धेय श्रीः श्रीकांत श्रीजी महाराज**

नवरात्र आमंत्रणः

'यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति,
यत्प्रत्यभिसंविशन्ति । तद् विजिज्ञास्व, तद् ब्रह्म ।

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, इत्यादि श्रुत्या उत्पत्ति, स्थिति, संहाराः परं ब्रह्मणा–ब्रह्मात्मशक्त्या भगवत्याः राजराजेश्वर्याः पराम्बा त्रिपुरसुन्दर्याः धर्माः श्रूयन्ते। उत्पत्तिं आश्रित्य कर्मकाण्ड प्रवृत्तिः, स्थितिम् आश्रित्य उपासना मार्गो – भक्तिमार्गो वा संहारम आश्रित्य ज्ञानमार्गो – ज्ञानकाण्डो वा इति च त्रिदेव निर्णये व्याख्यातम्। इदमेव आश्रित्य तस्या च ब्रह्म विष्णु रूद्रादि संज्ञा क्रमेण भवति । **मूल अधिष्ठानैक स्वरूपाः पराम्बा भगवत्याः राजराजेश्वर्याः लौकिक लिंगत्रयेण अस्पृष्टम् सच्चिदानन्दैक विग्रहम् पुरातन महर्षीणां ब्रह्वृचाख्य वेदर्षीणां स्थापितस्तथ्यः । तथापि परतत्वाः परब्रह्मपरमात्मायाः करुणावरुणालयाः मातृ रूपम सर्वत्र सर्वाधिकं पूज्यं वेद शास्त्र सम्मतं च,** तथा 'न मातुः परमस्ति दैवतम्।' अपराध परम्परावृतं न हि माता समुपेक्षते सुतम। विपदि किं करणीयं स्मरणीयं चरण युगलमम्बायाः, मातापरागीयते। इत्यादिभिर्हृद्यैः पद्यैः मातृरूपेणैव ध्येयत्वं निश्चीयते। त्रिविधदावदग्धानां भव भवन पतितानां पीयूषवर्षैः परित्रातुं बद्ध परिकरायाः मातुश्चरणयोः शरणागति इति च परतत्वबोधनैक धिषणानां चित्संवित्स्वरूप लब्धानां निगमागमादि सार ह्रदयाणां श्रीविद्यापीठस्य आचार्याणां सम्यक् प्रकारेण विनिश्चितम्। अस्याः पारम्पर्याः देवीपर्व दिनानाम् विशिष्ट महत्वं मन्यते। अस्य क्रमेण सांवत्सरिक नवरात्र महोत्सव अपि अत्यंत महत्वपूर्ण मन्यन्ते।

अस्मिन महोत्सवे समागत्य गुरुपीठाचार्याणां शुभाशीर्वादं
संलभ्य परम पुण्यस्य भाजनं भवन्तु, इति शुभामन्त्रणम्।

जिसके द्वारा यह सम्पूर्ण जगत् उत्पन्न होता है – इत्यादि श्रुति वाक्यों के अनुसार उत्पत्ति, स्थिति और संहार ब्रह्मात्म शक्ति अर्थात् ब्रह्म की सामर्थ्य ब्रह्माभिन्न पराम्बा भगवती राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी के ही धर्म जाने जाते हैं। उत्पत्ति द्वारा कर्मकाण्ड की प्रवृत्ति, स्थिति द्वारा उपासना मार्ग या भक्तिमार्ग और संहार द्वारा ज्ञानमार्ग (ज्ञानकाण्ड) का और तदनुसार त्रिदेवों का निर्णय किया जाता है। इसी आधार पर उनकी ब्रह्मा, विष्णु, रुद्रादि संज्ञा क्रम से होती है। ब्रह्माण्ड की एकमेव और मूल अधिष्ठान स्वरूपा पराम्बा भगवती राजराजेश्वरी लिंगत्रय भेद से सर्वथा अस्पृष्ट हैं और सच्चिदानन्दैक विग्रह मात्र हैं, यह प्राचीन महर्षियों, वेद दृष्टा ब्रह्वृचाख्य वेद पुरुषों का सुस्थापित सिद्धान्त है। फिर भी, परतत्व परब्रह्म परमात्मा का मातृ स्वरूप ही यत्र–तत्र सर्वत्र और सर्वाधिक पूज्य है तथा शास्त्र सम्मत है।

शास्त्र वाक्य हैं कि माता से बढ़कर कोई देवता नहीं है। 'कोई माता अपने अपराधी पुत्र की उपेक्षा नहीं करती। ' विपत्ति काल में श्रीमाता के चरणों का स्मरण करना चाहिये। इत्यादि प्रमाणों से मातृ रूप के ध्यान का ही निश्चय किया जाता है। त्रिविध तापो से संतप्त भवसागर में पड़े हुए जीवों के उद्धार के लिए अमृतवर्षा करने वाली माँ भगवती के श्री चरणों की शरणागति ही एकमात्र मार्ग है यही सर्वशास्त्र निष्णात परतत्वैक निष्ठ चित्संवित् स्वरूप लब्ध निगमागमादि सार हृदय श्री विद्यापीठ के आचार्यों का दृढ़ निश्चय है। उक्त परम्परा में नवरात्रादिक देवी पर्वों का विशेष महत्व है। इस क्रम में सांवत्सरिक नवरात्र चैत्र नवरात्र पर्व अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सांवत्सरिक (वार्षिक) नवरात्र महोत्सव

वि0सं0 2082 बसन्त ऋतु चैत्र शुक्ल प्रतिपदा/द्वितीया रविवार दिनांक 30 मार्च 2025
नवरात्रारंभ कलश स्थापन, महाआरती सायं 7:30 बजे

वि0सं0 2082 बसन्त ऋतु चैत्र शुक्ल द्वितीया/तृतीया सोमवार दिनांक 31 मार्च 2025
महाआरती सायं 7:30 बजे

वि0सं0 2082 बसन्त ऋतु चैत्र शुक्ल चतुर्थी मंगलवार दिनांक 01 अप्रैल 2025
महाआरती सायं 7:30 बजे

वि0सं0 2082 बसन्त ऋतु चैत्र शुक्ल पंचमी बुधवार दिनांक 02 अप्रैल 2025
श्रीमाता ललिता पंचमी, महाआरती सायं 7:30 बजे

वि0सं0 2082 बसन्त ऋतु चैत्र शुक्ल षष्ठी गुरुवार दिनांक 03 अप्रैल 2025
श्री यमुना षष्ठी कात्यायनी पूजन प्रातःकाल, महाआरती सायं 7:30 बजे

वि0सं0 2082 बसन्त ऋतु चैत्र शुक्ल सप्तमी शुक्रवार दिनांक 04 अप्रैल 2025
महाआरती सायं 7:30 बजे

वि0सं0 2082 बसन्त ऋतु चैत्र शुक्ल अष्टमी शनिवार दिनांक 05 अप्रैल 2025
महाअष्टमी महाआरती रात्रि 9:00 बजे

वि0सं0 2082 बसन्त ऋतु चैत्र शुक्ल नवमी रविवार दिनांक 06 अप्रैल 2025
महाआरती सायं 7:00 बजे नवरात्र विसर्जन, सरस्वती पूजनम्,
महाप्रसाद भण्डारा रात्रि 8:00 बजे से

महाप्रसाद स्थल : यज्ञशाला सत्संग भवन
श्रीपीठ श्रीजी मन्दिर, बड़ी हवेली
महाराज श्री की ठेक, गताश्रम टीला, मथुरा

इस महोत्सव में सम्मिलित होकर गुरुपीठ के आचार्यों का शुभाशीर्वाद प्राप्त कर परम पुण्य के भागी बनें। यही हमारा शुभ आमंत्रण है।

भवन्निठः
अखण्ड भूमण्डलाचार्य प्रातः स्मरणीय
अनन्त श्री विभूषिताचार्य श्री श्री शीचन्द्राचार्य महाराज्ञानां वंशावतंस
प्रज्ञान बाबा – अद्वैत बाबा – अक्षोभ्य बाबा
मो0 8266996012

।। श्री श्रीजी महारानी की जय।। ।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।
।। श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

धर्मोपदेश

शाखां शिखां च पुण्ड्रं च समयाचारमेव च।
पूर्वैराचरितं कुर्यादन्यथा पतितो भवेत् ।। (विष्णु स्मृति)

स्व शाखा, शिखा और तिलक एवं आचार अपने पूर्व पुरुषों (पूर्वजों) द्वारा आचरित ही करना चाहिये और इसमें पूर्व से पूर्व की उत्तरोत्तर प्रकृष्टता है। अर्थात् पिता से अधिक दादा और दादा से परदादा आदि।

मनु महाराज कहते हैं—

'येनास्यपितरो याता येन याताः पितामहाः ।
तेन यायात्सतां मार्गं तेनं गच्छन्न रिष्यते ।'

यदि शास्त्रोक्त मार्ग बहुत से दीखें तो जिस मार्ग पर बाप—दादा—परदादा आदि गये हैं उसी मार्ग से आप भी जायें अर्थात् जो कुछ वे करते आये हैं वही आप भी करें। उस मार्ग से जाने से दुःख नहीं होता। इसमें बाप—दादा—परदादा आदि की उत्तरोत्तर प्रकृष्टता (Superiority) है।

धर्म एव हन्तो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः ।
तस्माद् धर्मो न हन्तव्यो मानो धर्म हतो वधीत् ।।
न सीदन्नपि धर्मेण मनोऽधर्मे निवेशयेत् ।
अधार्मिकाणां पापानामाशु पश्यन्विपर्ययम् ।।
नाधर्मश्चरितो लोके सद्यः फलति गौरिव ।
शनैरावर्तमानस्तु कर्तुर्मूलानि कृन्तति ।।
यदि नात्मनि पुत्रेषु न चेत्पुत्रेषु नप्तृषु ।
न त्वेव तु कृतोऽधर्मः कर्तुर्भवति निष्फलः ।।

(मनुस्मृति)

आदि प्रजापति भगवान मनुमहाराज कहते हैं कि जो धर्म का नाश करता है उसका नाश धर्म कर देता है और जो धर्म की रक्षा करता है उसकी रक्षा धर्म करता है। अतः ह्रासित धर्म नहीं हमारा ह्रास न कर दे इस भय से धर्म का हनन कभी न करना चाहिये अर्थात् अपने स्वाभाविक कर्मों का त्याग कभी न करना चाहिये (जैसे स्वाध्याय, तप, अध्ययन और दान जो ब्राह्मण के कर्म हैं—उनका त्याग ब्राह्मण कदापि न करे)। पापी अधर्मी की निश्चय ही कुगति होती है ऐसा समझकर पुरुष को चाहिये कि विपरीत परिस्थितियों में भी धर्म का त्याग कदापि न करें। जैसे बोया हुआ बीज तत्काल ही फल नहीं देता, वैसे ही किया हुआ अधर्म भी तत्काल ही फल नहीं देता, किंतु किया हुआ अधर्म निश्चय ही उसके कर्ता को समूल नष्ट कर देता है। जो कर्ता के जीवन काल में अधर्म का फल नहीं मिलता, तो पुत्र/पौत्रों को मिलता है, बात यह है कि किया हुआ अधर्म उसके कर्ता को बिना फल दिये नहीं छोड़ता। (ऐसा ही धर्म के सम्बन्ध में भी समझना चाहिये)।

।। एष आदेशः ।। ।। एष उपदेशः।। ।। एतद् अनुशासनम्।।

।। जय जय श्रीजी परम कृपालु, शिवकामेश्वर वृहद् गोपाल ।।
अखण्डभूमण्डलाचार्य श्री वैदिक सनातन सद्धर्म मार्ग संरक्षक
निगमागम सार हृदय माथुर चतुर्वेद ब्राह्मणानां कुलगुरु श्री वैदिक सत्सम्प्रदायनिष्ठ
प्रातः स्मरणीय श्री श्री शीलचन्द्राचार्य महाराज्ञानां ऊर्ध्वाम्नाय श्रीपीठ
श्री श्रीजी मंदिर, बड़ी हवेली, श्रीजी दरबार

उत्तिष्ठमा स्वप्त अग्निमिच्छध्वं भारताः।
राज्ञः सोमस्य तृप्तासः सूर्येण सयुजोषसः। (अरुणोपनिषद्)

जागृत सुप्त न हो, ज्योति प्रसन्न हो, कामनाओं अथवा इच्छाओं को भस्म करो, अमृत ग्रहण करो तथा शिव के साथ मिलन करो जो उमा के साथ रमण कर रहे हैं और इसमें सूर्य अग्नि की सहायता लो ।

हे श्री विद्योपासकाः! उत्तिष्ठत उपास्तिक्रमे प्रवर्तध्वम्। मा स्वप्त प्रमत्ता मा भूत, अन्तर्भावितव्यथौ वा कुण्डलिनीमिच्छध्वं इच्छादण्डे नाहत्येत्थापयध्वम्। सूर्येण सयुजाविशुद्धयनाहत् चक्रयोर्मध्यवर्ति सूर्य सहितेन तेनाग्निना। उषसोदग्धस्य द्रुतस्येति यावत्। सोमस्य उमया राजराजेश्वर्या सहितस्य राज्ञो राजराजेश्वरस्य सहस्रारीयचन्द्रमण्डलान्तर्गतस्य वा। अर्थादमृतेन तृप्तासो भवत तृप्यत। अग्निकुण्डलिनीमुत्थाप्य सूर्यकुण्डलिन्या संयोज्य ताभ्यां चन्द्रमण्डल शिवशक्तिसामरस्येन द्रावयित्वातदुत्थामृतधाराभिर्द्विसप्ततिसहस्र नाडी मार्गानापूर्य तृप्ता भवतेत्यर्थः।

हे श्रीविद्योपासक उठो ! अपनी निष्ठा में दृढ़ रहो । प्रमाद में मत पड़ो जागृत रहो, जिससे कुण्डलिनी जागृत रहे। सुप्त न हो, उसे भी सुप्त न होने दो। अग्नि–स्वाधिष्ठान की अग्नि इसे कुण्डलिनी में रूपान्तरित करो। इच्छा अर्थात् इसे अपनी इच्छा शक्ति से ऊर्ध्व करो। सूर्य अग्नि की सहायता से अर्थात् सूर्य जो अनाहत विशुद्धि के बीच में है और अग्नि जिसके साथ है। परम शिव चन्द्रविम्ब में उमा के साथ है। अर्थात् कुण्डलिनी अग्नि को प्रज्वलित कर तथा कुण्डलिनी को सूर्य के साथ एक कर तथा इन दोनों को चन्द्रबिम्ब तक पहुंचाकर फिर शिव तथा शक्ति के साथ मिलन करा देते हैं। तब इस मिलन के परिणाम स्वरूप 72 हजार नाड़ियाँ अमृत की धाराओं से पुष्ट हो जाती हैं।

"ब्राह्मणत्वस्य हि रक्षणेन रक्षितः स्याद् वैदिको धर्मः तदधीनत्वाद् वर्णाश्रम भेदानाम।।"

आचार्यों ने कहा है कि ब्राह्मणत्व की रक्षा से ही वैदिक धर्म सुरक्षित रह सकता है क्योंकि वर्णाश्रम भेद उसी के अधीन हैं। अतः ब्राह्मणत्व की रक्षा करो और सनातन संस्कृति का संरक्षण करो।

"'ब्राह्मणस्य तु देहोऽयं, न कामार्थाय जायते ।
ब्राह्मण्यं बहुभिरवाप्तये तपोभिस्तल्लब्ध्वा न रतिपरेण हेलितव्यं ।
स्वाध्याये तपसि दमे च नित्ययुक्तः
क्षेमार्थी कुशलपरः सदा यतस्व ।।" (महाभारत शांतिपर्व)

बहुत समय तक बड़ी भारी तपस्या करने से ब्राह्मण का शरीर मिलता है। उसे पाकर विषयानुराग में फंसकर उसे व्यर्थ नहीं करना चाहिए । अतः यदि तुम अपना कल्याण चाहते हो तो कुशलप्रद कर्म में संलग्न हो सदा स्वाध्याय, तपस्या और इन्द्रिय संयम में पूर्णतः तत्पर रहने का प्रयत्न करो। ....

वेदवेदांगविन्नाम सर्वभूताभयप्रदः ।
अहिंसा सत्यवचनं क्षमाचेति विनिश्चितम् । ब्राह्मणस्य परो धर्मो वेदानां धारणापि च ।।
(महाभारत आदिपर्व, पौलोम पर्व)

– ब्राह्मण वेदवेदांगों का विद्वान और समस्त प्राणियों को अभय देने वाला होता है, अहिंसा सत्यभाषण क्षमा और वेदों का स्वाध्याय ये निश्चय ही ब्राह्मण के उत्तम धर्म हैं।

प्रवचन
श्रृद्धेय श्रीः श्रीकान्त श्रीजी महाराज 'वेदान्त भूषण'

वेदमाता गायत्री / सावित्री

'गायंतस्त्रायसे देवि तद्गायत्रीति गद्यसे।'

जो प्राणों की रक्षा करती है, जिसके सद्अनुष्ठान से जीवन जीवन बनता है, जो गाने वालों की, उसका निरन्तर अभ्यास करने वालों की, त्रिविध ताप से रक्षा करती है, वह गायत्री है।

तत्सवितुर्वरैण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ।। (ऋग्वेद 3 ।62 ।10)

ये गायत्री मंत्र है इस गायत्री मंत्र के तीन पाद और २४ अक्षर हैं। गायत्री के तीन पाद हैं–

प्रथम पाद है : "भूमिरन्तरिक्षं द्यौरित्यष्टावक्षराण्यष्टाक्षर ह वा एकं गायत्र्यै पदमेतदु ह वास्या एतत्स यावदेषु त्रिषु लोकेषु तावद्ध जयति योऽस्या एतदेवं पदं वेद।"(वृह0 5 ।14 ।1)

भूमि अंतरिक्ष, द्यौ ये आठ अक्षर हैं। गायत्री के प्रथम पाद में भी आठ अक्षर हैं, 'वरेण्यम्' के स्थान में 'वरणीयम्' समझने से आठ अक्षर पूरे हो जाते हैं। अर्थात् तीनों लोक गायत्री का प्रथम पाद हैं। **बृहदारण्यकी श्रुति है कि वह तीनों लोकों को जीतता है जो गायत्री के लोकत्रयी रूप इस प्रथम पाद की उपासना करता है।**

द्वितीय पाद है:'ऋचो यजूंषि सामानि।'

ये आठ अक्षर हैं, गायत्री के द्वितीय पाद में भी आठ अक्षर हैं अर्थात् तीनों वेद गायत्री का द्वितीय पाद है। **बृहदारण्यकी श्रुति है कि वह वेदत्रयी के सम्पूर्ण फल को प्राप्त करता है जो गायत्री के वेदत्रयी रूप द्वितीय पाद की उपासना करता है।**

तृतीय पाद है: 'प्राणापान व्यान'

ये आठ अक्षर हैं। गायत्री के तृतीय पाद में भी आठ अक्षर हैं अर्थात् सम्पूर्ण प्राणी गायत्री के तृतीय पाद में आते हैं। **बृहदारण्यकी श्रुति है कि जो इस प्रकार उपासना करता है, वह सम्पूर्ण प्राणियों को जीतता है।**

गायत्री का चौथा पाद तुरीय स्वरूप है जो रज तम आदि से पर दर्शनीय पद ब्रह्मरूप है । यही सर्वान्तरात्मा सूर्यादि रूप होकर सबके ऊपर तपता है । **श्रुति कहती है कि वह इसी प्रकार श्री तथा यश से तपता है जो गायत्री के इस तुरीयपाद की उपासना करता है।** भगवान ऋषि याज्ञवल्क्य कहते हैं कि–

भूर्भुवः स्वरिति चैव चतुर्विंशाक्षरा तथा ।
गायत्री चतुरो वेदा ओंकारः सर्वमेव तु ।। (ब्र0 यो0 याज्ञ0 2 ।66)

भूर्भुवः स्वः ये तीन महाव्याहृतियां, चौबीस अक्षर वाली गायत्री तथा चारों वेद निस्संदेह ओंकार स्वरूप हैं।

ऋषि कहते हैं कि –

ब्रह्म गायत्रीति – ब्रह्मवै गायत्री। (शत0 ब्रा0 8 ।5 ।3 ।7 एत०ब्रा०अ० 17 ख०5)

ब्रह्म गायत्री है, गायत्री ही ब्रह्म है।

गायत्री परदेवतेति गदिता ब्रह्मैव चिद्रूपिणी। (गायत्री पु०)

गायत्री परम श्रेष्ठ देवता और चित् रूपी ब्रह्म है।

सैषा गायत्र्यै तस्मिस्तुरीये दर्शते पदे परोरजसि प्रतिष्ठिता तद्वैतत्सत्ये प्रतिष्ठितम्।
(बृ05 ।14 ।4)

श्रुति कहती है कि यह **लोक त्रयी, वेदत्रयी, सर्वप्राणस्वरूप – त्रिपदा गायत्री इस चतुर्थ तुरीय पद में प्रतिष्ठित है इस प्रकार तुरीय चेतन रूप यह गायत्री प्रत्येक प्राणी के हृदय में स्वयं ज्योतिः प्रत्यगात्मा रूप से स्थित है।**

इसका अर्थ यह हुआ कि लोकत्रयी वेदत्रयी और प्राणत्रयी वेद माता से ही उत्पन्न हैं–

गायत्री वेद जननी गायत्री पापनाशिनी ।
गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चेहच पावनम्।। (याज्ञ0 स्मृ०)

गायत्री वेद जननी है, पातक हारिणी है इससे अधिक पवित्र दिव्य वस्तु लोक और संसार में कोई भी नहीं है।

'गायत्री छन्दसां मातेति।' (महा0 नारायणोपनिषद 15।1)
'गायत्री वेद माता हैं ।'
'गायत्री वा इदं सर्वं भूतं यदिदं किंच.... । (छा0 3।12।1)

यह सारी सृष्टि गायत्री हैं अथवा दृश्यमान जगत् की सारी सृष्टि में चर–अचर जो कुछ है, गायत्री हैं।

आयाहि वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनी ।
गायत्री छन्दसां मातर्ब्रह्मयोनिर्नमोऽस्तुते ।
ओम् गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहि
पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदो मा प्रापदिति । (बृ05।14।6)

हे गायत्री ! त्रैलोक्य पाद से तुम एक पाद वाली हो, त्रयी विद्या रूप द्वितीय पाद से द्विपदी हो, प्राणादि तृतीय पाद से तुम त्रिपदी हो, तुरीय रूप चतुर्थ पाद से तुम चतुष्पदी हो अर्थात् तुम्हारे अनेक पाद हैं।

जपनीय गायत्री मंत्र के सम्बन्ध में मनु महाराज कहते हैं कि–

ओंकारपूर्विकास्तिस्रो महाव्याहृतयोऽव्ययाः ।
त्रिपदा चैव सावित्री विज्ञेयं ब्रह्मणो मुखम् ।।
योऽधीतेहन्यहन्येतां त्रीणि वर्षाण्यतन्द्रितः ।
सब्रह्म परमभ्येति वायुभूतः खमूर्तिमान ।। (मनु0 2।81–82)

ओं भूर्भुवः स्वः पूर्वक सावित्री मन्त्र का जप ब्रह्म प्राप्ति का द्वार है। जो अधिकारी प्रतिदिन ओं भूर्भुवः स्वः पूर्वक सावित्री का नियम से तीन वर्ष पर्यन्त जप करता है वह अवश्य ही ब्रह्म का साक्षात्कार करता है, वह वायु की तरह कामचारी होता है एवं ब्रह्म स्वरूप को प्राप्त होता है।

धर्मराज युधिष्ठिर कहते हैं कि जो ब्राह्मण प्रातः और सायं दोनों संध्याओं में वेदमाता गायत्री का जप करता है वह विधूत कल्मष हो जाता है। प्रतिग्रह के, दान लेने के, सभी दोषों से मुक्त हो जाता है, उसकी पापमयी मनोवृत्तियों का नाश होता है।

विधि यज्ञाज्जपयज्ञो विशिष्टो दशभिर्गुणैः ।
उपांशुः स्याच्छतगुणः साहस्रो मानसः स्मृतः ।। (मनु0 2।85)

दर्श पौर्णमासादि यज्ञ से प्रकृत प्रणवादि सहित गायत्री मन्त्र का जप दश गुना अधिक फल देता है। यह जप भी यदि उपांशु (जिसमें होठ न हिलें, केवल जिव्हा साध्य हो) तो शतगुणाधि फलदायी होता है और केवल मानस हो तो सहस्रगुना अधिक फल देने वाला होता है।

मनु महाराज आज्ञा करते हैं कि ब्राह्मण यदि प्रतिदिन कम से कम एक सहस्र (1000) गायत्री का जप करे तो एक मास में ही अभीष्ट सिद्धि को पाता है।

महर्षि विश्वामित्र मंत्र का अर्थ करते हुए कहते हैं कि–

देवस्य सवितुर्यस्य धियो यो नः प्रचोदयात् ।
भर्गो वरेण्यं तद् ब्रह्म धीमहीत्यथ उच्यते ।। (विश्वामित्र)

"उस तेजस्वी ब्रह्म का हम ध्यान करते हैं जो हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करता है।"

सूर्यार्घ्य विधि

भगवान आश्वालायन के अनुसार सूर्यार्घ्य दर्भपाणि अर्थात् हाथ में कुश लिए हुए सावित्री मन्त्र से तीन बार (अतिकाल होने पर चार बार) निवेदित करना चाहिए। जल से भरी अंजली को सूर्य के अभिमुख खड़े होकर ओंकार और व्याहृतियों के साथ

'असावादित्यो ब्रह्म।' कहते हुए अर्घ्य देना चाहिए।

यह आदित्य ही ब्रह्म है इसलिए प्रदक्षिणा पूर्वक घूमते हुए अर्घ्य जल का श्रद्धा से स्पर्श करना चाहिए । यही अर्ध्य निवेदन करना है। तदन्तर वेदमाता के स्वरूप का निम्न प्रकार ध्यान कर मौन होकर गायत्री जप करे।

गायत्री ध्यानम् (जप पूर्व उपस्थान)
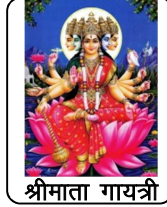
श्रीमाता गायत्री

मुक्ता, विदुम, हेम, नील, धवलच्छायैर्मुखैः तीक्ष्णैः।
युक्तामिन्दु निबद्ध रत्नमुकुटां तत्वार्थवर्णात्मिकाम् ।।
गायत्री वरदाभयांकुशकशा शुभ्रंकपालं गुणं ।
शखं चक्रमथारविन्द युगलं हस्तैः वहन्तीं भजे ।।

माँ गायत्री पांच मुख वाली हैं – मुक्ता अर्थात् मोती जैसा विद्रुम अर्थात् मूंगे जैसा, हेम अर्थात् सुवर्ण जैसा, नीलमणि जैसा, और धवल अर्थात् स्वच्छ। आपके तीन नेत्र हैं। आपके रत्न जटित मुकुट पर चन्द्रमा हैं और आपका श्री विग्रह मन्त्र वर्णात्मक है। वरद, अभय, अंकुश, कशा, शूल, कपाल, गुण, शंख, चक्र और कमल क्रमशः जिनके दायें और बांये हाथों में सुशोभित है उन वेदमाता ब्रह्मजननी माता गायत्री का में भजन करता हूँ आह्वान करता हूँ।

।। सावित्र्यै नमः ।। गायत्र्यै नमः ।।

संक्षिप्त नूतन यज्ञोपवीतधारणप्रयोगः

ब्रह्मचारी एक और गृहस्थ दो यज्ञोपवीत और उत्तरीय के आभाव में तीन यज्ञोपवीत धारण करें। यदि मलमूत्र त्यागते समय यज्ञोपवीत कान पर लपेटना भूल जांय तो नवीन यज्ञोपवीत धारण कर लें । श्रावणी–कर्म में पूजन किया हुआ यज्ञोपवीत न हो तो नूतन ही जल से शुद्ध कर एक(या दो) यज्ञोपवीत को दशवार गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित कर नीचे लिखे मंत्रों से प्रत्येक सूत्र एवं ग्रंथि में देवताओं का आवाहन करें ।

प्रथम तन्तौ ओमकारमावाहयामि। द्वितीयतन्तौ ओम् अग्निमावाहयामि। तृतीयतन्तौ ओम् सर्पानावाहयामि। चतुर्थतन्तौ ओम् सोममाबाहयामि। पञ्चमतन्तौ ओम् पितृनावाहयामि। पष्ठतन्तौ ओम् प्रजापतिमा वाहयामि। सप्तमतन्तौ ओम् अनिलमावाहयामि। अष्टमतन्तौ ओम् सूर्यमावाहयामि। नवमतन्तौ ओम् विश्वान् देवानावाहयामि। ग्रन्धि मध्ये : – ओम ब्रह्मणे नमः ओम ब्रह्माणमावाहयामि। ओम विष्णवे नमः ओम विष्णुमावाहयामि। ओम रुद्राय नमः ओम रुद्रमावाहयामि।

यज्ञोपवीतधारण विनियोगः ओम यज्ञोपवीतमिति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः लिंगोक्ता देवता त्रिष्टुप् छन्दः श्रौत स्मार्त कर्मानुष्ठानाधिकार सिद्धयर्थम् नूतन यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः ।

मन्त्रः **ओम यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।**
आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तुतेजः ।।

तत्पश्चात् पुराने जनेऊ को इस मन्त्र से शिर की ओर से निकाल दें – **गच्छ सूत्र यथा सुखम्।**

।।श्री श्रीजी महारानी की जय।। ।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। ।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।

।।श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2082 शाके 1947 ईस्वी सन् 2025–26

चैत्र (मधुश्री) शुक्ल पक्ष वसन्त ऋतु सूर्य उत्तरायण–उत्तरगोले

तिथि नित्या (श्रीविद्या)	तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र समाप्ति	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
अं कामेश्वरी	प्रतिपदा	12.50	रवि	रेवती 16.35	30.03.25	मेष 16.35	श्रीनववर्षारम्भ, कलशस्थापन, नवरात्रारम्भ श्रीपीठ, श्रीधाम मथुरा, वासन्त चक्रान्तर्गत, गुडी पड़वा, झूलेलाल जयन्ती, पंचक समाप्त 16.35, सर्वार्थ सिद्धि योग 16.35 से 30.34, चन्द्रदर्शन
आं भगमालिनी +इंनित्यक्लिन्ना	द्वितीया	09.12	सोम	अश्विनी 13.45	31.03.25	मेष	श्री मत्स्य जयन्ती, सौभाग्य तृतीया, गणगौर पूजन
–	तृतीया	29.43	सोम	–	–	–	तृतीया क्षय
ईं भेरुण्डा	चतुर्थी	26.33	मंगल	भरणी 11.07	01.04.25	वृष 16.30	श्री गणेश दमनक चतुर्थी, भद्रा 16.05 से 26.33 तक
उं वह्निवासिनी	पंचमी	23.50	बुध	कृतिका 08.50	02.04.25	वृष	श्री पंचमी देवीपर्व, सर्वार्थ सिद्धि योग 30.30 तक, रोहिणीव्रत, कर्क में मंगल 25.29
ऊं महावज्रेश्वरी	षष्ठी	21.42	गुरू	रोहिणी 07.02 मृगशिरा	03.04.25	मिथुन 18.22	श्रीयमुनाषष्ठी महोत्सव, यमुनापूजनम् विश्रामघाट, मथुरा, प्रातःस्मरणीय श्री श्री शीलचन्द्राचार्य महाराज्ञानां जयन्त्योत्सव, स्कन्दषष्ठी
ऋं शिवदूती	सप्तमी	20.13	शुक्र	आर्द्रा 29.21	04.04.25	मिथुन	भद्रा 20.13 से,,
ॠं त्वरिता	अष्टमी	19.27	शनि	पुनर्वसु 29.32	05.04.25	कर्क 23.25	भद्रा 07.45 तक, श्री दुर्गाष्टमी निशीथ पूजनम्, महाआरती रात्रि 09:30 बजे, श्रीपीठ, श्रीजी मंदिर, श्रीधाम मथुरा, अशोकाष्टमी, श्री तारा जयन्ती सर्वार्थ सिद्धि योग 29.16 से 30.16
लृं कुलसुन्दरी	नवमी	19.24	रवि	पुष्य 30.25	06.04.25	कर्क	श्री दुर्गानवमी पूजा महोत्सव, नवमी पूजनम्, नवरात्र विसर्जनम्, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, महाआरती, नवरात्र विसर्जन, अन्नपूर्णोत्सवः (भण्डारा), श्री रामजयन्त्याः व्रत, सर्वार्थसिद्धि –रविपुष्य योग 06.27 से 30.25,
लॄं नित्या	दशमी	20.01	सोम	आश्लेषा अहोरात्र	07.04.25	कर्क	श्री धर्मराज दशमी
एं नीलपताका	एकादशी	21.13	मंगल	आश्लेषा 07.55	08.04.25	सिंह 07.55	कामदा एकादशी व्रत, फूलडोल एकादशी वृन्दावन, भद्रा 08.33 से 21.13, स0सि0योग 06.25 से 07.55
ऐं विजया	द्वादशी	22.56	बुध	मघा 09.57	09.04.25	सिंह	हरिदमनोत्सव, विष्णुद्वादशी
ओं सर्वमंगला	त्रयोदशी	25.01	गुरू	पूर्वा फा0 12.25	10.04.25	कन्या 19.05	प्रदोष व्रत, अनंग त्रयोदशी, श्री महावीर जयन्ती
औं ज्वालामालिनी	चतुर्दशी	27.22	शुक्र	उ0 फा0 15.10	11.04.25	कन्या	शिवदमनक चतुर्दशी, भद्रा 27.22 से
अं चित्रा	पूर्णिमा	29.52	शनि	हस्त 18.08	12.04.25	कन्या	श्री हनुमान जयन्ती, चैत्री पूर्णिमा, देवीपर्व, सत्यव्रत, भद्रा 16.36 तक

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	राहुकाल वार	काल	समय	बुध	दिवा	12.00–01.30
प्रतिपदा	30.03.2025	06.35	18.50	रवि	सायं	04.30–06.00	गुरु	दिवा	01.30–03.00
अष्टमी	05.04.2025	06.28	18.53	सोम	प्रातः	07.30–09.00	शुक्र	प्रातः	10.30–12.00
पूर्णिमा	12.04.2025	06.21	18.56	मंगल	दिवा	03.00–04.30	शनि	प्रातः	09.00–10.30

।।श्री श्रीजी महारानी की जय।।　　।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।।　　।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।

।।श्री गुरूजी महाराज की जय।।　　।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2082　　शाके 1947　　ईस्वी सन् 2025—26

वैशाख (माधव) कृष्ण पक्ष　　वसन्त—ग्रीष्म ऋतु　　सूर्य उत्तरायणे—उत्तरगोले

तिथि नित्या	तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र समाप्ति	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
अं चित्रा	प्रतिपदा	अहोरात्र	रवि	चित्रा 21.11	13.04.25	तुला 07.39	मेष संक्रान्ति (विषुव संज्ञक) 27.22, वैशाख स्नान प्रारंभ, वैशाखी पर्व, खालसा जयन्ती
अं चित्रा	प्रतिपदा	08.26	सोम	स्वाति 24.14	14.04.25	तुला	संक्रान्ति पुण्यकाल
औं ज्वालामालिनी	द्वितीया	10.56	मंगल	विशाखा 27.11	15.04.25	वृश्चिक 20.27	भद्रा 24.08 से
ओं सर्वमंगला	तृतीया	13.18	बुध	अनुराधा 29.55	16.04.25	वृश्चिक	भद्रा 13.18 तक, सर्वार्थ—अमृत सिद्धि योग 06.17 से 29.55, चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि 22.11
ऐं विजया	चतुर्थी	15.24	गुरू	ज्येष्ठा अहोरात्र	17.04.25	वृश्चिक	
एं नीलपताका	पंचमी	17.08	शुक्र	ज्येष्ठा 08.21	18.04.25	धनु 08.21	संत मलूकदास जयन्ती वृन्दावन
लृं नित्या	षष्ठी	18.22	शनि	मूल 10.21	19.04.25	धनु	भद्रा 18.22 से, वृषभे भानुः ग्रीष्म ऋतु प्रारंभ 25.27,
लृं कुलसुन्दरी	सप्तमी	19.01	रवि	पूर्वाषाढ़ा 11.48	20.04.25	मकर 18.04	भद्रा 06.47 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 11.48 से 30.13
ॠं त्वरिता	अष्टमी	18.59	सोम	उत्तराषाढ़ा 12.37	21.04.25	मकर	सर्वार्थ सिद्धि योग 12.37 से 30.12, शीतला पूजा, बूढ़ा बासोड़ा
ऋं शिवदूती	नवमी	18.13	मंगल	श्रवण 12.44	22.04.25	कुम्भ 24.31	भद्रा 29.34 से, पंचक प्रारंभ 24.31
ऊं महावज्रेश्वरी	दशमी	16.44	बुध	धनिष्ठा 12.08	23.04.25	कुम्भ	भद्रा 16.44 तक
उं वह्निवासिनी	एकादशी	14.33	गुरू	शतभिषा 10.49	24.04.25	मीन 27.26	बरूथिनी एकादशी व्रत, श्री वल्लभाचार्य जयन्ती
ईं भेरुण्डा	द्वादशी	11.45	शुक्र	पूर्वा भाद्रपदी 08.54	25.04.25	मीन	प्रदोष व्रत
इं नित्यक्लिन्ना + आं भगमालिनी	त्रयोदशी	08.28	शनि	उ0भा0 06.27 रेवती 27.39	26.04.25	मेष 27.39	पंचक समाप्त 27.39, भद्रा 08.28 से 18.41, मास शिवरात्रि
—	चतुर्दशी	28.50	शनि	—	—		चतुर्दशी क्षय
अं कामेश्वरी	अमावस्या	25.01	रवि	अश्विनी 24.39	27.04.25	मेष	देव—पितृकार्ये अमावस्या, स0सिद्धि योग 06.07 से 24.39 तक, परमहंस श्रीविद्यागुरु श्रीशुकदेव जयन्ती, वेदान्त उपनिषद पाठ, श्रीपीठ, बड़ी हवेली

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	राहुकाल वार	काल	समय	बुध	दिवा	12.00—01.30
प्रतिपदा	13.04.2025	06.20	18.57	रवि	सायं	04.30—06.00	गुरु	दिवा	01.30—03.00
अष्टमी	21.04.2025	06.13	19.01	सोम	प्रातः	07.30—09.00	शुक्र	प्रातः	10.30—12.00
अमावस्या	27.04.2025	06.07	19.04	मंगल	दिवा	03.00—04.30	शनि	प्रातः	09.00—10.30

।।श्री श्रीजी महारानी की जय।। ।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। ।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।

।।श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2082 शाके 1947 ईस्वी सन् 2025–26

वैशाख (माधवश्री) शुक्ल पक्ष ग्रीष्म ऋतु सूर्य उत्तरायण–उत्तरगोले

तिथिनित्या	तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र राशि	व्रतोत्सव
अं कामेश्वरी	प्रतिपदा	21.11	सोम	भरणी 21.38	28.04.25	वृष 26.54	चन्द्रदर्शन, पाराशर ऋषि जयन्ती, पाराशर गीता पाठ – पाराशर स्मृति,
आं भगमालिनी	द्वितीया	17.32	मंगल	कृतिका 18.47	29.04.25	वृष	श्री परशुराम जयन्ती, श्री शिवाजी जयन्ती, रोहिणी व्रत सर्वार्थ सिद्धि योग 06.06 से 18.47 तक
इं नित्यक्लिन्ना	तृतीया	14.13	बुध	रोहिणी 16.18	30.04.25	मिथुन 27.15	अक्षय तृतीया, त्रेतायुगादिः, श्री मातंगी महाविद्या जयन्ती, भद्रा 24.44 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.05 से 30.04
ईं भेरुण्डा	चतुर्थी	11.24	गुरु	मृगशिरा 14.21	01.05.25	मिथुन	भद्रा 11.24 तक, अगस्त तारा अस्त 07.04
उं वह्निवासिनी	पंचमी	09.15	शुक्र	आर्द्रा 13.04	02.05.25	मिथुन	श्री आदिशंकराचार्य जयन्ती, श्री सूरदास जयन्ती, श्री रामानुजाचार्य जयन्ती, सर्वार्थ सिद्धि योग 13.04 से 30.03
ऊं महावज्रेश्वरी	षष्ठी	07.52	शनि	पुनर्वसु 12.34	03.05.25	कर्क 06.37	श्री गंगा सप्तमी
ऋं शिवदूती	सप्तमी	07.19	रवि	पुष्य 12.54	04.05.25	कर्क	भद्रा 07.19 से 19.22, सर्वार्थ सिद्धि–रविपुष्य योग 06.02 से 12.54,
ॠं त्वरिता	अष्टमी	07.36	सोम	अश्लेषा 14.01	05.05.25	सिंह 14.01	देवी श्री बगलामुखी महाविद्या जयन्ती, जानकी नवमी
लृं कुलसुन्दरी	नवमी	08.39	मंगल	मघा 15.52	06.05.25	सिंह	मेष में बुध 28.06
लॄं नित्या	दशमी	10.20	बुध	पूर्वा फा0 18.17	07.05.25	कन्या 24.58	भद्रा 23.22 से
एं नीलपताका	एकादशी	12.30	गुरु	उ0 फा0 21.07	08.05.25	कन्या	भद्रा 12.30 तक, मोहिनी एकादशी व्रत
ऐं विजया	द्वादशी	14.57	शुक्र	हस्त 24.09	09.05.25	कन्या	प्रदोष व्रत
ओं सर्वमंगला	त्रयोदशी	17.30	शनि	चित्रा 27.15	10.05.25	तुला 13.42	सर्वार्थ सिद्धि योग 27.15 से 29.57
औं ज्वाला मालिनी	चतुर्दशी	20.02	रवि	स्वाति अहोरात्र	11.05.25	तुला	भद्रा 20.02 से, श्री नृसिंह जयन्ती, श्री छिन्नमस्ता महाविद्या जयन्ती
अं चित्रा	पूर्णिमा	22.26	सोम	स्वाति 06.17	12.05.25	वृश्चिक 26.27	भद्रा 09.16 तक, पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, श्री कूर्म जयन्ती, श्री बुद्ध जयन्ती, वैशाख स्नान पूर्ण

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	राहुकाल ।वार	।काल।	समय	बुध	दिवा	12.00–01.30
प्रतिपदा	28.04.2025	06.07	19.04	रवि	सायं	04.30–06.00	गुरु	दिवा	01.30–03.00
अष्टमी	05.05.2025	06.01	19.08	सोम	प्रातः	07.30–09.00	शुक्र	प्रातः	10.30–12.00
पूर्णिमा	12.05.2025	05.57	19.12	मंगल	दिवा	03.00–04.30	शनि	प्रातः	09.00–10.30

||श्री श्रीजी महारानी की जय|| ||श्रीमन्महागणाधिपतये नमः|| || श्री श्रीजी महाराज की जय||
||श्री गुरूजी महाराज की जय|| || श्री बाबा महाराज की जय||

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2082   शाके 1947   ईस्वी सन् 2025–26
ज्येष्ठ (शुक्रश्री) कृष्ण पक्ष   ग्रीष्म ऋतु   सूर्य उत्तरायण–उत्तरगोले

तिथिनित्या	तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र समाप्ति	दिनांक	चन्द्र राशि प्रवेश	व्रतोत्सव
अं चित्रा	प्रतिपदा	24.36	मंगल	विशाखा 09.09	13.05.25	वृश्चिक	इष्टिः
औं ज्वालामालिनी	द्वितीया	26.30	बुध	अनुराधा 11.47	14.05.25	वृश्चिक	श्री नारद जयन्ती, नारद गीता पाठ, वीणा दान, वृष संक्रान्ति (विष्णुपदी संज्ञक) 24.12 मिथुन में गुरु 22.34
ओं सर्वमंगला	तृतीया	28.03	गुरु	ज्येष्ठा 14.08	15.05.25	धनु 14.08	भद्रा 15.19 से 28.03
ऐं विजया	चतुर्थी	29.14	शुक्र	मूल 16.08	16.05.25	धनु	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 22.49
एं नीलपताका	पंचमी	अहोरात्र	शनि	पूर्वाषाढ़ा 17.44	17.05.25	मकर 24.04	
एं नीलपताका	पंचमी	05.58	रवि	उत्तराषाढ़ा 18.53	18.05.25	मकर	सर्वार्थ सिद्धि योग 05.54 से 18.53, कुम्भ में राहु सिंह में केतु 17.12
लृं नित्या+ लृं कुलसुन्दरी	षष्ठी	06.12	सोम	श्रवण 19.30	19.05.25	मकर	भद्रा 06.12 से 18.07 सर्वार्थ सिद्धि योग 05.53 से 19.30
	सप्तमी	29.52	सोम	–		–	सप्तमी क्षय
+ऋृं त्वरिता	अष्टमी	28.56	मंगल	धनिष्ठा 19.32	20.05.25	कुंभ 07.36	पंचक प्रारंभ 07.36, कालाष्टमी
ऋं शिवदूती+	नवमी	27.22	बुध	शतभिषा 18.58	21.05.25	कुंभ	कृतिका में बुध 22.17
ऊं महावज्रेश्वरी	दशमी	25.13	गुरु	पूर्वा भाद्रपदी 17.47	22.05.25	मीन 12.08	भद्रा 14.22 से 25.13
उं वह्निवासिनी	एकादशी	22.30	शुक्र	उ0 भाद्रपदी 16.02	23.05.25	मीन	अपरा एकादशी व्रत, सर्वार्थ–अमृत सिद्धि योग 16.02 से 29.51, वृष में बुध 12.59
ईं भेरुण्डा	द्वादशी	19.21	शनि	रेवती 13.48	24.05.25	मेष 13.48	शनि प्रदोष व्रत, पंचक समाप्त 13.48
इं नित्यक्लिन्ना	त्रयोदशी	15.52	रवि	अश्विनी 11.12	25.05.25	मेष	भद्रा 15.52 से 26.03, रोहिणी तपनकाल प्रारंभ
आं भगमालिनी	चतुर्दशी	12.12	सोम	भरणी 08.24 कृतिका 29.33	26.05.25	वृष 13.41	पितृकार्ये अमावस्या, वटसावित्री व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग 29.33 से 29.50
अं कामेश्वरी	अमावस्या	08.32	मंगल	रोहिणी 26.51	27.05.25	वृष	श्री शनि जयन्ती, संत ज्ञानेश्वर जयन्ती, करवीर व्रत, देवकार्ये अमावस्या

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	राहुकाल ।वार	।काल।	समय	बुध	दिवा	12.00–01.30
प्रतिपदा	13.05.2025	05.56	19.12	रवि	सायं	04.30–06.00	गुरु	दिवा	01.30–03.00
अष्टमी	20.05.2025	05.53	19.22	सोम	प्रातः	07.30–09.00	शुक्र	प्रातः	10.30–12.00
अमावस्या	27.05.2025	05.50	19.20	मंगल	दिवा	03.00–04.30	शनि	प्रातः	09.00–10.30

।।श्री श्रीजी महारानी की जय।। ।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। ।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।

।।श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2082 शाके 1947 ईस्वी सन् 2025–26

ज्येष्ठ (शुक्रश्री) शुक्ल पक्ष ग्रीष्म ऋतु सूर्य उत्तर–दक्षिणायणे –उत्तरगोले

तिथिनित्या	**तिथि**	**समाप्ति घं0मि0**	**वार**	**नक्षत्र**	**दिनांक**	**चन्द्र राशि**	**व्रतोत्सव**
–	प्रतिपदा	29.03	मंगल	–		–	प्रतिपदा क्षय
अं कामेश्वरी + आं भगमालिनी	द्वितीया	25.55	बुध	मृगशिरा 24.29	28.05.25	मिथुन 13.37	चन्द्रदर्शन, सर्वार्थ सिद्धि योग 05.50 से 24.29
इं नित्यक्लिन्ना	तृतीया	23.19	गुरु	आर्द्रा 22.39	29.05.25	मिथुन	रम्भा तृतीया, श्रीमहाराणा प्रताप जयन्ती, सर्वार्थ सिद्धि योग 22.39 से
इं भेरुण्डा	चतुर्थी	21.23	शुक्र	पुनर्वसु 21.29	30.05.25	कर्क 15.42	भद्रा 10.15 से 21.23, सर्वार्थ सिद्धि योग 21.29 तक
ईं वह्निवासिनी	पंचमी	20.16	शनि	पुष्य 21.07	31.05.25	कर्क	श्रुति पंचमी, मेष में शुक्र 11.32
उं महावज्रेश्वरी	षष्ठी	20.00	रवि	आश्लेषा 21.37	01.06.25	सिंह 21.37	जामित्र षष्ठी, अरण्य षष्ठी, विन्ध्यवासिनी पूजा
ऊं शिवदूती	सप्तमी	20.35	सोम	मघा 22.56	02.06.25	सिंह	भद्रा 20.35 से
ऋं त्वरिता	अष्टमी	21.57	मंगल	पूर्वा फाल्गुनी 24.59	03.06.25	सिंह	भद्रा 09.11 तक, श्री धूमावती महाविद्या जयन्ती
ॠं कुलसुन्दरी	नवमी	23.55	बुध	उ0फाल्गुनी 27.36	04.06.25	कन्या 07.35	महेश नवमी, सर्वार्थ सिद्धि योग 27.36 से 29.49
लृं नित्या	दशमी	26.16	गुरु	हस्त अहोरात्र	05.06.25	कन्या	श्री गंगा दशहरा, बटुक भैरव जयन्ती
लॄं नीलपताका	एकादशी	28.49	शुक्र	हस्त 06.34	06.06.25	तुला 20.07	भद्रा 15.32 से 28.49
ऐं विजया	द्वादशी	अहोरात्र	शनि	चित्रा 09.40	07.06.25	तुला	निर्जला एकादशी व्रत, सिंह में मंगल 26.08, मिथुन में बुध 09.16, सर्वार्थ सिद्धि योग 09.40 से 29.49
ऐं विजया	द्वादशी	07.18	रवि	स्वाति 12.42	08.06.25	तुला	प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रत प्रारंभ
ओं सर्वमंगला	त्रयोदशी	09.37	सोम	विशाखा 15.31	09.06.25	वृश्चिक 08.51	सर्वार्थ सिद्धि योग 15.31 से 29.49
औं ज्वालामालिनी	चतुर्दशी	11.36	मंगल	अनुराधा 18.02	10.06.25	वृश्चिक	भद्रा 11.36 से 24.28, पूर्णिमा व्रत, वटसावित्री व्रत पूर्ण
अं चित्रा	पूर्णिमा	13.14	बुध	ज्येष्ठा 20.11	11.06.25	धनु 20.11	श्री कबीर जयन्ती, पूर्णिमा पुण्यकाल, सत्यव्रत

तिथि	**दिनांक**	**सूर्योदय**	**सूर्यास्त**	**राहुकाल।वार ।काल। समय**			बुध	दिवा	12.00–01.30
प्रतिपदा	28.05.2025	05.50	19.20	रवि	सायं	04.30–06.00	गुरु	दिवा	01.30–03.00
अष्टमी	03.06.2025	05.49	19.23	सोम	प्रातः	07.30–09.00	शुक्र	प्रातः	10.30–12.00
पूर्णिमा	11.06.2025	05.49	19.26	मंगल	दिवा	03.00–04.30	शनि	प्रातः	09.00–10.30

।।श्री श्रीजी महारानी की जय।। ।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। ।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।

।।श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

विOसंO 2082 शाके 1947 ईस्वी सन् 2025–26

आषाढ़ (शुचिश्री) कृष्णपक्ष ग्रीष्म–वर्षा ऋतु सूर्य उत्तरायणे–दक्षिणायने–उत्तरगोले

तिथिनित्या	तिथि	समाप्ति घंOमिO	वार	नक्षत्र समाप्ति	दिनांक	चन्द्र राशि प्रवेश	व्रतोत्सव
अं चित्रा	प्रतिपदा	14.28	गुरु	मूल 21.57	12.06.25	धनु	गुरु तारा अस्त 23.29
औं ज्वालामालिनी	द्वितीया	15.19	शुक्र	पूर्वाषाढ़ा 23.21	13.06.25	मकर 29.38	भद्रा 27.36 से
ओं सर्वमंगला	तृतीया	15.47	शनि	उत्तराषाढ़ा 24.22	14.06.25	मकर	भद्रा 15.47 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 24.22 से 29.49, चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय 22.19
ऐं विजया	चतुर्थी	15.52	रवि	श्रवण 25.00	15.06.25	मकर	मिथुन संक्रान्ति (षडशीति मुखा संज्ञक) 06.44
एं नीलपताका	पंचमी	15.32	सोम	धनिष्ठा 25.14	16.06.25	कुम्भ 13.10	पंचक प्रारंभ 13.10
लॄं नित्या	षष्ठी	14.47	मंगल	शतभिषा 25.02	17.06.25	कुम्भ	भद्रा 14.47 से 26.15
लृं कुलसुन्दरी	सप्तमी	13.35	बुध	पूर्वा भाद्रपदी 24.23	18.06.25	मीन 18.35	रानी झांसी पुण्यतिथि
ॠं त्वरिता	अष्टमी	11.56	गुरु	उO भाद्रपदी 23.17	19.06.25	मीन	सर्वार्थ सिद्धि योग 23.17 से
ऋं शिवदूती	नवमी	09.50	शुक्र	रेवती 21.45	20.06.25	मेष 21.45	भद्रा 20.37 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 29.50 तक, अमृत सिद्धि योग 05.50 से 21.45, पंचक समाप्त 21.45
ऊं महावज्रेश्वरी+ उं वह्निवासिनी	दशमी	07.19	शनि	अश्विनी 19.50	21.06.25	मेष	भद्रा 07.19 से, रवि दक्षिणायने 08.12, वर्षा ऋतु प्रारंभ, विश्व योग दिवस
–	एकादशी	28.28	शनि	–	–	–	एकादशी क्षय
ईं भेरुण्डा	द्वादशी	25.23	रवि	भरणी 17.39	22.06.25	वृष 23.04	योगिनी एकादशी व्रत, कर्क में बुध 21.31
इं नित्यक्लिन्ना	त्रयोदशी	22.10	सोम	कृतिका 15.17	23.06.25	वृष	भद्रा 22.10 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 15.17 से 29.51, सोम प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि
आं भगमालिनी	चतुर्दशी	19.00	मंगल	रोहिणी 12.54	24.06.25	मिथुन 23.46	भद्रा 08.34 तक, रोहिणी व्रत
अं कामेश्वरी	अमावस्या	16.02	बुध	मृगशिरा 10.41	25.06.25	मिथुन	देव–पितृ कार्ये अमावस्या, सर्वार्थ सिद्धि योग 05.51 से 10.41

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	राहुकाल।वार	।काल।	समय	बुध	दिवा	12.00–01.30
प्रतिपदा	12.06.2025	05.49	19.27	रवि	सायं	04.30–06.00	गुरु	दिवा	01.30–03.00
अष्टमी	19.06.2025	05.50	19.29	सोम	प्रातः	07.30–09.00	शुक्र	प्रातः	10.30–12.00
अमावस्या	25.06.2025	05.51	19.30	मंगल	दिवा	03.00–04.30	शनि	प्रातः	09.00–10.30

।।श्री श्रीजी महारानी की जय।। ।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। ।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।

।।श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने ।।

वि0सं0 2082 शाके 1947 ईस्वी सन् 2025—26

आषाढ़ (शुचिश्री) शुक्ल पक्ष वर्षा ऋतु सूर्य दक्षिणायने—उत्तरगोले

तिथिनित्या	तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र समाप्ति	दिनांक	चन्द्र राशि प्रवेश	व्रतोत्सव
अं कामेश्वरी	प्रतिपदा	13.25	गुरु	आर्द्रा 08.47	26.06.25	कर्क 25.40	गुप्त नवरात्र विधान प्रारंभ, देवीपर्व, श्रीपीठ, श्रीजी मंदिर, श्रीधाम मथुरा, चन्द्रदर्शन, सर्वार्थ सिद्धि योग 08.47 से
आं भगमालिनी	द्वितीया	11.20	शुक्र	पुनर्वसु 07.22	27.06.25	कर्क	श्री जगन्नाथ रथयात्रा, सर्वार्थ सिद्धि योग 07.22 तक
इं नित्यक्लिन्ना	तृतीया	09.55	शनि	पुष्य 06.36	28.06.25	कर्क	भद्रा 21.29 से
ईं भेरुण्डा	चतुर्थी	09.15	रवि	अश्लेषा 06.34	29.06.25	सिंह 06.34	भद्रा 09.15 तक, वृष में शुक्र 14.09
उं वह्निवासिनी	पंचमी	09.24	सोम	मघा 07.21	30.06.25	सिंह	श्री स्कन्दकुमार षष्ठी, द्वारिकाधीश पाटोत्सव
ऊं महावज्रेश्वरी	षष्ठी	10.21	मंगल	पूर्वा फा0 08.54	01.07.25	कन्या 15.24	विवस्वान सप्तमी
ऋं शिवदूती	सप्तमी	11.59	बुध	उ0 फाल्गुनी 11.07	02.07.25	कन्या	भद्रा 11.49 से 25.00 तक, स0सि0योग 11.07 से 29.59
ॠं त्वरिता	अष्टमी	14.07	गुरु	हस्त 13.51	03.07.25	तुला 27.19	
लृं कुलसुन्दरी	नवमी	16.32	शुक्र	चित्रा 16.50	04.07.25	तुला	भडली नवमी, अबूझ मुहूर्त दिवस, गुप्त नवरात्रि पूर्ण, रथवापिसी (पुरी)
लृं नित्या	दशमी	18.59	शनि	स्वाति 19.51	05.07.25	तुला	सर्वार्थ सिद्धि योग 05.54 से 19.51, गुरु तारा उदय 29. 29
एं नीलपताका	एकादशी	21.16	रवि	विशाखा 22.42	06.07.25	वृश्चिक 16.01	देवशयनी एकादशी व्रत, विष्णु शयनोत्सव, भद्रा 08.10 से 21.16, चातुर्मास प्रारंभ
ऐं विजया	द्वादशी	23.11	सोम	अनुराधा 25.12	07.07.25	वृश्चिक	सर्वार्थ सिद्धि योग 05.55 से 25.12
ओं सर्वमंगला	त्रयोदशी	24.39	मंगल	ज्येष्ठा 27.15	08.07.25	धनु 27.15	भौम प्रदोष व्रत
औं ज्वालामालिनी	चतुर्दशी	25.37	बुध	मूल 28.50	09.07.25	धनु	भद्रा 25.37 से
अं चित्रा	पूर्णिमा	26.07	गुरु	पूर्वाषाढ़ा 29.56	10.07.25	धनु	श्री गुरूपूर्णिमा, व्यासपीठ पूजा, श्री दक्षिणामूर्ति जयन्ती, आनन्दोत्सव— श्रीपीठ, श्रीजी दरबार, श्री गुरुपादुकार्चन, परिक्रमा गोवर्धन, भद्रा 13.55 तक, शिवशयनोत्सव

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	राहुकाल।वार	।काल।	समय	बुध	दिवा	12.00—01.30
प्रतिपदा	26.06.2025	05.51	19.30	रवि	सायं	04.30—06.00	गुरु	दिवा	01.30—03.00
अष्टमी	03.07.2025	05.54	19.30	सोम	प्रातः	07.30—09.00	शुक्र	प्रातः	10.30—12.00
पूर्णिमा	10.07.2025	05.56	19.30	मंगल	दिवा	03.00—04.30	शनि	प्रातः	09.00—10.30

।।श्री श्रीजी महारानी की जय।। ।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। ।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।

।।श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2082 शाके 1947 ईस्वी सन् 2025–26

श्रावण (नभश्री) कृष्ण पक्ष वर्षा ऋतु सूर्य दक्षिणायने–उत्तरगोले

तिथिनित्या	तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र समाप्ति	दिनांक	चन्द्र राशि प्रवेश	व्रतोत्सव
अं चित्रा	प्रतिपदा	26.09	शुक्र	उत्तराषाढ़ा अहोरात्र	11.07.25	मकर 12.09	इष्टि
औं ज्वालामालिनी	द्वितीया	25.47	शनि	उत्तराषाढ़ा 06.36 श्रवण	12.07.25	मकर	अशून्य शयन व्रतारम्भ, फल द्वितीया, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.36 से 29.58
ओं सर्वमंगला	तृतीया	25.03	रवि	श्रवण 06.53	13.07.25	कुम्भ 18.53	भद्रा 13.28 से 25.03, पंचक प्रारंभ 18.53, वक्री शनि 09. 38
ऐं विजया	चतुर्थी	24.00	सोम	धनिष्ठा 06.49	14.07.25	कुम्भ	चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय 22.10, श्रावण सोमवार व्रत
एं नीलपताका	पंचमी	22.40	मंगल	शतभिषा 06.26 पू0भा0 29.47	15.07.25	मीन 23.58	कांवड़धारण मुहूर्त, सर्वार्थ सिद्धि योग 29.47 से 29.59
लॄं नित्या	षष्ठी	21.02	बुध	उ0 भाद्रपदी 28.50	16.07.25	मीन	भद्रा 21.02 से, कर्क संक्रान्ति (याम्यायन संज्ञक) 17.32
लृं कुलसुन्दरी	सप्तमी	19.10	गुरु	रेवती 27.39	17.07.25	मेष 27.39	भद्रा 08.08 तक, पंचक समाप्त 27.39
ॠं त्वरिता	अष्टमी	17.02	शुक्र	अश्विनी 26.14	18.07.25	मेष	कालाष्टमी, सर्वार्थ सिद्धि योग 26.14 से
ऋं शिवदूती	नवमी	14.43	शनि	भरणी 24.38	19.07.25	मेष	भद्रा 25.29 से
ऊं महावज्रेश्वरी	दशमी	12.14	रवि	कृतिका 22.53	20.07.25	वृष 06.12	भद्रा 12.14 तक
उं वह्निवासिनी	एकादशी	09.39	सोम	रोहिणी 21.07	21.07.25	वृष	कामदा एकादशी व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.02 से 30.02 तक, अमृत सिद्धि योग 21.07 से 30.02, रोहिणीव्रत, श्रावण सोमवार व्रत
इं नित्यक्लिन्ना+ ईं भेरुण्डा	द्वादशी	07.06	मंगल	मृगशिरा 19.25	22.07.25	मिथुन 08.15	भौम प्रदोषव्रत, भद्रा 28.40 से
–	त्रयोदशी	28.40	मंगल	–	–	–	त्रयोदशी क्षय
आं भगमालिनी	चतुर्दशी	26.29	बुध	आर्द्रा 17.54	23.07.25	मिथुन	भद्रा 15.32 तक, मास शिवरात्रि
अं कामेश्वरी	अमावस्या	24.41	गुरु	पुनर्वसु 16.44	24.07.25	कर्क 10.59	देव–पितृकार्ये अमावस्या, हरियाली अमावस्या, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.03 से 30.04, अमृतसिद्धि – गुरुपुष्य योग 16.44 से 30.04

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	राहुकाल वार	काल	समय	वार	काल	समय
							बुध	दिवा	12.00–01.30
प्रतिपदा	11.07.2025	05.57	19.29	रवि	सायं	04.30–06.00	गुरु	दिवा	01.30–03.00
अष्टमी	18.07.2025	06.00	19.28	सोम	प्रातः	07.30–09.00	शुक्र	प्रातः	10.30–12.00
अमावस्या	24.07.2025	06.03	19.25	मंगल	दिवा	03.00–04.30	शनि	प्रातः	09.00–10.30

।।श्री श्रीजी महारानी की जय।। ।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। ।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।

।।श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2082 शाके 1947 ईस्वी सन् 2025–26

श्रावण (नभश्री) शुक्ल पक्ष वर्षा ऋतु सूर्य दक्षिणायने–उत्तरगोले

तिथिनित्या	**तिथि**	**समाप्ति घं0मि0**	**वार**	**नक्षत्र समाप्ति**	**दिनांक**	**चन्द्र राशि प्रवेश**	**व्रतोत्सव**
अं कामेश्वरी	प्रतिपदा	23.23	शुक्र	पुष्य 16.01	25.07.25	कर्क	इष्टि
आं भगमालिनी	द्वितीया	22.42	शनि	अश्लेषा 15.52	26.07.25	सिंह 15.52	चन्द्रदर्शन, स्वामी करपात्रीजी जयन्ती, नक्तव्रतारम्भ
इं नित्यक्लिन्ना	तृतीया	22.42	रवि	मघा 16.23	27.07.25	सिंह	मधुश्रवा तीज, हरियाली तीज, झूला तीज, स्वर्ण गौरी व्रत
उं भेरुण्डा	चतुर्थी	23.25	सोम	पूर्वा फा0 17.36	28.07.25	कन्या 24.00	वरद विनायक दूर्वा चतुर्थी व्रत, भद्रा 10.58 से 23.25, श्रावण सोमवार व्रत
ऊं वह्निवासिनी	पंचमी	24.47	मंगल	उत्तरा फा0 19.28	29.07.25	कन्या	नागपंचमी देशाचारीय
ऊं महावज्रेश्वरी	षष्ठी	26.42	बुध	हस्त 21.53	30.07.25	कन्या	वर्णषष्ठी, श्री कल्कि जयन्ती, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.06 से 21.53
ऋं शिवदूती	सप्तमी	28.59	गुरु	चित्रा 24.42	31.07.25	तुला 11.15	गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, शील सप्तमी भद्रा 28.59 से
ॠं त्वरिता	अष्टमी	अहोरात्र	शुक्र	स्वाति 27.41	01.08.25	तुला	भद्रा 18.11 तक
ॠं त्वरिता	अष्टमी	07.24	शनि	विशाखा अहोरात्र	02.08.25	वृश्चिक 23.53	
लृं कुलसुन्दरी	नवमी	09.43	रवि	विशाखा 06.35 अनुराधा	03.08.25	वृश्चिक	
लॄं नित्या	दशमी	11.42	सोम	अनुराधा 09.13	04.08.25	वृश्चिक	भद्रा 24.32 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.09 से 09.13, श्रावण सोमवार व्रत
एं नीलपताका	एकादशी	13.13	मंगल	ज्येष्ठा 11.23	05.08.25	धनु 11.23	पवित्रा एकादशी व्रत, भद्रा 13.13 तक
ऐं विजया	द्वादशी	14.09	बुध	मूल 13.00	06.08.25	धनु	विष्णु पवित्रार्पण, हयग्रीव नारायण जयन्ती, प्रदोषव्रत
ओं सर्वमंगला	त्रयोदशी	14.28	गुरु	पूर्वाषाढ़ा 14.01	07.08.25	मकर 20.11	
औं ज्वालामालिनी	चतुर्दशी	14.13	शुक्र	उत्तराषाढ़ा 14.28	08.08.25	मकर	भद्रा 14.13 से 25.53, सर्वार्थ सिद्धि योग 14.28 से, पूर्णिमाव्रत, कोकिलाव्रत पूर्ण
अं चित्रा	पूर्णिमा	13.25	शनि	श्रवण 14.24	09.08.25	कुम्भ 26.11	पंचक प्रारंभ 26.11, सत्यव्रत, रक्षाबन्धन, श्री गायत्री जयन्ती, अमरनाथ यात्रा पूर्ण, पूर्णिमा पुण्यकाल श्रावणी उपाकर्म

तिथि	**दिनांक**	**सूर्योदय**	**सूर्यास्त**	**राहुकाल ।वार**	**।काल।**	**समय**	बुध	दिवा	12.00–01.30
प्रतिपदा	25.07.2025	06.04	19.25	रवि	सायं	04.30–06.00	गुरु	दिवा	01.30–03.00
अष्टमी	01.08.2025	06.08	19.20	सोम	प्रातः	07.30–09.00	शुक्र	प्रातः	10.30–12.00
पूर्णिमा	09.08.2025	06.11	19.15	मंगल	दिवा	03.00–04.30	शनि	प्रातः	09.00–10.30

।।श्री श्रीजी महारानी की जय।। ।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। ।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।

।।श्री गुरुजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2082 शाके 1947 ईस्वी सन् 2025–26

भाद्रपद (नभस्याश्री) कृष्ण पक्ष वर्षा–शरद ऋतु सूर्य दक्षिणायने–उत्तरगोले

तिथिनित्या	तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र समाप्ति	दिनांक	चन्द्र राशि प्रवेश	व्रतोत्सव
अं चित्रा	प्रतिपदा	12.11	रवि	धनिष्ठा 13.53	10.08.25	कुंभ	अशून्य शयन व्रत पूर्ण,
औं ज्वालामालिनी	द्वितीया	10.34	सोम	शतभिषा 13.00	11.08.25	मीन 30.10	भद्रा 21.40 से,
ओं सर्वमंगला	तृतीया	08.41	मंगल	पूर्वा भाद्रपदी 11.52	12.08.25	मीन	कज्जली तीज, बहुला चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय 21.17
ऐं विजया + लृं नीलपताका	चतुर्थी	06.37	बुध	उ0 भाद्रपदी 10.33	13.08.25	मीन	
–	पंचमी	28.24	बुध	–	–	–	पंचमी क्षय
एं नित्या	षष्ठी	26.08	गुरु	रेवती 09.06	14.08.25	मेष 09.06	हलचंदन षष्ठी व्रत, चन्द्रोदय 22.27, हरिछठ, ललहीछठ, भद्रा 26.08 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.13 से, पंचक समाप्त 09.06
लृं कुलसुन्दरी	सप्तमी	23.50	शुक्र	अश्विनी 07.36 भरणी 30.06	15.08.25	मेष	भारतीय स्वतंत्रता दिवस 79वां, भद्रा 12.59 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 07.36 तक, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, महाआरती निशीथ पूजनम्, श्रीपीठ श्रीजीमंदिर, श्रीधाम, मथुरा, श्री आद्याकाली जयन्ती
ॠं त्वरिता	अष्टमी	21.35	शनि	कृतिका 28.39	16.08.25	वृष 11.44	श्री कृष्ण जन्माष्टमी उत्सव, सिंह संक्रान्ति (विष्णुपदी संज्ञक) 25.52, सर्वार्थ–अमृत सि0यो0 28.39 से 30.15
ऋं शिवदूती	नवमी	19.25	रवि	रोहिणी 27.18	17.08.25	वृष	नन्दोत्सव गोकुल–नन्दगांव, रोहिणीव्रत
ऊं महावज्रेश्वरी	दशमी	17.23	सोम	मृगशिरा 26.06	18.08.25	मिथुन 14.40	भद्रा 06.23 से 17.23, सर्वार्थ–अमृत सिद्धि योग 06.15 से 26.06 तक
उं वह्निवासिनी	एकादशी	15.33	मंगल	आर्द्रा 25.08	19.08.25	मिथुन	अजा एकादशी व्रत
ईं भेरुण्डा	द्वादशी	13.59	बुध	पुनर्वसु 24.27	20.08.25	कर्क 18.35	गोवत्स पूजा, प्रदोष व्रत, कर्क में शुक्र 25.19
इं नित्यक्लिन्ना	त्रयोदशी	12.45	गुरु	पुष्य 24.09	21.08.25	कर्क	भद्रा 12.45 से 24.18, सर्वार्थ सिद्धि – अमृतसिद्धि – गुरु पुष्य योग 06.17 से 24.09, मास शिवरात्रि व्रत
आं भगमालिनी	चतुर्दशी	11.56	शुक्र	आश्लेषा 24.17	22.08.25	सिंह 24.17	पितृकार्ये अमावस्या, शरद ऋतु प्रारंभ 26.04
अं कामेश्वरी	अमावस्या	11.37	शनि	मघा 24.55	23.08.25	सिंह	देवकार्ये अमावस्या, शनैश्चरी अमावस्या, कुशोत्पाटिनी अमावस्या 'ऊँ हूं फट् स्वाहा', नक्तव्रत पूर्ण

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	राहुकाल ।वार	।काल।	समय	बुध	दिवा	12.00–01.30
प्रतिपदा	10.08.2025	06.12	19.14	रवि	सायं	04.30–06.00	गुरु	दिवा	01.30–03.00
अष्टमी	16.08.2025	06.14	19.09	सोम	प्रातः	07.30–09.00	शुक्र	प्रातः	10.30–12.00
अमावस्या	23.08.2025	06.18	19.03	मंगल	दिवा	03.00–04.30	शनि	प्रातः	09.00–10.30

।।श्री श्रीजी महारानी की जय।। ।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। ।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।

।।श्री गुरुजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

विoसंo 2082 शाके 1947 ईस्वी सन् 2025–26

भाद्रपद (नभस्यश्री) शुक्ल पक्ष शरद ऋतु सूर्य दक्षिणायने–उत्तरगोले

तिथिनित्या	तिथि	समाप्ति घंoमिo	वार	नक्षत्र समाप्ति	दिनांक	चन्द्र राशि प्रवेश	व्रतोत्सव
अं कामेश्वरी	प्रतिपदा	11.49	रवि	पूर्वा फाल्गुनी 26.06	24.08.25	सिंह	चन्द्रदर्शन, सर्वार्थ सिद्धि योग 26.06 से 30.18, अगस्त तारा उदय 15.02
आं भगमालिनी	द्वितीया	12.35	सोम	उत्तरा फाo 27.50	25.08.25	कन्या 08.29	
इं नित्यक्लिन्ना	तृतीया	13.55	मंगल	हस्त 30.04	26.08.25	कन्या	हरितालिका तीज, श्री वाराह जयन्ती, भद्रा 26.47 से, विश्वकर्मा पूजा
ईं भेरुण्डा	चतुर्थी	15.45	बुध	चित्रा अहोरात्र	27.08.25	तुला 19.21	श्री गणेश जयन्ती, चतुर्थी व्रत, गणेश गीता पाठ, गणेशोत्सव, भद्रा 15.45 तक
उं वह्निवासिनी	पंचमी	17.57	गुरु	चित्रा 08.44	28.08.25	तुला	ऋषिपंचमी व्रत, महर्षि गर्ग अंगिरा जयन्ती
ऊं महावज्रेश्वरी	षष्ठी	20.22	शुक्र	स्वाति 11.39	29.08.25	तुला	श्री बल्देव षष्ठी, सूर्यषष्ठी
ऋं शिवदूती	सप्तमी	22.47	शनि	विशाखा 14.37	30.08.25	वृश्चिक 07.53	मुक्ताभरण संतान सप्तमी, भद्रा 22.47 से,
ॠं त्वरिता	अष्टमी	24.58	रवि	अनुराधा 17.27	31.08.25	वृश्चिक	श्री राधाष्टमी, श्री दधीचि जयन्ती, भद्रा 11.55 तक श्री महालक्ष्मी व्रतारम्भ
ऌं कुलसुन्दरी	नवमी	26.44	सोम	ज्येष्ठा 19.55	01.09.25	धनु 19.55	श्रीचन्द्र नवमी, अदुःख नवमी, श्रीमद्भागवत जयन्ती
ॡं नित्या	दशमी	27.53	मंगल	मूल 21.51	02.09.25	धनु	तेजा दशमी, श्री महालक्ष्मी व्रत पूर्ण
एं नीलपताका	एकादशी	28.22	बुध	पूर्वाषाढ़ा 23.08	03.09.25	मकर 29.21	भद्रा 16.13 से 28.22
ऐं विजया	द्वादशी	28.09	गुरु	उत्तराषाढ़ा 23.44	04.09.25	मकर	पद्मा–जलझूलनी एकादशी व्रत श्री वामन जयन्ती, श्री देवी भुवनेश्वरी महाविद्या जयन्ती, पंचक प्रारंभ 29.45
ओं सर्वमंगला	त्रयोदशी	27.14	शुक्र	श्रवण 23.38	05.09.25	मकर	प्रदोष व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.23 से 23.38, शिक्षक दिवस
औं ज्वालामालिनी	चतुर्दशी	25.42	शनि	धनिष्ठा 22.56	06.09.25	कुम्भ 11.21	अनन्त चतुर्दशी, गणेशोत्सवः भद्रा 25.42 से
अं चित्रा	पूर्णिमा	23.39	रवि	शतभिषा 21.41	07.09.25	कुम्भ	पूर्णिमाव्रत, महालय श्राद्धपक्षारंभ, पूर्णिमाश्राद्ध, अखण्डभूमण्डलाचार्य श्री श्री 1008 श्री केशवदेव महाराज्ञानां पुण्यतिथि, चन्द्रग्रहण 21.57 से 25.27 ग्रहण सूतक मध्यान्ह 12.57 से

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	राहुकाल वार	काल	समय	बुध	दिवा	12.00–01.30
द्वितीया	24.08.2025	06.18	19.02	रवि	सायं	04.30–06.00	गुरु	दिवा	01.30–03.00
अष्टमी	31.08.2025	06.21	18.55	सोम	प्रातः	07.30–09.00	शुक्र	प्रातः	10.30–12.00
पूर्णिमा	07.09.2025	06.24	18.47	मंगल	दिवा	03.00–04.30	शनि	प्रातः	09.00–10.30

।।श्री श्रीजी महारानी की जय।। ।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। ।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।
।।श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2082 शाके 1947 ईस्वी सन् 2025–26
आश्विन (इषश्री) कृष्णपक्ष शरद ऋतु सूर्य दक्षिणायने–उत्तरगोले

तिथिनित्या	तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र समाप्ति	दिनांक	चन्द्र राशि प्रवेश	व्रतोत्सव
अं चित्रा	प्रतिपदा	21.12	सोम	पूर्वा भाद्रपदी 20.03	08.09.25	मीन 14.29	प्रतिपदा श्राद्ध
औं ज्वालामालिनी	द्वितीया	18.30	मंगल	उ0भाद्रपदी 18.07	09.09.25	मीन	द्वितीया श्राद्ध, भद्रा 29.05 से सर्वार्थ सिद्धि योग 06.25 से 18.07
ओं सर्वमंगला	तृतीया	15.38	बुध	रेवती 16.03	10.09.25	मेष 16.03	तृतीया श्राद्ध, भद्रा 15.38 तक, पंचक समाप्त 16.03, चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि 20.26
ऐं विजया	चतुर्थी	12.46	गुरू	अश्विनी 13.58	11.09.25	मेष	चतुर्थी – पंचमी श्राद्ध, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.25 से 13.58
एं नीलपताका	पंचमी	09.59	शुक्र	भरणी 11.59	12.09.25	वृष 17.31	षष्ठी श्राद्ध, अखण्ड भूमण्डलाचार्य श्रीश्री 1008 श्री शीलचन्द्राचार्य महाराज्ञानां, बाबा महाराज श्रीश्री वासुदेव जी महाराज्ञानां,
लृं नित्या + लृं कुलसुन्दरी	षष्ठी	07.24	शनि	कृतिका 10.11	13.09.25	वृष	सप्तमी श्राद्ध, भद्रा 07.24 से 18.12, सर्वार्थ–अमृत सिद्धि योग 10.11 से 30.27
–	सप्तमी	29.05	शनि	–	–	–	सप्तमी क्षय
ॠं त्वरिता	अष्टमी	27.07	रवि	रोहिणी 08.41	14.09.25	मिथुन 20.04	अष्टमी श्राद्ध, जीवित्पुत्रिका व्रतं
ऋं शिवदूती	नवमी	25.32	सोम	मृगशिरा 07.32	15.09.25	मिथुन	नवमी श्राद्ध, सौभाग्यवतीनां श्राद्ध
ऊं महावज्रेश्वरी	दशमी	24.23	मंगल	आर्द्रा 06.46 पुनर्वसु 30.26	16.09.25	कर्क 24.29	दशमी श्राद्ध, भद्रा 12.54 से 24.23, कन्या संक्रान्ति (षडशीतिमुखा संज्ञक) 25.47
उं वह्निवासिनी	एकादशी	23.40	बुध	पुष्य अहोरात्र	17.09.25	कर्क	एकादशी श्राद्ध, इन्दिरा एकादशी व्रत, विश्वकर्मा पूजा
ईं भेरुण्डा	द्वादशी	23.25	गुरू	पुष्य 06.32	18.09.25	कर्क	द्वादशी श्राद्ध, सन्यासीनां श्राद्ध, सर्वार्थ–अमृत–गुरु पुष्य योग 06.28 से 06.32
इं नित्यक्लिन्ना	त्रयोदशी	23.37	शुक्र	आश्लेषा 07.06	19.09.25	सिंह 07.06	त्रयोदशी श्राद्ध, प्रदोष व्रत, भद्रा 23.37 से, मास शिवरात्रि
आं भगमालिनी	चतुर्दशी	24.17	शनि	मघा 08.06	20.09.25	सिंह	भद्रा 11.54 तक, चतुर्दशी श्राद्ध, दुर्मरण श्राद्धं,
अं कामेश्वरी	अमावस्या	25.24	रवि	पूर्वा फाल्गुनी 09.32	21.09.25	कन्या 15.58	देवपितृकार्य अमावस्या, अमावस्या श्राद्ध, श्राद्धपक्ष पूर्ण, सर्वार्थ सिद्धि योग 09.32 से 30.30 तक

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	राहुकाल वार	काल	समय	बुध	दिवा	12.00–01.30
प्रतिपदा	08.09.2025	06.24	18.46	रवि	सायं	04.30–06.00	गुरु	दिवा	01.30–03.00
अष्टमी	14.09.2025	06.27	18.39	सोम	प्रातः	07.30–09.00	शुक्र	प्रातः	10.30–12.00
अमावस्या	21.09.2025	06.30	18.32	मंगल	दिवा	03.00–04.30	शनि	प्रातः	09.00–10.30

।।श्री श्रीजी महारानी की जय।। ।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। ।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।

।।श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2082 शाके 1947 ईस्वी सन् 2025–26

आश्विन (इषश्री) शुक्लपक्ष शरद ऋतु सूर्य दक्षिणायने– उत्तर–दक्षिणगोले

तिथिनित्या	**तिथि**	**समाप्ति घं0मि0**	**वार**	**नक्षत्र समाप्ति**	**दिनांक**	**चन्द्र राशि प्रवेश**	**व्रतोत्सव**
अं कामेश्वरी	प्रतिपदा	26.57	सोम	उ0 फाल्गुनी 11.24	22.09.25	कन्या	शारदीय नवरात्रि प्रारंभ, घटस्थापना पूजनम्, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम, मथुरा, श्री अग्रसेन जयन्ती, सूर्य दक्षिणगोल गति आरंभ 23.49
आं भगमालिनी	द्वितीया	28.52	मंगल	हस्त 13.40	23.09.25	तुला 26.56	चन्द्रदर्शन, द्वितीयापूजनम श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम, मथुरा
इं नित्यक्लिन्ना	तृतीया	अहोरात्र	बुध	चित्रा 16.17	24.09.25	तुला	तृतीया पूजनम, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर
इं नित्यक्लिन्ना	तृतीया	07.07	गुरू	स्वाति 19.09	25.09.25	तुला	तृतीया/चतुर्थी पूजनम, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, भद्रा 20.19 से
ईं भेरुण्डा	चतुर्थी	09.34	शुक्र	विशाखा 22.09	26.09.25	वृश्चिक 15.24	चतुर्थी/पंचमी पूजनम श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम, मथुरा, उपांग ललिता व्रत, भद्रा 09.34 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 22.09 से 30.32
उं वह्निवासिनी	पंचमी	12.04	शनि	अनुराधा 25.08	27.09.25	वृश्चिक	पंचमी/षष्ठी पूजनम् श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम, मथुरा
ऊं महावज्रेश्वरी	षष्ठी	14.28	रवि	ज्येष्ठा 27.55	28.09.25	धनु 27.55	षष्ठी/सप्तमी पूजनम्, निशीथ पूजनम्, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम, मथुरा, सर्वार्थ सिद्धि योग 27.55 से 30.33
ऋं शिवदूती	सप्तमी	16.32	सोम	मूल 30.18	29.09.25	धनु	सप्तमी,/अष्टमी पूजनम् सरस्वती आह्वान, श्रीपीठ, श्रीजी मंदिर, श्रीधाम, मथुरा भद्रा 16.32 से 29.24
ॠं त्वरिता	अष्टमी	18.07	मंगल	पूर्वाषाढ़ा अहोरात्र	30.09.25	धनु	अष्टमी पूजनम् सरस्वती पूजनम् श्री दुर्गाष्टमी, कुमारी पूजनम, महाआरती, श्रीपीठ, श्रीजी मंदिर, श्रीधाम, मथुरा सर्वार्थ सिद्धि योग 28.28 तक
लृं कुलसुन्दरी	नवमी	19.02	बुध	पूर्वाषाढ़ा 08.06	01.10.25	मकर 14.27	नवमी पूजनम्, सरस्वती बलिदानं, श्रीपीठ, श्रीजी मंदिर, श्रीधाम, मथुरा
लृं नित्या	दशमी	19.11	गुरू	उत्तराषाढ़ा 09.13	02.10.25	मकर	श्री विजयादशमी, शमीपूजा, श्री अपराजिता जयन्ती, सरस्वती विसर्जनम्
एं नीलपताका	एकादशी	18.34	शुक्र	श्रवण 09.35	03.10.25	कुम्भ 21.28	पापांकुशा एकादशी व्रत, भद्रा 06.59 से 18.34 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 06. 35 से 09.35, पंचक प्रारंभ 21.28
ऐं विजया	द्वादशी	17.10	शनि	धनिष्ठा 09.09	04.10.25	कुम्भ	शनिप्रदोषव्रत, अखण्ड भूमण्डला चार्य श्रीश्री 1008 श्री शिवप्रकाश देव जी महाराज्ञानं पुण्यतिथि
ओं सर्वमंगला	त्रयोदशी	15.05	रवि	शतभिषा 08.01 पूर्वा भा030.16	05.10.25	मीन 24.46	स0सिद्धि योग 30.16 से 30.36
औं ज्वालामालिनी	चतुर्दशी	12.24	सोम	उ0 भाद्रपदी 28.02	06.10.25	मीन	कोजागरी व्रत, लक्ष्मीन्द्रपूजा, शरद पूर्णिमा, रासपूर्णिमा, जीवब्रह्मैक्योत्सव, श्रीपीठ श्रीजी दरबार बड़ी हवेली, श्रीधाम, मथुरा, भद्रा 12.24 से 22.54
अं चित्रा	पूर्णिमा	09.18	मंगल	रेवती 25.28	07.10.25	मेष 25.28	पूर्णिमापुण्यकाल, पंचकसमाप्त 25.28, सर्वार्थ–अमृत सिद्धि योग 25.28 से 30.37, कार्तिकस्नान प्रारंभ, वाल्मिकी ऋषिजयन्ती, पाराशर ऋषि जयन्ती (मतान्तर), ब्रज परिक्रमारम्भ

तिथि	**दिनांक**	**सूर्योदय**	**सूर्यास्त**	**तिथि**	**दिनांक**	**सूर्योदय**	**सूर्यास्त**	**तिथि**	**दिनांक**	**सूर्योदय**	**सूर्यास्त**
प्रतिपदा	22.09.25	06.30	18.31	अष्टमी	30.09.25	06.33	18.22	पूर्णिमा	07.10.25	06.37	18.14

।।श्री श्रीजी महारानी की जय।। ।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। ।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।

।।श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2082 शाके 1947 ईस्वी सन् 2025–26

कार्तिक (ऊर्जश्री) कृष्णपक्ष शरद ऋतु सूर्य दक्षिणायने–दक्षिणगोले

तिथिनित्या	**तिथि**	**समाप्ति घं0मि0**	**वार**	**नक्षत्र समाप्ति**	**दिनांक**	**चन्द्र राशि प्रवेश**	**व्रतोत्सव**
	प्रतिपदा	29.54	मंगल	–	–	–	प्रतिपदा क्षय
अं चित्रा+ औं ज्वालामालिनी	द्वितीया	26.23	बुध	अश्विनी 22.45	08.10.25	मेष	
ओं सर्वमंगला	तृतीया	22.55	गुरु	भरणी 20.03	09.10.25	वृष 25.23	भद्रा 12.48 से 22.55, कन्या में शुक्र 10.47
ऐं विजया	चतुर्थी	19.39	शुक्र	कृतिका 17.31	10.10.25	वृष	करवा चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि 20.37
एं नीलपताका	पंचमी	16.44	शनि	रोहिणी 15.20	11.10.25	मिथुन 26.24	सर्वार्थ अमृत सिद्धि योग 06.39 से 15.20
लॄं नित्या	षष्ठी	14.17	रवि	मृगशिरा 13.37	12.10.25	मिथुन	भद्रा 14.17 से 25.17
लृं कुलसुन्दरी	सप्तमी	12.25	सोम	आर्द्रा 12.27	13.10.25	कर्क 29.59	अहोई अष्टमी, चन्द्रोदय रात्रि 23.44, कालाष्टमी
ॠं त्वरिता	अष्टमी	11.10	मंगल	पुनर्वसु 11.54	14.10.25	कर्क	
ऋं शिवदूती	नवमी	10.34	बुध	पुष्य 12.00	15.10.25	कर्क	भद्रा 22.31 से
ऊं महावज्रेश्वरी	दशमी	10.36	गुरु	आश्लेषा 12.42	16.10.25	सिंह 12.42	भद्रा 10.36 तक
उं वह्निवासिनी	एकादशी	11.13	शुक्र	मघा 13.58	17.10.25	सिंह	रमा एकादशी व्रत, तुला संक्रान्ति (विषुव संज्ञक) 13.46
ईं भेरुण्डा	द्वादशी	12.20	शनि	पूर्वा फाल्गुनी 15.42	18.10.25	कन्या 22.12	शनि प्रदोष व्रत, धनतेरस, श्री धन्वंतरि जयन्ती, कर्क में गुरु 19.47, यमदीपदानं,
इं नित्यक्लिन्ना	त्रयोदशी	13.52	रवि	उ0 फाल्गुनी 17.50	19.10.25	कन्या	नरक चतुर्दशी, मास शिवरात्रि भद्रा 13.52 से 26.46, सर्वार्थ सिद्धि योग 06.43 से 30.43, अमृत सिद्धि योग 17.50 से 30.43,
आं भगमालिनी	चतुर्दशी	15.45	सोम	हस्त 20.17	20.10.25	कन्या	रूप चतुर्दशी, श्रीमहालक्ष्मी पूजनम्, (15.45 उपरान्त) दीपोत्सव, दीपावली, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम, मथुरा,
अं कामेश्वरी	अमावस्या	17.55	मंगल	चित्रा 22.59	21.10.25	तुला 09.36	श्री कमला महाविद्या जयन्ती, देव–पितृकार्ये भौमवती अमावस्या

तिथि	**दिनांक**	**सूर्योदय**	**सूर्यास्त**	**राहुकाल ।वार**	**।काल।**	**समय**	बुध	दिवा	12.00–01.30
प्रतिपदा	08.10.2025	06.37	18.13	रवि	सायं	04.30–06.00	गुरु	दिवा	01.30–03.00
सप्तमी	14.10.2025	06.40	18.07	सोम	प्रातः	07.30–09.00	शुक्र	प्रातः	10.30–12.00
अमावस्या	21.10.2025	06.44	18.00	मंगल	दिवा	03.00–04.30	शनि	प्रातः	09.00–10.30

।।श्री श्रीजी महारानी की जय।। ।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। ।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।

।।श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2082 शाके 1947 ईस्वी सन् 2025–26

कार्तिक (ऊर्जश्री) शुक्लपक्ष शरद–हेमन्त ऋतु सूर्य दक्षिणायने–दक्षिणगोले

तिथिनित्या	तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र समाप्ति	दिनांक	चन्द्र राशि प्रवेश	व्रतोत्सव
अं कामेश्वरी	प्रतिपदा	20.17	बुध	स्वाति 25.52	22.10.25	तुला	अन्नकूट गोवर्धन पूजा
आं भगमालिनी	द्वितीया	22.47	गुरु	विशाखा 28.51	23.10.25	वृश्चिक 22.06	चन्द्रदर्शन, भाईदूज, यमद्वितीया, विश्वकर्मा पूजा, चित्रगुप्त पूजा, सर्वार्थ सिद्धि योग 28.51 से, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ 09.21
इं नित्यक्लिन्ना	तृतीया	25.20	शुक्र	अनुराधा अहोरात्र	24.10.25	वृश्चिक	सर्वार्थ सिद्धि योग 30.46 तक
ईं भेरुण्डा	चतुर्थी	27.49	शनि	अनुराधा 07.52	25.10.25	वृश्चिक	भद्रा 14.35 से 27.49 तक
उं वह्निवासिनी	पंचमी	30.05	रवि	ज्येष्ठा 10.47	26.10.25	धनु 10.47	सौभाग्य–ज्ञान–पांडव पंचमी, सर्वार्थ सिद्धि योग 10.47 से 30.47
ऊं महावज्रेश्वरी	षष्ठी	अहोरात्र	सोम	मूल 13.28	27.10.25	धनु	सूर्यषष्ठी डालाछठ, वृश्चिक में मंगल
ऊं महावज्रेश्वरी	षष्ठी	08.00	मंगल	पूर्वाषाढ़ा 15.45	28.10.25	मकर 22.15	
ऋं शिवदूती	सप्तमी	09.24	बुध	उत्तराषाढ़ा 17.30	29.10.25	मकर	सहस्रार्जुन जयन्ती, भद्रा 09.24 से 21.51
ॠं त्वरिता	अष्टमी	10.07	गुरु	श्रवण 18.34	30.10.25	कुम्भ 30.48	गोपाष्टमी, पंचक प्रारम्भ 30.48 से
लृं कुलसुन्दरी	नवमी	10.04	शुक्र	धनिष्ठा 18.51	31.10.25	कुम्भ	अक्षय–आंवला–कूष्मांड नवमी, सतयुगादि तिथि
लॄं नित्या	दशमी	09.12	शनि	शतभिषा 18.21	01.11.25	कुम्भ	श्री कृष्ण विजय उत्सव कंसवध मेला, मथुरा भद्रा 20.28 से
एं नीलपताका+ ऐं विजया	एकादशी	07.32	रवि	पूर्वा भाद्रपदी 17.04	02.11.25	मीन 11.27	देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत, श्री तुलसी विवाह, देव दीपावली उत्सव, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, मथुरा, भद्रा 07.32 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 17.04 से 30.52
–	द्वादशी	29.08	रवि	–	–	–	द्वादशी क्षय
ओं सर्वमंगला	त्रयोदशी	26.06	सोम	उ0 भाद्रपदी 15.06	03.11.25	मीन	सोम प्रदोष व्रत, कवि कालिदास जयन्ती,
औं ज्वालामालिनी	चतुर्दशी	22.37	मंगल	रेवती 12.35	04.11.25	मेष 12.35	वैकुण्ठ चतुर्दशी, भद्रा 22.37 से, सर्वार्थ–अमृत सिद्धि योग 12.35 से 30.53, पंचक समाप्त 12.35
अं चित्रा	पूर्णिमा	18.49	बुध	अश्विनी 09.40 भरणी 30.34	05.11.25	मेष	भीष्मपंचक व्रतपूर्ण, सत्यव्रत, पूर्णिमाव्रत, देव दीपावली, कार्तिक स्नान पूर्ण, श्री गुरूनानक जयन्ती, श्री निम्बार्क जयन्ती, भद्रा 08.45 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 30.34 से 30.54

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	राहुकाल।वार	।काल।	समय	बुध	दिवा	12.00–01.30
प्रतिपदा	22.10.2025	06.44	18.00	रवि	सायं	04.30–06.00	गुरु	दिवा	01.30–03.00
अष्टमी	30.10.2025	06.49	17.53	सोम	प्रातः	07.30–09.00	शुक्र	प्रातः	10.30–12.00
पूर्णिमा	05.11.2025	06.53	17.49	मंगल	दिवा	03.00–04.30	शनि	प्रातः	09.00–10.30

।।श्री श्रीजी महारानी की जय।।　　।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।।　　।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।

।।श्री गुरूजी महाराज की जय।।　　।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2082　　शाके 1947　　ईस्वी सन् 2025–26

मार्गशीर्ष (सहश्री) कृष्णपक्ष　　हेमंत ऋतु　　सूर्य दक्षिणायने–दक्षिणगोले

तिथिनित्या	तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र समाप्ति	दिनांक	चन्द्र राशि प्रवेश	व्रतोत्सव
अं चित्रा	प्रतिपदा	14.55	गुरू	कृतिका 27.28	06.11.25	वृष 11.47	पद्मक योग 14.52 से 27.28
औं ज्वालामालिनी	द्वितीया	11.06	शुक्र	रोहिणी 24.34	07.11.25	वृष	भद्रा 21.17 से
ओं सर्वमंगला + ऐं विजया	तृतीया	07.33	शनि	मृगशिरा 22.02	08.11.25	मिथुन 11.14	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 20.23, भद्रा 07.33 तक
–	चतुर्थी	28.26	शनि	–	–	–	चतुर्थी क्षय
एं नीलपताका	पंचमी	25.56	रवि	आर्द्रा 20.05	09.11.25	मिथुन	श्री मायानन्द चैतन्य जयन्ती
लॄं नित्या	षष्ठी	24.09	सोम	पुनर्वसु 18.48	10.11.25	कर्क 13.03	भद्रा 24.09 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 18.48 से 30.57
लृं कुलसुन्दरी	सप्तमी	26.09	मंगल	पुष्य 18.18	11.11.25	कर्क	भद्रा 11.33 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 18.18 से 30.58, वक्री गुरु 21.51
ॠं त्वरिता	अष्टमी	22.56	बुध	आश्लेषा 18.35	12.11.25	सिंह 18.35	श्री कालभैरवाष्टमी, भैरव समुत्पत्ति जयन्ती उत्सव, श्रीपीठ श्रीजीमंदिर, श्रीधाम मथुरा
ऋं शिवदूती	नवमी	23.35	गुरू	मघा 19.38	13.11.25	सिंह	
ऊं महावज्रेश्वरी	दशमी	24.50	शुक्र	पूर्वा फा0 21.21	14.11.25	कन्या 27.52	भद्रा 12.08 से 24.50
उं वह्निवासिनी	एकादशी	26.38	शनि	उत्तरा फा0 23.35	15.11.25	कन्या	उत्पत्ति एकादशी व्रत
ईं भेरुण्डा	द्वादशी	28.48	रवि	हस्त 26.11	16.11.25	कन्या	वृश्चिक संक्रान्ति (विष्णुपदी संज्ञक) 13.37, सर्वार्थ–अमृत सिद्धि योग 07.01 से 26.11
इं नित्यक्लिन्ना	त्रयोदशी	अहोरात्र	सोम	चित्रा 29.02	17.11.25	तुला 15.35	सोम प्रदोष व्रत
इं नित्यक्लिन्ना	त्रयोदशी	07.13	मंगल	स्वाति अहोरात्र	18.11.25	तुला	मास शिवरात्रि व्रत, श्री बाला जयन्त्योत्सवः, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम मथुरा, भद्रा 07.13 से 20.28
आं भगमालिनी	चतुर्दशी	09.44	बुध	स्वाति 07.59	19.11.25	वृश्चिक 28.14	पितृकाये अमावस्या
अं कामेश्वरी	अमावस्या	12.17	गुरु	विशाखा 10.59	20.11.25	वृश्चिक	देवकार्ये अमावस्या, सर्वार्थ सिद्धि योग 10.59 से

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	राहुकाल ।वार	।काल।	समय	बुध	दिवा	12.00–01.30
प्रतिपदा	06.11.2025	06.54	17.48	रवि	सायं	04.30–06.00	गुरु	दिवा	01.30–03.00
अष्टमी	12.11.2025	06.58	17.45	सोम	प्रातः	07.30–09.00	शुक्र	प्रातः	10.30–12.00
अमावस्या	20.11.2025	07.04	17.42	मंगल	दिवा	03.00–04.30	शनि	प्रातः	09.00–10.30

।।श्री श्रीजी महारानी की जय।। ।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। ।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।

।।श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2082 शाके 1947 ईस्वी सन् 2025–26

मार्गशीर्ष (सहश्री) शुक्लपक्ष हेमन्त ऋतु सूर्य दक्षिणायणे–दक्षिणगोले

तिथिनित्या	**तिथि**	**समाप्ति घं0मि0**	**वार**	**नक्षत्र समाप्ति**	**दिनांक**	**चन्द्र राशि प्रवेश**	**व्रतोत्सव**
अं कामेश्वरी	प्रतिपदा	14.48	शुक्र	अनुराधा 13.56	21.11.25	वृश्चिक	सर्वार्थ–सिद्धि योग 13.56 तक
आं भगमालिनी	द्वितीया	17.12	शनि	ज्येष्ठा 16.47	22.11.25	धनु 16.47	चन्द्रदर्शन
इं नित्यक्लिन्ना	तृतीया	19.25	रवि	मूल 19.28	23.11.25	धनु	सर्वार्थ सिद्धि योग 07.06 से 19.28
ईं भेरुण्डा	चतुर्थी	21.23	सोम	पूर्वाषाढ़ा 21.54	24.11.25	मकर 28.27	वैनायकी चतुर्थी व्रत, भद्रा 08.26 से 21.23
उं वह्निवासिनी	पंचमी	22.58	मंगल	उत्तराषाढ़ा 23.58	25.11.25	मकर	श्री रामजानकी विवाहोत्सव श्रीपीठ श्रीजी मंदिर बड़ी हवेली, श्रीधाम मथुराः, देवीपर्व, विहार पंचमी, श्री बांकेबिहारी प्राकट्यो त्सव
ऊं महावज्रेश्वरी	षष्ठी	24.03	बुध	श्रवण 25.33	26.11.25	मकर	चम्पाषष्ठी, स्कन्दगुह षष्ठी
ऋं शिवदूती	सप्तमी	24.31	गुरू	धनिष्ठा 26.32	27.11.25	कुम्भ 14.07	मित्र सप्तमी, नरसी मेहता जयन्ती, भद्रा 24.31 से, पंचक प्रारम्भ 14.07 से
ॠं त्वरिता	अष्टमी	24.16	शुक्र	शतभिषा 26.50	28.11.25	कुम्भ	भद्रा 12.29 तक
लृं कुलसुन्दरी	नवमी	23.16	शनि	पूर्वा भाद्रपदी 26.23	29.11.25	मीन 20.34	नन्दिनी नवमी
लॄं नित्या	दशमी	21.30	रवि	उ0 भाद्रपदी 25.11	30.11.25	मीन	दशादित्य व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग 07.12 से 25.11
एं नीलपताका	एकादशी	19.02	सोम	रेवती 23.18	01.12.25	मेष 23.18	मोक्षदा एकादशी व्रत, श्री गीता जयन्ती, भद्रा 08.21 से 19.02 तक, पंचक समाप्त 23.18
ऐं विजया	द्वादशी	15.58	मंगल	अश्विनी 20.52	02.12.25	मेष	व्यंजन द्वादशी, अखण्डा द्वादशी, भौम प्रदोष व्रत, सर्वार्थ–अमृत सिद्धि योग 07.13 से 20.52
ओं सर्वमंगला	त्रयोदशी	12.26	बुध	भरणी 18.00	03.12.25	वृष 23.14	सर्वार्थ सिद्धि योग 18.00 से 31. 15, पिशाच मोचन श्राद्ध
औं ज्वालामालिनी + अं चित्रा	चतुर्दशी	08.38	गुरू	कृतिका 14.54	04.12.25	वृष	पूर्णिमाव्रत, रोहिणी व्रत, भद्रा 08. 38 से 18.41, श्री अन्नपूर्णा जयन्ती, श्री त्रिपुरभैरवी महाविद्या जयन्ती, श्रीपाददत्तात्रेय जयन्ती, षोडशी त्रिपुरसुन्दरी श्रीविद्या जयन्त्योत्सव, श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, श्रीधाम मथुरा, आदि गुरुगादी महोत्सव श्रीपीठाधीश्वर अखण्ड भूमण्डलाचार्य श्रीश्री 1008 श्री शीलचन्द्राचार्य महाराज्ञानां जयन्त्योत्सव
–	पूर्णिमा	28.44	गुरु	–	–		पूर्णिमा क्षय

तिथि	**दिनांक**	**सूर्योदय**	**सूर्यास्त**	**राहुकाल** |**वार** |**काल**| **समय**			बुध	दिवा	12.00–01.30
प्रतिपदा	20.11.2025	07.25	17.46	रवि	सायं	04.30–06.00	गुरु	दिवा	01.30–03.00
अष्टमी	28.11.2025	07.28	17.50	सोम	प्रातः	07.30–09.00	शुक्र	प्रातः	10.30–12.00
पूर्णिमा	03.12.2025	07.30	17.54	मंगल	दिवा	03.00–04.30	शनि	प्रातः	09.00–10.30

।।श्री श्रीजी महारानी की जय।। ।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। ।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।

।।श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2082 शाके 1947 ईस्वी सन् 2025–26

पौष (सहस्यश्री) कृष्णपक्ष हेमन्त ऋतु सूर्य दक्षिणायणे–दक्षिणगोले

तिथिनित्या	**तिथि**	**समाप्ति घं0मि0**	**वार**	**नक्षत्र समाप्ति**	**दिनांक**	**चन्द्र राशि प्रवेश**	**व्रतोत्सव**
चित्रा	प्रतिपदा	24.56	शुक्र	रोहिणी 11.46	05.12.25	मिथुन 22.15	मिथुन में गुरु 17.24
अं ज्वालामालिनी	द्वितीया	21.26	शनि	मृगशिरा 08.49 आर्द्रा 30.13	06.12.25	मिथुन	वृश्चिक में बुध 20.44
औं सर्वमंगला	तृतीया	18.25	रवि	पुनर्वसु 28.12	07.12.25	कर्क 22.38	भद्रा 07.51 से 18.25, सर्वार्थ सिद्धि योग 28.12 से, रवि पुष्य योग 28.12 से 31.17, चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय 20.19
ऐं विजया	चतुर्थी	16.04	सोम	पुष्य 26.53	08.12.25	कर्क	सर्वार्थ सिद्धि योग 26.53
एं नीलपताका	पंचमी	14.29	मंगल	आश्लेषा 26.23	09.12.25	सिंह 26.23	सर्वार्थ सिद्धि योग 07.18 से 26.23
लृंनित्या	षष्ठी	13.47	बुध	मघा 26.44	10.12.25	सिंह	भद्रा 13.47 से 25.46
लृं कुलसुन्दरी	सप्तमी	13.58	गुरू	पूर्वा फाल्गुनी 27.56	11.12.25	सिंह	कालाष्टमी व्रत
ॠं त्वरिता	अष्टमी	14.57	शुक्र	उ0 फाल्गुनी 29.50	12.12.25	कन्या 10.21	
ऋं शिवदूती	नवमी	16.38	शनि	हस्त अहोरात्र	13.12.25	कन्या	भद्रा 29.41 से
ऊं महावज्रेश्वरी	दशमी	18.50	रवि	हस्त 08.18	14.12.25	तुला 21.42	भद्रा 18.50 तक, सर्वार्थ – अमृत सिद्धि योग 07.21 से 08.18
उं वह्निवासिनी	एकादशी	21.21	सोम	चित्रा 11.09	15.12.25	तुला	सफला एकादशी व्रत, कल्पवास प्रारंभ, धनु संक्रान्ति (षड़शीतिमुखासंज्ञक) 28.19, शुक्रास्त 14.51
ईं भेरुण्डा	द्वादशी	23.58	मंगल	स्वाति 14.10	16.12.25	तुला	
इं नित्यक्लिन्ना	त्रयोदशी	26.33	बुध	विशाखा 17.11	17.12.25	वृश्चिक 10.26	प्रदोष व्रत, भद्रा 26.33 से, सर्वार्थ–अमृत सिद्धि योग 17.11 से 31.24
आं भगमालिनी	चतुर्दशी	29.00	गुरू	अनुराधा 20.07	18.12.25	वृश्चिक	भद्रा 18.48 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 20.07 तक, मास शिवरात्रि
अं कामेश्वरी	अमावस्या	अहोरात्र	शुक्र	ज्येष्ठा 22.51	19.12.25	धनु 22.51	देव–पितृकार्ये अमावस्या

तिथि	**दिनांक**	**सूर्योदय**	**सूर्यास्त**	**राहुकाल ।वार**	**।काल।**	**समय**	बुध	दिवा	12.00–01.30
प्रतिपदा	05.12.2025	07.15	17.41	रवि	सायं	04.30–06.00	गुरु	दिवा	01.30–03.00
अष्टमी	12.12.2025	07.20	17.43	सोम	प्रातः	07.30–09.00	शुक्र	प्रातः	10.30–12.00
अमावस्या	19.12.2025	07.24	17.27	मंगल	दिवा	03.00–04.30	शनि	प्रातः	09.00–10.30

।।श्री श्रीजी महारानी की जय।। ।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। ।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।

।।श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2082 शाके 1947 ईस्वी सन् 2025–26

पौष (सहस्यश्री) शुक्लपक्ष हेमन्त–शिशिर ऋतु सूर्य दक्षिण–उत्तरायणे–दक्षिणगोले

तिथिनित्या	**तिथि**	**समाप्ति घं0मि0**	**वार**	**नक्षत्र समाप्ति**	**दिनांक**	**चन्द्र राशि प्रवेश**	**व्रतोत्सव**
अं कामेश्वरी	प्रतिपदा	अहोरात्र	शनि	मूल 25.22	20.12.25	धनु	गुप्तनवरात्र विधान आरम्भः, शाकम्भरी नवरात्र
अं कामेश्वरी	प्रतिपदा	09.12	रवि	पूर्वाषाढ़ा 27.36	21.12.25	धनु	चन्द्रदर्शन, सर्वार्थ सिद्धि योग 27.36 से 31.26, सूर्य उत्तरायणे 20.33, शिशिर ऋतु प्रारंभ
आं भगमालिनी	द्वितीया	10.52	सोम	उत्तराषाढ़ा 29.32	22.12.25	मकर 10.07	सर्वार्थ सिद्धि योग 29.32 से 31.26
इं नित्यक्लिन्ना	तृतीया	12.13	मंगल	श्रवण 31.08	23.12.25	मकर	भद्रा 24.46 से
ईं भेरुण्डा	चतुर्थी	13.12	बुध	धनिष्ठा अहोरात्र	24.12.25	कुम्भ 19.46	भद्रा 13.13 तक, पंचक प्रारंभ 19.46
उं वह्निवासिनी	पंचमी	13.43	गुरू	धनिष्ठा 08.18	25.12.25	कुम्भ	पं. मदनमोहन मालवीय ज0
ऊं महावज्रेश्वरी	षष्ठी	13.44	शुक्र	शतभिषा 09.00	26.12.25	मीन 27.11	
ऋं शिवदूती	सप्तमी	13.10	शनि	पूर्वा भाद्रपदी 09.10	27.12.25	मीन	गुरू गोविन्द सिंह जयन्ती, भद्रा 13.10 से 24.40
ॠं त्वरिता	अष्टमी	12.00	रवि	उ0 भाद्रपदी 08.43	28.12.25	मीन	सर्वार्थ सिद्धि योग 07.28 से 08.43, धनु में बुध 31.30
लृं कुलसुन्दरी	नवमी	10.13	सोम	रेवती 07.41 अश्विनी 30.04	29.12.25	मेष 07.41	पंचक समाप्त 07.41
लॄं नित्या+ एं नीलपताका	दशमी	07.52	मंगल	भरणी 27.58	30.12.25	मेष	भद्रा 18.30 से 29.01, सर्वार्थ सिद्धि योग 27.58 से
–	एकादशी	29.01	मंगल	–	–	–	एकादशी क्षय
ऐं विजया	द्वादशी	25.48	बुध	कृतिका 25.30	31.12.25	वृष 09.23	पुत्रदा एकादशी व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग 31.30 तक, महाद्वादशी
ओं सर्वमंगला	त्रयोदशी	22.23	गुरू	रोहिणी 22.48	01.01.26	वृष	प्रदोषव्रत, रोहिणीव्रत
औं ज्वालामालिनी	चतुर्दशी	18.54	शुक्र	मृगशिरा 20.04	02.01.26	मिथुन 09.26	भद्रा 18.54 से 29.12, पूर्णिमाव्रत, श्री शाकंभरी दुर्गा शताक्षी जयन्ती
अं चित्रा	पूर्णिमा	15.33	शनि	आर्द्रा 17.28	03.01.26	मिथुन	सत्यव्रत, माघ स्नान प्रारम्भ पूर्णिमा पुण्यकाल

तिथि	**दिनांक**	**सूर्योदय**	**सूर्यास्त**	**राहुकाल।वार**	**।काल।**	**समय**	बुध	दिवा	12.00–01.30
प्रतिपदा	20.12.2025	07.25	17.46	रवि	सायं	04.30–06.00	गुरु	दिवा	01.30–03.00
अष्टमी	28.12.2025	07.28	17.50	सोम	प्रातः	07.30–09.00	शुक्र	प्रातः	10.30–12.00
पूर्णिमा	03.01.2026	07.30	17.54	मंगल	दिवा	03.00–04.30	शनि	प्रातः	09.00–10.30

।।श्री श्रीजी महारानी की जय।। ।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। ।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।
।।श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2082 शाके 1947 ईस्वी सन् 2025–26
माघ (तपःश्री) कृष्णपक्ष शिशिर ऋतु सूर्य उत्तरायणे–दक्षिणगोले

तिथिनित्या	तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र समाप्ति	दिनांक	चन्द्र राशि प्रवेश	व्रतोत्सव
अं चित्रा	प्रतिपदा	12.30	रवि	पुनर्वसु 15.11	04.01.26	कर्क 09.43	सर्वार्थ सिद्धि योग 15.11 से, रविपुष्य योग 15.11 से 31.31
औं ज्वालामालिनी	द्वितीया	09.57	सोम	पुष्य 13.25	05.01.26	कर्क	भद्रा 20.54 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 13.25 तक
ओं सर्वमंगला +ऐं विजया	तृतीया	08.02	मंगल	आश्लेषा 12.18	06.01.26	सिंह 12.18	संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय 21.15, भद्रा 08.02 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 07.31 से 12.18
–	चतुर्थी	30.53	मंगल	–	–	–	चतुर्थी क्षय
एं नीलपताका	पंचमी	30.34	बुध	मघा 11.56	07.01.26	सिंह	अखण्ड भूमण्डलाचार्य श्रीश्री 1008 श्री सुरेश जी बाबा महाराज्ञानां पुण्यतिथिः,
एं नित्या	षष्ठी	31.06	गुरू	पूर्वा फाल्गुनी 12.24	08.01.26	कन्या 18.39	अखण्ड भूमण्डलाचार्य श्रीश्री 1008 श्री लक्ष्मीपति देवाचार्य जी महाराज्ञानां पुण्यतिथिः, भद्रा 31.06 से
लृं कुलसुन्दरी	सप्तमी	अहोरात्र	शुक्र	उ0 फाल्गुनी 13.41	09.01.26	कन्या	श्री रामानन्दाचार्य जयन्ती, भद्रा 19.40 तक
लृं कुलसुन्दरी	सप्तमी	08.24	शनि	हस्त 15.40	10.01.26	तुला 28.52	
ॠं त्वरिता	अष्टमी	10.21	रवि	चित्रा 18.12	11.01.26	तुला	
ॠं शिवदूती	नवमी	12.43	सोम	स्वाती 21.05	12.01.26	तुला	भद्रा 26.00 से, स्वामी विवेकानन्द जन्मदिवस, मकर में शुक्र 27.58
ऊं महावज्रेश्वरी	दशमी	15.18	मंगल	विशाखा 24.07	13.01.26	वृश्चिक 17.21	भद्रा 15.18 तक
उं वह्निवासिनी	एकादशी	17.53	बुध	अनुराधा 27.04	14.01.26	वृश्चिक	मकर संक्रान्ति (सौम्यायन संज्ञक) 15.07, संक्रान्ति पुण्यकाल, षट्तिला एकादशी व्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग 07.31 से 27.04 तक
ईं भेरुण्डा	द्वादशी	20.17	गुरू	ज्येष्ठा 29.48	15.01.26	धनु 29.48	मकर में मंगल 28.26
इं नित्यक्लिन्ना	त्रयोदशी	22.22	शुक्र	मूल अहोरात्र	16.01.26	धनु	प्रदोषव्रत, मास शिवरात्रि, भद्रा 22.22 से
आं भगमालिनी	चतुर्दशी	24.04	शनि	मूल 08.12	17.01.26	धनु	भद्रा 11.16 तक, मकर में बुध 10.22
अं कामेश्वरी	अमावस्या	25.22	रवि	पूर्वाषाढ़ा 10.14	18.01.26	मकर 16.41	देवपितृकार्ये अमावस्या, माघी मौनी अमावस्या, प्रयागराज स्नान मेला

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	राहुकाल |वार	|काल|	समय	बुध	दिवा	12.00–01.30
प्रतिपदा	04.01.2026	07.30	17.55	रवि	सायं	04.30–06.00	गुरु	दिवा	01.30–03.00
अष्टमी	11.01.2026	07.31	18.00	सोम	प्रातः	07.30–09.00	शुक्र	प्रातः	10.30–12.00
अमावस्या	18.01.2026	07.31	18.06	मंगल	दिवा	03.00–04.30	शनि	प्रातः	09.00–10.30

।।श्री श्रीजी महारानी की जय।। ।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। ।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।

।।श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2082 शाके 1947 ईस्वी सन् 2025–26

माघ (तपःश्री) शुक्लपक्ष शिशिर ऋतु सूर्य उत्तरायणे–दक्षिणगोले

तिथिनित्या	तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र समाप्ति	दिनांक	चन्द्र राशि प्रवेश	व्रतोत्सव
अं कामेश्वरी	प्रतिपदा	26.15	सोम	उत्तराषाढ़ा 11.52	19.01.26	मकर	ललितोत्सवः, सर्वार्थ सिद्धि योग 11.52 से 31.30
आं भगमालिनी	द्वितीया	26.43	मंगल	श्रवण 13.07	20.01.26	कुम्भ 25.35	चन्द्रदर्शन, पंचक प्रारम्भ 25.35, अभिजित रवि 28.13
इं नित्यक्लिन्ना	तृतीया	26.48	बुध	धनिष्ठा 13.58	21.01.26	कुम्भ	गौरी तृतीया
ईं भेरुण्डा	चतुर्थी	26.29	गुरू	शतभिषा 14.27	22.01.26	कुम्भ	वरद–विनायक तिल चतुर्थी, भद्रा 14.41 से 26.29
उं वह्निवासिनी	पंचमी	25.47	शुक्र	पूर्वा भाद्रपदी 14.33	23.01.26	मीन 08.34	वसंत पंचमी, श्रीसरस्वती जयन्ती, रति–कामोत्सव
ऊं महावज्रेश्वरी	षष्ठी	24.40	शनि	उ0 भाद्रपदी 14.16	24.01.26	मीन	मन्दार षष्ठी
ऋं शिवदूती	सप्तमी	23.11	रवि	रेवती 13.36	25.01.26	मेष 13.36	पंचक समाप्त 13.36 अचला सप्तमी, रथ–भानु सप्तमी, भद्रा 23.11 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 13.36 से 31.29 तक
ॠं त्वरिता	अष्टमी	21.19	सोम	अश्विनी 12.33	26.01.26	मेष	भीष्माष्टमी, भद्रा 10.17 तक, भारतीय गणतंत्र दिवस 77वां
ऌं कुलसुन्दरी	नवमी	19.06	मंगल	भरणी 11.09	27.01.26	वृष 16.45	सर्वार्थ सिद्धि योग 11.09 से
ॡं नित्या	दशमी	16.37	बुध	कृतिका 09.27	28.01.26	वृष	सर्वार्थ सिद्धि योग 31.28 तक, भद्रा 27.17 से
एं नीलपताका	एकादशी	13.56	गुरु	रोहिणी07.32 मृगशिरा 29.29	29.01.26	मिथुन 18.31	जया एकादशी व्रत, भद्रा 13. 56 तक, भीष्मद्वादशी
ऐं विजया	द्वादशी	11.10	शुक्र	आर्द्रा 27.27	30.01.26	मिथुन	प्रदोषव्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग 27.27 से 31.27
ओं सर्वमंगला+ औं ज्वालामालिनी	त्रयोदशी	08.26	शनि	पुनर्वसु 25.34	31.01.26	कर्क 20.01	भद्रा 29.53 से, विश्वकर्मा जयन्ती, श्री करपात्रीजी पुण्यतिथि
–	चतुर्दशी	29.53	शनि	–	–	–	चतुर्दशी क्षय
अं चित्रा	पूर्णिमा	27.39	रवि	पुष्य 23.58	01.02.26	कर्क	सत्यव्रत, पूर्णिमाव्रत, श्री ललिता महाविद्या जयन्ती, श्रीपीठ श्रीजी दरबार, अभिषेक विशेषार्चन माघी पूर्णिमा, माघ स्नान पूर्ण, भद्रा 16.43 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 07.26 से 23.58, रविपुष्य योग 07.26 से 23.58

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	राहुकाल वार	काल	समय	बुध	दिवा	12.00–01.30
प्रतिपदा	19.01.2026	07.31	18.06	रवि	सायं	04.30–06.00	गुरु	दिवा	01.30–03.00
अष्टमी	26.01.2026	07.29	18.12	सोम	प्रातः	07.30–09.00	शुक्र	प्रातः	10.30–12.00
पूर्णिमा	01.02.2026	07.26	18.16	मंगल	दिवा	03.00–04.30	शनि	प्रातः	09.00–10.30

।।श्री श्रीजी महारानी की जय।।　　।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।।　　।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।

।।श्री गुरूजी महाराज की जय।।　　।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2082　　शाके 1947　　ईस्वी सन् 2025–26

फाल्गुन (तपस्यश्री) कृष्णपक्ष　　शिशिर ऋतु　　सूर्य उत्तरायणे–दक्षिणगोले

तिथिनित्या	तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र समाप्ति	दिनांक	चन्द्र राशि प्रवेश	व्रतोत्सव
अं चित्रा	प्रतिपदा	25.53	सोम	आश्लेषा 22.48	02.02.26	सिंह 22.48	शुक्रोदय 30.10
औं ज्वालामालिनी	द्वितीया	24.41	मंगल	मघा 22.11	03.02.26	सिंह	कुम्भ में बुध 21.52
ओं सर्वमंगला	तृतीया	24.10	बुध	पूर्वा फाल्गुनी 22.13	04.02.26	कन्या 28.20	भद्रा 12.20 से 24.10
ऐं विजया	चतुर्थी	24.23	गुरू	उ0 फाल्गुनी 22.57	05.02.26	कन्या	चतुर्थीव्रत, चन्द्रोदय रात्रि 21.51, कुम्भ में शुक्र 25.11
एं नीलपताका	पंचमी	25.19	शुक्र	हस्त 24.24	06.02.26	कन्या	माता यशोदा जयन्ती
लॄं नित्या	षष्ठी	26.55	शनि	चित्रा 26.28	07.02.26	तुला 13.22	भद्रा 26.55 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 26.28 से 31.22
लृं कुलसुन्दरी	सप्तमी	29.02	रवि	स्वाति 29.03	08.02.26	तुला	भद्रा 15.55 से
ॠं त्वरिता	अष्टमी	अहोरात्र	सोम	विशाखा अहोरात्र	09.02.26	वृश्चिक 25.11	कालाष्टमी, श्री सीताष्टमी
ॠं त्वरिता	अष्टमी	07.28	मंगल	विशाखा 07.55	10.02.26	वृश्चिक	
ऋं शिवदूती	नवमी	09.59	बुध	अनुराधा 10.53	11.02.26	वृश्चिक	समर्थ रामदास नवमी, भद्रा 23.13 से, सर्वार्थ–अमृत सिद्धि योग 07.20 से 10.53
ऊं महावज्रेश्वरी	दशमी	12.23	गुरू	ज्येष्ठा 13.42	12.02.26	धनु 13.42	भद्रा 12.23 तक, कुम्भ संक्रान्ति (विष्णुपदी संज्ञक) 28.10
उं वह्निवासिनी	एकादशी	14.26	शुक्र	मूल 16.13	13.02.26	धनु	विजया एकादशी व्रत
ईं भेरुण्डा	द्वादशी	16.02	शनि	पूर्वाषाढ़ा 18.16	14.02.26	मकर 24.42	शनि प्रदोष व्रत
इं नित्यक्लिन्ना	त्रयोदशी	17.05	रवि	उत्तराषाढ़ा 19.48	15.02.26	मकर	श्री महाशिवरात्रि व्रत जागरण, भद्रा 17.05 से 29.24, सर्वार्थ सिद्धि योग 07.17 से 19.48
आं भगमालिनी	चतुर्दशी	17.35	सोम	श्रवण 20.48	16.02.26	मकर	श्री महाशिवरात्रि व्रत (मतान्तर), शिव खप्पर पूजा, सर्वार्थ सिद्धि योग 07.17 से 20.48
अं कामेश्वरी	अमावस्या	17.31	मंगल	धनिष्ठा 21.16	17.02.26	कुम्भ 09.06	देवपितृकार्ये अमावस्या, पंचक प्रारम्भ 09.06 से

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	राहुकाल ।वार	।काल।	समय	बुध	दिवा	12.00–01.30
प्रतिपदा	02.02.2026	07.26	18.17	रवि	सायं	04.30–06.00	गुरु	दिवा	01.30–03.00
अष्टमी	09.02.2026	07.22	18.22	सोम	प्रातः	07.30–09.00	शुक्र	प्रातः	10.30–12.00
अमावस्या	17.02.2026	07.16	18.28	मंगल	दिवा	03.00–04.30	शनि	प्रातः	09.00–10.30

।।श्री श्रीजी महारानी की जय।।　　।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।।　　।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।

।।श्री गुरूजी महाराज की जय।।　　।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2082　　शाके 1947　　ईस्वी सन् 2025–26

फाल्गुन (तपस्यश्री) शुक्लपक्ष　　शिशिर–बसन्त ऋतु　　सूर्य उत्तरायणे–दक्षिणगोले

तिथिनित्या	तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र समाप्ति	दिनांक	चन्द्र राशि प्रवेश	व्रतोत्सव
अं कामेश्वरी	प्रतिपदा	16.58	बुध	शतभिषा 21.16	18.02.26	कुम्भ	चन्द्रदर्शन, वसन्त ऋतु प्रारंभ 21.22
आं भगमालिनी	द्वितीया	15.59	गुरु	पूर्वा भाद्रपदी 20.52	19.02.26	मीन 15.00	फुलेरा दौज, श्री रामकृष्ण परमहंस जयन्ती
इं नित्यक्लिन्ना	तृतीया	14.39	शुक्र	उ0 भाद्रपदी 20.07	20.02.26	मीन	भद्रा 25.52 से, सर्वार्थ–अमृत सिद्धि योग 20.07 से 31.13
ईं भेरुण्डा	चतुर्थी	13.01	शनि	रेवती 19.07	21.02.26	मेष 19.07	भद्रा 13.01 तक, पंचक समाप्त 30.39
उं वह्निवासिनी	पंचमी	11.10	रवि	अश्विनी 17.55	22.02.26	मेष	सर्वार्थ सिद्धि योग 07.12 से 17.52 तक
ऊं महावज्रेश्वरी+ ऋं शिवदूती	षष्ठी	09.10	सोम	भरणी 16.34	23.02.26	वृष 22.12	भद्रा 31.03 से, कुम्भ में मंगल 11.50
–	सप्तमी	31.03	सोम	–	–	–	सप्तमी क्षय
ॠं त्वरिता	अष्टमी	28.52	मंगल	कृतिका 15.07	24.02.26	वृष	होलिकाष्टक प्रारंभ, भद्रा 17.58 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 07.10 से 15.07
लृं कुलसुन्दरी	नवमी	26.41	बुध	रोहिणी 13.39	25.02.26	मिथुन 24.55	लठ्ठमार होली बरसाना, श्रीधाम मथुरा, सर्वार्थ सिद्धि योग 07.09 से 31.08
लृं नित्या	दशमी	24.34	गुरू	मृगशिरा 12.11	26.02.26	मिथुन	लठ्ठमार होली नन्दगांव, श्रीधाम मथुरा
एं नीलपताका	एकादशी	22.33	शुक्र	आर्द्रा 10.49	27.02.26	कर्क 27.52	आमलकी एकादशी व्रत, भद्रा 11.33 से 22.33, सर्वार्थ सिद्धि योग 10.49 से 31.06, तक, रंगभरनी एकादशी, लठ्ठमार होली, श्रीकृष्ण जन्मभूमि, श्रीधाम मथुरा,
ऐं विजया	द्वादशी	20.44	शनि	पुनर्वसु 09.35	28.02.26	कर्क	गोविन्द द्वादशी
ओं सर्वमंगला	त्रयोदशी	19.10	रवि	पुष्य 08.34	01.03.26	कर्क	प्रदोषव्रत, सर्वार्थ सिद्धि योग 07.05 से 08.34, रविपुष्य योग 07.05 से 08.34 तक, भक्त मीराबाई जयन्ती, मीन में शुक्र 24.57
औं ज्वालामालिनी	चतुर्दशी	17.56	सोम	आश्लेषा 07.52	02.03.26	सिंह 07.52	होलिकापर्व दीपनं (प्रदोषे 18.36 से 21.00) दारूण रात्रि, भद्रा 17.56 से 29.29 पूर्णिमाव्रत
अं चित्रा	पूर्णिमा	17.08	मंगल	मघा 07.32	03.03.26	सिंह	सत्यव्रत, धुलैंडी पर्व, स्नानदानादिपूर्णिमा, श्री चैतन्य महाप्रभु जयन्ती, चन्द्रग्रहण 17.27 से 18.47 तक ग्रहण सूतक प्रातः 06.23 से 18.47

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	राहुकाल वार	काल	समय	वार	काल	समय
							बुध	दिवा	12.00–01.30
प्रतिपदा	18.02.2026	07.15	18.28	रवि	सायं	04.30–06.00	गुरु	दिवा	01.30–03.00
अष्टमी	24.02.2026	07.10	18.32	सोम	प्रातः	07.30–09.00	शुक्र	प्रातः	10.30–12.00
पूर्णिमा	03.03.2026	07.03	18.36	मंगल	दिवा	03.00–04.30	शनि	प्रातः	09.00–10.30

।।श्री श्रीजी महारानी की जय।। ।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।। ।। श्री श्रीजी महाराज की जय।।

।।श्री गुरूजी महाराज की जय।। ।। श्री बाबा महाराज की जय।।

कलामुहूर्तकाष्ठाहर्मासर्तुशरदात्मने नमः सहस्रशीर्षायै सहस्रमुखलोचने।।

वि0सं0 2082 शाके 1947—44 ईस्वी सन् 2025—26

चैत्र (मधुश्री) कृष्णपक्ष वसन्त ऋतु सूर्य उत्तरायणे—दक्षिणगोले

तिथिनित्या	तिथि	समाप्ति घं0मि0	वार	नक्षत्र समाप्ति	दिनांक	चन्द्र राशि प्रवेश	व्रतोत्सव
अं चित्रा	प्रतिपदा	16.49	बुध	पूर्वा फाल्गुनी 07.39	04.03.26	कन्या 13.46	बसन्तोत्सव
औं ज्वालामालिनी	द्वितीया	17.04	गुरु	उ0 फाल्गुनी 08.18	05.03.26	कन्या	सन्त तुकाराम जयन्ती, भद्रा 29.25 से
ओं सर्वमंगला	तृतीया	17.54	शुक्र	हस्त 09.30	06.03.26	तुला 22.19	चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि 21.28, भद्रा 17.54 तक
ऐं विजया	चतुर्थी	19.18	शनि	चित्रा 11.16	07.03.26	तुला	सर्वार्थ सिद्धि योग 11.16 से 30.58
एं नीलपताका	पंचमी	21.12	रवि	स्वाती 13.32	08.03.26	तुला	श्री रंगपंचमी, शनि अस्त 09. 34
लॄं नित्या	षष्ठी	23.28	सोम	विशाखा 16.11	09.03.26	वृश्चिक 09.30	एकनाथ षष्ठी, भद्रा 23.28 से, सर्वार्थ सिद्धि योग 16.11 से 30.56
लृं कुलसुन्दरी	सप्तमी	25.55	मंगल	अनुराधा 19.05	10.03.26	वृश्चिक	शीतला सप्तमी, भद्रा 12. 41तक
ॠं त्वरिता	अष्टमी	28.20	बुध	ज्येष्ठा 22.00	11.03.26	धनु 22.00	शीतलाष्टमी पर्व बासौड़ा, कालाष्टमी, मार्गी गुरु 09.01
ऋं शिवदूती	नवमी	30.30	गुरू	मूल 24.44	12.03.26	धनु	
ऊं महावज्रेश्वरी	दशमी	अहोरात्र	शुक्र	पूर्वाषाढ़ा 27.03	13.03.26	धनु	दशमातापूजन, भद्रा 19.25 से
ऊं महावज्रेश्वरी	दशमी	08.11	शनि	उत्तराषाढ़ा 28.49	14.03.26	मकर 09.33	भद्रा 08.11 तक, सर्वार्थ सिद्धि योग 28.49 से 30.51, मीन संक्रान्ति (षडशीतिमुखा संज्ञक), 25.04
उं वह्निवासिनी	एकादशी	09.17	रवि	श्रवण 29.56	15.03.26	मकर	पापमोचिनी एकादशी व्रत
ईं भेरुण्डा	द्वादशी	09.41	सोम	धनिष्ठा 30.22	16.03.26	कुम्भ 18.14	पंचक प्रारंभ 18.14, सोमप्रदोष व्रत
इं नित्यक्लिन्ना	त्रयोदशी	09.23	मंगल	शतभिषा 30.09	17.03.26	कुम्भ	रंगतेरस, मास शिवरात्रि व्रत, भद्रा 09.23 से 20.59 तक
आं भगमालिनी	चतुर्दशी	08.26	बुध	पूर्वा भाद्रपदी 29.21	18.03.26	मीन 23.36	पितृकार्ये अमावस्या
अं कामेश्वरी	अमावस्या	06.53	गुरू	उ0 भाद्रपदी 28.05	19.03.26	मीन	देवकार्ये अमावस्या, सर्वार्थ—सिद्धि योग 28.05 से, चैत्री नववर्ष प्रारंभ, घटस्थापना

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त	राहुकाल ।वार	।काल।	समय	बुध	दिवा	12.00—01.30
प्रतिपदा	04.03.2026	07.02	18.37	रवि	सायं	04.30—06.00	गुरु	दिवा	01.30—03.00
अष्टमी	11.03.2026	06.55	18.41	सोम	प्रातः	07.30—09.00	शुक्र	प्रातः	10.30—12.00
अमावस्या	19.03.2026	06.47	18.45	मंगल	दिवा	03.00—04.30	शनि	प्रातः	09.00—10.30

आदि गुरुगादी – ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठ श्रीजी मंदिर, बड़ी हवेली (श्रीजी दरबार) और यहाँ की महान गुरुपरम्परा

।। ओम् नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्या सम्प्रदाय कर्तृभ्यो वंशऋषिभ्यो नमो गुरुभ्यः ।।

श्रुति कहती है कि ''**श्री गुरुः सर्वकारण भूता शक्तिः**'' श्री गुरु ही सर्व का कारण है, वे ही कारण शक्ति हैं। वे श्रीभगवान से भी प्रथम पूज्य है क्योंकि भगवान को निर्दिष्ट करने वाले भी वही हैं। गुरु परम्परा का कितना महत्त्व है इसे बल्लभाचार्य महाराज के एक वाक्य से समझा जा सकता है जो उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण के नामकरण प्रकरण में कहा है – **"गुरुपदेशं विना नन्दस्य भगवत्प्राप्तिर्व्यर्था माभूत् इति।"** स्वामी श्री अखंडानन्द जी इस पर कहते कि – भगवान तो नन्द को मिल गये हैं, परन्तु कोई पहचान कराने वाला चाहिये ? बिना मन्त्रोपदेश के, बिना नामोपदेश के मिले हुए भगवान कि प्राप्ति भी व्यर्थ हो जायेगी।" स्पष्ट है कि गुरुपरम्परा वे अनादि परम्पराएं हैं जो "सत्" तत्व को, सनातन तत्व को निर्देशित करती हैं। सामवेदीय तलवारकर शाखा के केनोपनिषत् की श्रुति कहती है कि–

न तत्र चक्षुर्गच्छति न वाग्गच्छति नो मनो, न विद्मो न विजानीमो यथैतदनुशिष्यात्।

–'वहाँ न चक्षु जा सकता है, न वाणी, न ही मन।'

ऋषि कहते हैं कि हम न उसे जानते हैं और न ही यह जानते हैं कि उसकी शिक्षा कैसे दी जाय अन्य को उपदेश कैसे किया जाय ? क्योंकि वह विदित से अन्य है और अविदित से भी परे है, ऐसा है–विदित और अविदित दोनों से परे ये भी हमने गुरुओं से परम्परा के द्वारा सुना है जिन्होंने पर तत्च की हमारे बोध के लिए व्याख्या की । इति सुश्रुम पूर्वेषां । – पूर्व गुरुओं से सुना, गुरू परम्परा से सुना।

शास्त्र कहते हैं कि '**अखण्डसच्चिदानन्दं महावाक्येन लक्ष्यते**' कि अखण्ड सच्चिदानन्द जो तत्व है, जो परब्रह्म है, जो पर तत्व है वह महावाक्य से ही लक्षित होता है। और इन महावाक्यों के प्रकाशक जो हैं, उपदेश करने वाले जो हैं वे हैं – श्री गुरू, सद्गुरुदेव, गुरुनाथ !

तो स्पष्ट ही है कि– श्री गुरू वे तत्व हैं जो सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार, महाप्रभु दत्त और अमलात्मा शुकदेव आदिक महात्माओं द्वारा उपदेशित ब्रह्मतत्व का पर तत्व का अपने भक्त, अपने श्रद्धालु अपने सत्संगी के लिये उपदेश करते हैं, अतः श्रुति ने कहा कि '**श्री गुरुः सर्वकारण भूता शक्तिः**'। महाकवि कालिदास कहते हैं कि श्रृद्धालु शिष्य की श्रृद्धा से राजराजेश्वरी श्रीमाता ही गुरु के रूप में कृपा करती हैं।

देखो, ये हड्डी मांस का साढ़े तीन हाथ का शरीर जिसे चर्म से लपेटा गया है जिसमें हाथ, पैर, वाणी, गुदा, उपस्थ ये कर्मेन्द्रियां, आंख, कान, नाक, जिव्हा, त्वचा ये पाँच ज्ञानेन्द्रियां और मन, बुद्धि, वित्त अहंकार ये चार वृत्तियां अंतरूकरण चतुष्टय है, अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनंदमय ये पांच कोष हैं उस समुच्चय को अपना स्व समझना, स्वयं को देह मानना भूल है, ये उपदेश करने वाले स्वरूपानुसन्धान को संभव बनाने वाले हैं – श्री गुरूदेव श्री गुरूमहाराज ब्रह्मविद्या के उपदेशक, ब्रह्म विद्या की अक्षुण्ण गुरू परम्परा और ऐसी ही एक परम्परा है ऊर्ध्वाम्नाय श्रीपीठ –श्री श्रीजी मंदिर, बड़ी हवेली (श्रीजी दरबार) की गुरुपरम्परा। जहां तक परम्परा की बात है, तो श्रीजी दरबार की परम्परा लगभग साढ़े पांच हजार साल पुरानी है, जो भगवान श्रीकृष्ण के अवतार और अम्बिका वन में कृष्ण रक्षार्थ श्रीमाता विद्येश्वरी महाविद्या के अवतीर्ण होने से सम्बन्धित है, जिसका कि स्पष्ट उल्लेख वाराहपुराण में दिया गया है।

महाविद्येश्वरी देवी कृष्णरक्षार्थमुद्यता। नित्यं सन्निहिता तत्र सिद्धिदा पापनाशिनी।

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं द्वन्द्वातीतं, गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं, भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।।

।। गुं गुरुपादुकाभ्यो नमः ।।

ब्रजस्थ प्राचीनतम् श्रीविद्यापीठ सिद्ध गादी पर सर्वतन्त्र स्वतन्त्र लोकवन्दित एवं सार्वदेशिक आचार्यों में अखण्ड भूमण्डलाचार्य प्रातःस्मरणीय अनन्त श्री विभूषित निगमागम सार हृदय श्री वैदिक सत्सम्प्रदायनिष्ठः

- ❖ श्री श्री 1008 श्री सदाशिव जी महाराज
- ❖ श्री श्री 1008 श्री मकरन्द जी महाराज
- ❖ श्री श्री 1008 श्री जनार्दन जी महाराज
- ❖ श्री श्री 1008 श्री श्रीपति जी महाराज
- ❖ श्री श्री 1008 श्री मोहन जी महाराज
- ❖ श्री श्री 1008 श्री शंकरमुनिजी महाराज
- ❖ श्री श्री 1008 श्री चैतन्यशंकरजी महाराज
- ❖ श्री श्री 1008 श्री शीलचन्द्र जी महाराज
- ❖ श्री श्री 1008 श्री वासुदेव जी महाराज
- ❖ श्री श्री 1008 श्री केशवदेव जी महाराज
- ❖ श्री श्री 1008 श्री शिवप्रकाशदेवजी महाराज सम्वत 1984–2016 वि.
- ❖ श्री श्री 1008 श्री लक्ष्मीपति देवजी महाराज सम्वत 2016–2055 वि.
- ❖ श्री श्री 1008 श्री सुरेश जी बाबा महाराज सम्वत 2055–2071 वि.
- ❖ श्री श्री 1008 श्री श्रीकान्त श्रीजी महाराज सम्वत 2071– अद्यतन

16वीं 17वीं शताब्दी में अपनी उपासना की पूर्णता की खोज में जगन्नाथ पण्डितराज साम्राज्य दीक्षित महोदय मथुरा पधारे और अम्बिका वन (वर्तमान महाविद्या) में तप करने लगे, बहुत समय के पश्चात् भी जब वे श्रीमाता के प्रत्यक्ष दर्शन न कर सके तो उन्होंने तत्कालीन माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मणों के कुलगुरु और वैदिक सत्संप्रदायनिष्ठ तत्कालीन ऊर्ध्वाम्नाय श्रीपीठाधीश्वर स्वनामधन्य प्रातः स्मरणीय श्रीश्री 1008 श्री शंकरमुनि जी महाराज की शरण ली और अम्बिका वन की अधिष्ठात्री देवी विद्येश्वरी महाविद्या के दर्शन की प्रार्थना की, जिस पर प्रातःस्मरणीय महाराजश्री द्वारा वहीं अम्बिका वन में ब्रह्मचक्र – अम्बा यज्ञ का एक वृहद् अनुष्ठान किया गया, जिसमें श्रीमाता महाविद्या ने दर्शन दिये और दीक्षित जी को मोक्ष प्राप्ति का वरदान दिया। तदन्तर महाराजश्री द्वारा उसी स्थान पर मन्दिर का शिखर बन्ध निर्माण करवाया गया। कथा है कि, जब श्रीमान दीक्षित महोदय और प्रातःस्मरणीय श्रीश्री शंकरमुनिजी महाराज कि भेंट हुई तब दीक्षित जी के साथ दो सिंह थे जो महाराजश्री का दर्शन पाकर तत्काल पाषाण के हो गये। इससे श्रद्धानवत श्रीमान सामराज दीक्षित जी द्वारा श्रीजी दरबार की पूजा सपर्या हेतु "पूजारत्न" ग्रन्थ कि रचना की गयी। पूजारत्न ग्रन्थ आज भी श्री श्रीजी मंदिर श्रीजी दरबार के सरस्वती भण्डार में सुरक्षित है और आज भी श्रीजी दरबार की पूजा सपर्या और नियमावली को नियंत्रित करता है। बाद में, श्रीमान दीक्षित महोदय द्वारा बड़े ही सुन्दर शब्दों में संस्कृत पद्य में महाराज जी की स्तुति गयी

गई और श्रीमाता त्रिपुराम्बा श्रीविद्या महाविद्या की नीरजनम् भी, जो की अद्यावधि श्रीजी दरबार में गायी जाती है। श्रीमान दीक्षित जी एक उच्च श्रेणी के खगोलविद भी थे, इन्होने जयसिंहपुरा में ही एक वेधशाला का निर्माण कराया था जिसे बाद में विधर्मी आक्रान्ताओं द्वारा नष्ट कर दिया गया।

प्रातःस्मरणीय श्री शंकरमुनिजी महाराज के महान वंश में आगे प्रातःस्मरणीय श्रीश्री शीलचन्द्र जी महाराज हुए जिन्होंने अवन्तिकापुरी में गंगाजी की आराधना कर उनसे 'श्रीविद्या' का वर प्राप्त किया था। कुछ समय बाद जब आप मथुरा पधारे तो आपके ज्येष्ठ भ्राता अनन्त श्री विभूषित श्री चैतन्य शंकर जी महाराज तथा काशी के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री हलधर भट्ट में शास्त्रार्थ चल रहा था। आपने पूज्य भ्राताश्री से आज्ञा प्राप्त कर उसी समय श्रीमान् हलधर भट्ट महोदय को शास्त्रार्थ में पराजित किया। इसके पश्चात् आप गुरुगद्दी पर अभिषिक्त हुए और मथुरा के सूर्यघाट पर 'सूर्यदेव' को प्रत्यक्ष कर उनसे कई वरदान प्राप्त किये। एक समय प्रातःस्मरणीय श्री शीलचन्द्र जी महाराज ने ऐसे वार्षिकी नवरात्रोत्सव का आयोजन किया जिसमें शैलपुत्री आदि नवदुर्गाओं ने पीठ पर स्वयं प्रकट होकर पूजा ग्रहण की। नवरात्र के षष्ठम दिवस महाराज श्री ने भगवती कात्यायनी की पूजा के लिए विश्रामघाट (मथुरा) पहुँचकर 'श्रीमाता श्रीयमुना' से भगवती कात्यायनी को प्रकट कर उनकी पूजा की यहीं से श्री यमुना षष्ठी महोत्सव का प्रारम्भ भी हुआ जिसकी प्रथम पूजा अद्यावधि श्रीपीठ श्रीजी दरबार से ही की जाती है। श्री यमुनाषष्ठी महोत्सव अब केवल मथुरा में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतवर्ष में मनायी जाती है। तत्पश्चात् पुनः कालरात्रि आदि देवियों को महाराज श्री ने पीठ पर ही प्रत्यक्ष किया। ब्रज क्षेत्र में श्री विद्या की परम्परा जहां कहीं भी है आप ही के द्वारा स्थापित है।

आपके करकमलों से व्रज क्षेत्र में तथा अन्यत्र बहुत से कार्य सम्पन्न हुए। व्रजक्षेत्र के प्रायः सभी महत्वपूर्ण मन्दिर आप ही के द्वारा प्रतिष्ठित कराये गये। मथुरा का सुप्रसिद्ध श्रीद्वारिकाधीश मन्दिर, श्री केशवदेव मन्दिर (श्रीकृष्ण जन्मभूमि) एवं वृन्दावन के प्रसिद्ध श्री बिहारीजी एवं श्री रंगजी के मन्दिर महाराजश्री के करकमलों से ही प्रतिष्ठित हुए हैं। इसके अलावा गजापाइसा के पास स्थित श्री दशभुजी गणेश मन्दिर, विश्राम घाट स्थित मुकुट मन्दिर, भूतेश्वर, रंगेश्वर, गोकर्णेश्वर, वीरभद्रेश्वर, गोपेश्वर, शिवताल एवं गणेश टीला आदि मन्दिर आप ही के द्वारा प्रतिष्ठित कराये गये । अठारहवीं शताब्दी में महाराज श्री ने अपने पूर्वजों द्वारा निर्मित महाविद्या देवी मन्दिर का जीर्णोद्धार और सहस्रचण्डी यज्ञ का आयोजन कराया गया जिसका कि शिलालेख यहाँ (महाविद्या मन्दिर) पर लगा हुआ है तथा देवी की जो वर्तमान प्रतिमा पूजित है, उनका प्राणप्रतिष्ठा करायी गयी। जिसका वर्णन मथुरा राजकीय संग्रहालय से प्रकाशित संग्रहालयाध्यक्ष श्री कृष्णदत्त वाजपेयी की पुस्तक ''मथुरा–परिचय'' में भी है। वाजपेयी जी महाराजश्री के विषय में लिखते हैं कि आप ऊँचे दर्जे के संत थे। महाराज श्री द्वारा कई बार काशी दिग्विजय भी की गई। इतना ही नहीं महाराजश्री महान समाज सुधारक थे। आपने समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने के लिए अथक प्रयास किये। चतुर्वेद समाज के उत्थान के लिए सर्वप्रथम समुदाय को संगठित करने के लिए चतुर्वेदी सभा आदि की स्थापना महाराज श्री द्वारा ही की गई । इसके अलावा चतुर्वेदियों में एक सौ पन्द्रह रुपये के विवाह आदि की व्यवस्था आपके ही द्वारा की गई, जो किसी न किसी रूप में अद्यावधि चल रही है।

ईस्वी सन 1920 में महाराजश्री के आशीर्वाद से महाराजश्री के एक कोलकाता निवासी शिष्य श्रीमान् बाबू बैजनाथ द्वारा प्रातःस्मरणीय श्री वासुदेव जी महाराज के निर्देशन में "श्री माथुर चतुर्वेद संस्कृत विद्यालय, मथुरा" की आधारशिला रखी गयी जो मथुरा के डेम्पियर नगर में स्थित है, जिसका वर्णन तत्कालीन विद्यालय की स्थापना के दस्तावेजों में है। आप स्वामी विरजानन्द जी के समकालीन थे। वास्तव में आप और विरजानन्द जी सहपाठी थे। व्याकरण केसरी रंगदत्त जी, गंगदत्त जी (जिन्होंने स्वामी दयानन्द को मथुरा से पलायन पर विवश किया), कविवर नवनीत जी, बूँटी सिद्ध (गायत्री सिद्ध) एवं गणेशीलाल जी संगीत मार्तण्ड, तान्त्रिक रत्न वृन्दावन जी आदि आपके शिष्यों ने काफी प्रसिद्धि प्राप्त की। आपके एक शिष्य श्रीमान् बूँटी सिद्ध ने मथुरा के एक टीले पर माता गायत्री को प्रत्यक्ष किया था जिससे उस टीले का नाम गायत्री टीला और उनका नाम गायत्री सिद्ध ही पड़ गया। श्री गोपाल सुन्दरी, पीताम्बरा तथा बाला पद्यतियां आपके द्वारा रचित हैं। चौबिया पाड़े में विराजमान श्री महागणपति दशभुजी गणेश का स्वरूप श्री महाराजश्री का ही श्री विग्रह है। जब आपके शिष्यों ने आपके अन्तिम समय में आपसे प्रार्थना की कि हम सदैव आपकी सेवा करना चाहते हैं आप सदैव अपना आशीर्वाद हम पर बनाकर रखें तो महाराज श्री द्वारा दशभुजी गणेश श्री महागणपति के रूप में सदैव चतुर्वेदीयों पर आशीर्वाद बनाये रखने की प्रार्थना स्वीकार की गयी। महाराज श्री द्वारा कितनी ही बार काशी दिग्विजय की गई और काशी ने उद्भट् विद्वानों को शास्त्रार्थ में नतमस्तक किया गया।

सं0 1902 वि0 कार्तिक चतुर्थी के दिन हुआ। आपने इनका नाम विघ्नहर रखा, किन्तु प्यार का नाम बबुआ जी और बाद में आप वासुदेवजी महाराज के नाम से विख्यात हुए। शिष्यों में आपकी 'बाबा महाराज' के नाम से प्रसिद्धि हुई । तदनन्तर पराम्बा की कृपा से आप सर्वशास्त्र निष्णात् ही गये। बाबा महाराज श्री जिह्वा पर वाग्वादिनी माता सरस्वती स्वयं विराजती थीं। महाराजश्री द्वारा कई बार काशी दिग्विजय की गई और विद्वता में मथुरा का परचम लहराया। आपकी धवल कीर्ति का वर्णन मथुरा संग्रहालय से प्रकाशित पुस्तक में भी है।

आपकी शिष्य मण्डली में अर्की मण्डी के महाराज ध्यानसिंह जी थे जिन्हें आपने श्री गोपाल सुन्दरी देवी की दीक्षा तथा पूजा–पद्धति प्रदान की थी। आपके शिष्य वृंदावनजी रतनकुण्ड वालों ने तन्त्र मार्ग में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की। आपने वैष्णव कुलकेतु श्री देवकीनन्दनजी महाराज (कामवन वालों) को असाध्य अवस्था में बचाया। तत्पश्चात् देवकीनन्दन महोदय ने आपसे श्रीविद्या गोपाल मंत्र की दीक्षा प्राप्त की, जिसके द्वारा समय–समय पर श्रीमान देवकीनन्दन जी द्वारा भी अनेक चमत्कार किये गये। आप तंत्र–मंत्र–यंत्र श्रुति, स्मृति, धर्मशास्त्र और ज्योतिष के तत्ववेता विद्वान थे। श्री माथुर चतुर्वेदी सभा का विस्तार आप ही के सफल नेतृत्व में किया गया। आपने वैष्णव कुलकेतु गोपाल लालजी महाराज को असाध्य अवस्था में बचाया। भरतपुर के धाऊ श्री को 60 वर्ष की अवस्था में आपने अपने मन्त्र बल से पुत्र दर्शन कराये एवं मथुरा निवासी अनेक व्यक्तियों को असाध्य परिस्थितियों से मुक्त किया। आपने तत्कालीन भरतपुर नरेश महाराज ब्रजेन्द्रसिंह को समय–समय पर अनेक अद्भुत चमत्कार दिखलाये और उनसे सम्मान प्राप्त किया। आप ही के एक शिष्य श्रीमान् धूजी चौबे ने घोर अकाल की आशंका वाले अवर्षण काल में मंत्र बल से इन्द्रदेव को प्रसन्न कर मूसलाधर वर्षा कराई जिससे उनका नाम ही 'मूसलाधार चौबे' पड़ गया। एक समय महाराज श्री की इच्छा महाप्रभु श्री चैतन्य देव की जन्मभूमि को देखने की हुई और

महाराज श्री ने अपने शिष्यों के साथ मायापुर प्रस्थान किया, वहां पहुंचने पर ज्ञात हुआ कि महाप्रभु की जन्मभूमि तो गंगा के गर्भ में समा गयी है तब महाराज श्री ने अपने शिष्य को अपने शरीर की सुरक्षा का आदेश देकर योगबल से अपना स्थूल शरीर त्याग कर, सूक्ष्म शरीर से गंगा जी के गर्भ में जाकर महाप्रभु चैतन्यदेव के जन्म स्थान के दर्शन किये और तत्पश्चात् मथुरा आये।

पौष कृष्णा 10 गुरुवार सं0 1940 को आपके पुत्र का जन्म हुआ। आपने उनका नाम केशवदेव जी प्रतिष्ठित किया। प्रातःस्मरणीय श्री केशवदेव जी का लाड़ का नाम भैयाजी था और जनसाधारण में आप गुरुजी महाराज के नाम से प्रसिद्ध हुए। आपका आगम–निगम का अध्ययन अपने पूज्य पिताजी द्वारा श्रीजी दरबार की पाठशाला में ही सम्पन्न हुआ। आप 9 वर्ष की अवस्था में सर्वशास्त्र निष्णात् हो गये थे। आपके पितृचरण प्रातः स्मरणीय श्री वासुदेव जी महाराज के कैलाशवास के उपरान्त आपको शिष्य वर्ग ने परम्परानुसार गद्दी पर विराजमान किया। इस समय आपके अंग–अंग पर असाधारण सौन्दर्य एवं श्रीमुख पर ब्रह्म तेज की आभा व्याप्त थी। भरतपुर नरेश महाराज ब्रजेन्द्र सिंह, वैष्णव कुलकेतु श्री गोपाल लाल जी महाराज, तान्त्रिक रन श्रीमान बटुकन नाथ जी उनके पुत्र श्री विष्णुदत्त जी आदि आपके शिष्यों ने काफी प्रसिद्धि प्राप्त की है।

महाराज श्री के ज्येष्ठ पुत्र प्रातः स्मरणीय श्री शिवप्रकाश देव जी महाराज का जन्म सं0 1963 में हुआ था। महाराज श्री ने आपका नाम 'शिवप्रकाश' रखा। घर का नाम 'लालजी' होने के कारण आप जनसाधारण में 'लालबाबा महाराज' के नाम से विख्यात हुए। आप असाधारण विद्वान थे। आपने मध्यमा के चारों खण्डों की परीक्षा एक ही बार में उत्तीर्ण की थी। आपने ज्योतिष, व्याकरण, तंत्र–मंत्र–यंत्र शास्त्र, श्रीमद् देवीभागवत, श्रीमद्भागवत, कर्मकाण्ड और वेदादि समस्त संस्कृत वांगमय का सांगोपांग अध्ययन किया। पराम्बा श्रीजी महाराज की अनुकम्पा से आप बहुत छोटी अवस्था में ही सर्वशास्त्र निष्णात हो गये। आप तंत्र शास्त्र, मंत्र शास्त्र, यंत्र शास्त्र के सार्वदेशिक विद्वान थे। श्री शिव प्रकाश देव जी महाराज के अनुज श्री करुणा शंकर जी महाराज (कन्ने बाबा) भी अपने समय के उद्भट्ट विद्वान थे। आपकी गणना मथुरा के श्रेष्ठ तांत्रिकों में थी। श्रीमान करुणा शंकर जी अपने ज्येष्ठ भ्राता श्री शिवप्रकाश देव जी महाराज को दादाजी के नाम से सम्बोधित किया करते थे। आपका यह सम्बोधन इतना प्रेम पूर्ण और प्रबल था कि श्री शिवप्रकाश देव जी लालबाबा महाराज को समस्त शिष्य सम्प्रदाय आज तक 'दादाजी' महाराज के नाम से ही जानता है। श्री शिवप्रकाश देवजी महाराज ने कलकत्ता के विश्वविख्यात विद्वान एवं कपालिक सम्प्रदाय के आचार्य श्रीमान् चांबर्दिया ओझा को तंत्र–शास्त्र में नतमस्तक कर उनसे एक अद्भुत श्रीयंत्र भेंट में प्राप्त किया। इसी प्रकार सन् 1944–45 के आस–पास कुरुक्षेत्र में एक सूर्य यज्ञ हुआ था। जिसमें सर्वोपरि तीन आचार्यों में से एक आप थे। अन्य दो पद भी भारत के विशिष्ट विद्वानों को ही दिये गये थे। आप वेदान्त/उपनिषदों के प्रकाण्ड विद्वान थे। और गम्भीर एवं अल्पभाषी थे । आपके श्री मुख पर ब्रह्मतेज की ऐसी आभा व्याप्त थी कि आप अंधेरे में बैठे हुए ही स्पष्ट दिखाई देते थे। महाराज श्री के द्वारा रचित अनेक ग्रन्थ हैं। अत्यन्त अल्पावस्था में ही आश्विन शुक्ल एकादशी सं0 2016 को महाराज श्री ब्रह्मलीन हो गये।

महाराजश्री के ज्येष्ठपुत्र प्रातःस्मरणीय अनन्त श्री विभूषित ब्रह्मपाद श्री लक्ष्मीपति देवाचार्य जी महाराज का जन्म आश्विन कृष्णा प्रतिपदा सं0 1990 में हुआ था। घर का

नाम 'मुन्ना जी' होने के कारण आप जन सामान्य में मुन्नाबाबा महाराज के नाम से विख्यात् हुए। जब आपके पितृचरण श्री शिवप्रकाश देवजी महाराज का कैलाशवास हुआ तब आप बी.डी.ओ. के पद पर कार्यरत थे। परिवार की परम्परानुसार आप उक्त पद से त्यागपत्र देकर गद्दी पर विराजमान हुए। आप तंत्र–शास्त्र, मंत्र–शास्त्र एवं यंत्र–शास्त्र तथा ज्योतिष के सार्वदेशिक विद्वान थे। इसके साथ ही आप एक वाणीसिद्ध महापुरुष और एकनिष्ठ उपासना एवं तन्त्रज्ञान की तपोमूर्ति थे। अपने पिताश्री के ही समान आप अत्यन्त गम्भीर एवं अल्पभाषी विद्वान थे, वेदान्त ज्ञान आपको उत्तराधिकार में प्राप्त हुआ था। आप तंत्र ज्ञान की करुणा मूर्ति थे अतः आपने अपने तंत्र ज्ञान से असंख्य शिष्यों का कल्याण किया। आपने अपने तन्त्र ज्ञान के बल से समय–समय पर अनेक चमत्कार दिखाये। 'महाराजश्री' तन्त्र का प्रयोग विश्वकल्याण के लिये करने के समर्थक थे और महाराज श्री का जीवन उनके इसी दृढ़ विश्वास का ज्वलन्त उदाहरण है। महाराजश्री निष्काम कर्मयोगी थे और एक सच्चे सन्यासी एवं सच्चे योगी थे। महाराजश्री ने गृहस्थ आश्रम में रहते हुए भी वैराग्य का एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया। आप वेदान्त के गूढ़ ब्रह्मतत्व का वर्णन बड़े ही सरल शब्दों में किया करते थे। महाराजश्री कहा करते थे कि सत्य और ज्ञान पर्यायवाची हैं। जो सत्य से प्रेम करेगा वही ज्ञान से भी प्रेम कर सकता है। आप भक्ति की पुरजोर वकालत करते और कहते कि, ''ज्ञान – भक्ति का विरोधी नहीं, अपितु मनमानी भक्ति में जो अज्ञान है उसका निषेधक है।''

महाराजश्री, श्री दुर्गा सप्तशती एवं श्रीमद भगवदगीता के प्रकाण्ड विद्वान थे और आपकी शिवगीता एवं श्रीमदभगवदगीता में विशेष श्रद्धा थी। महाराजश्री के दिन का प्रारंभ श्रीमद्भगवद्गीता एवं सौन्दर्य लहरी के श्लोकों की बोलते हुए तथा आचार्य शंकर रचित 'भजगोविन्दम्–भजगोविन्दम्' को गुनगुनाते हुए होता था। गीता के विषय में महाराजश्री बहुधा अपने प्रवचनों में कहा करते थे कि यह शास्त्रों का सार है और गीतातत्व का ज्ञानी दुर्लभ है। आप हिन्दू धर्म के मुख्य दर्शन 'सर्वेभवन्तु सुखिनः' के प्रबल समर्थक थे। संवत् 2055 माघ कृष्ण षष्ठी के दिन महाराजश्री ने अन्तिम समाधि लगाकर अपने चित्त को परब्रह्म में स्थिर कर लिया और अपनी इहलोक लीला समाप्त की। महाराजश्री ने श्री भुवनेश्वरी पंचांग, श्री काली पंचांग आदि ग्रन्थों की रचना की।

आपके ज्येष्ठ पुत्र अनन्त श्री विभूषित श्री सुरेश बाबा महाराज अत्यन्त अल्पभाषी विद्वान और श्रीविद्या के सिद्ध उपासक थे। आपका जन्म सम्वत् 2009 में हुआ। आपने मध्यमा के चारों खण्डों की परीक्षा एक ही बार में उत्तीर्ण की। आप व्याकरण ज्योतिष एवं वेद–वेदान्त जैसे विषयों के साथ आचार्य एवं शिक्षा–शास्त्री थे और आपको श्रीविद्या पर विशेषाधिकार प्राप्त था। आपको वर्ष सन् 1986 में ठा0 श्रीजी महाराज ट्रस्ट (रजि0) का संस्थापक अध्यक्ष बनने का गौरव प्राप्त हुआ । उपरोक्त ट्रस्ट द्वारा ही 'श्री विद्या शोध संस्थान' का पुनः प्रवर्तन एवं संवर्धन वर्ष सन् 1986 में किया गया जिसमें वेद–वेदान्त, मन्त्र–तन्त्र एवं यन्त्र के अलावा ज्योतिष एवं पौरोहित्य के अध्ययन–अध्यापन एवं शोध के प्रकल्प सन्निहित हैं। संवत् 2070 माघकृष्ण पंचमी के दिन महाराज श्री ने अपने चित्त को पराम्बा श्री राजराजेश्वरी भगवान श्रीजी महाराज में स्थिर कर इहलोक से प्रस्थान किया। श्रीजी दरबार की परम्परानुसार शिष्यों ने आपके पुत्र श्रृद्धेय आचार्य श्रीकान्त श्रीजी महाराज को गुरु गादी पर विराजमान किया गया। श्रृद्धेय श्रीकान्त श्रीजी महाराज ने वेदवेदान्त जैसे विषयों के साथ संस्कृत में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप श्रीमद् देवी भागवत श्रीमद् भागवतादि पुराणों के सुमधुर प्रवक्ता हैं और प्रसिद्ध धर्मोपदेशक हैं। आप ज्योतिषाचार्य हैं और वेदान्त भूषण और

साहित्यतीर्थ सम्मान प्राप्त हैं। श्रीकान्त श्रीजी महाराज श्रीजी दरबार की परम्परा के योग्य अधिकारी हैं। आप ठाकुर श्रीजी महाराज ट्रस्ट के संरक्षक तो हैं ही स्वामी श्री हरिदासाराध्य ठाकुर श्री बाँकेबिहारी जी मन्दिर, वृन्दावन की प्रबन्ध कमेटी के सदस्य भी हैं। आपका वेदान्त ज्ञान अतुलनीय है। आप भारतीय दर्शन, उपनिषद, पुराण–इतिहास तथा श्रीविद्या दर्शन के प्रकाण्ड ज्ञाता हैं तथा शिष्य मण्डली को अपने उपदेश से उपकृत करते रहते हैं। आपके श्रीमुख से निःसृत ज्ञानात्मक उपदेशों से चित्त सहज प्रकाशमान हो उठता है। अद्वैत का एकात्मभाव से चिन्तन, पराम्बा के श्रीचरणों में भक्ति, निरन्तर पूजा तथा जपानुष्ठान तथा स्वाध्याय में ही आपका समय व्यतीत होता है। आप सहज स्वभाव, प्रियदर्शी तथा मधुरभाषी हैं। इतनी महान वंशपरम्परा के प्रतिनिधि तथा महान ज्ञानी होने के बाद भी आपका व्यक्तित्व अत्यन्त विनम्र है।

श्रीः चरणानुरागी
सतीश मुकुन्दराम चतुर्वेदी
(दीक्षानाम रामानन्द)
एम0ए0, एम0कॉम0, एम0बी0ए0, एम0एड0,
पी0जी0डी0सी0ए0, एल–एल0बी
प्रधानाचार्य
महामंत्री : **श्रीविद्या शोध संस्थान**

श्रीसत्य सनातन धर्मो विजयतेतरां
जय जय श्रीजी परम कृपालु, शिव कामेश्वर वृहद गोपाल
।। श्री हरिः ।।
"'ब्राह्मणस्य तु देहोऽयं, न कामार्थाय जायते ।
ब्राह्मण्यं बहुभिरवाप्तये तपोभिस्तल्लब्ध्वा न रतिपरेण हेलितव्यं ।
स्वाध्याये तपसि दमे च नित्ययुक्तः
क्षेमार्थी कुशलपरः सदा यतस्व ।।" (महाभारत शांतिपर्व)

– अर्थात ब्राह्मण का यह शरीर, यह ब्राह्मण जन्म भोगोपभोग के लिए, भोग भोगने के लिए पैदा नहीं होता है। बहुत समय तक बड़ी भारी तपस्या करने से ब्राह्मण का शरीर मिलता है । उसे पाकर विषयानुराग में फंसकर उसे व्यर्थ नहीं करना चाहिए । अतः यदि तुम अपना कल्याण चाहते हो तो कुशलप्रद कर्म में संलग्न हो सदा स्वाध्याय, तपस्या और इन्द्रिय संयम में पूर्णतः तत्पर रहने का प्रयत्न करो ......

देखिये, श्री भगवान कहते हैं कि **"बहूनां जन्मनावन्तो ज्ञानवान मां प्रपद्यते"** बहुत से जन्मों के पश्चात् ज्ञानवान अर्थात ब्राह्मण का जन्म मिलता है; ऐसा क्यों ? ब्राह्मण कौन है ? अरे इस संसार पर अनुग्रह करने की इच्छा से ब्रह्म ने जो ईश्वरीय अद्वैत ज्ञान के साथ पृथ्वी पर भेजे हैं, वे ब्राह्मण हैं –

''ईश्वरानुग्रहादेवपुंसांऽद्वैतवासन महद्वय परित्नाणाद विप्राणामुपजायते ।।"

ब्रह्म की तो महिमा ही ऐसी है कि जब उसने ब्रज में जन्म लिया तो साधारण ब्रज गोपी जो अहीरिन थी, वे भी कहने लगीं कि **"कृष्णोऽहम पश्चतगतिं ललितां इति तन्मनाः** – अरी सखी, देख देख मैं कृष्ण हूं! कितनी ललित गति से चलता हूं। परिणाम में महान आचार्यों ने भी उन्हें अपना गुरु माना। तो कहने का आशय यह है कि यह जो ब्राह्मण जन्म मिला है जिसमें ब्रह्माद्वैत का अनुभव संभव है उसका सदुपयोग करो। हमारे पितामह महाराज कहते थे कि ब्राह्मण का जन्म पाकर भी यदि ब्रह्म न हो सके, ब्रह्म को न पा सके तो सबकुछ व्यर्थ है।

देखो ब्राह्मण का जन्म मिलते ही ब्रह्माद्वैत के साधन अवार्ड में मिलते हैं; प्रथम ब्रह्म सूत्र जिसमें सृष्टि के सभी देवताओं, त्रिदेव आदिक सभी का आह्वान किया जाता है द्वितीय वेदमाता गायत्री। **"सविता देवानां प्रसविता"** – देवों की जननी सावित्री, वेदों की जननी सावित्री। इन सावित्री की, गायत्री की महिमा ऐसी है कि इनके जप से ब्रह्माद्वैत सिद्ध हो ही जाता है, लोक को यही शिक्षा देने के लिए ही तो श्री राम – श्री कृष्ण सभी गायत्री जप अत्यंत निष्ठा पूर्वक **"ब्रह्म जजाप्य"** किया करते हैं । अतः ब्राह्मण जन्म में स्वरूपनुसन्धान के साधन भी न्यूनाधिक मिल ही जाते हैं, अब तो बस एक ही कमी रहती है कि श्री हरि का अनुग्रह मानकर उनके प्रति कृतज्ञता का भाव और स्वधर्म पालन –

"हरि तुम बहुत अनुग्रह कीनों,
साधन धाम विबुध दुर्लभ तन मोहि अनुग्रह दीनो।
हरि तुम बहुत अनुग्रह कीनों।"

जहां तक धर्म और सम्प्रदाय कि बात है हम सदैव भ्रमित रहते हैं confused रहते हैं। देखो जी, हमें सर्वप्रथम यह समझना होगा कि वैदिक धर्म/श्रौत धर्म गंतव्य है, साध्य है और संप्रदाय मार्ग हैं, साधन यदि हम यह भली प्रकार समझ गये की मनुष्य जीवन का एक मात्र उद्देश्य स्वस्वरूपनुसन्धान है तब सब कुछ बड़ा आसान हो जाएगा– **'स्वस्वरूपानुसंधान धर्म इत्य भिदीयते'**। जिस अंतर को जानने के लिये – अर्थात ब्राह्मण का यह शरीर, यह ब्राह्मण जन्म भोगोपभोग के लिए, भोग भोगने के लिए पैदा नहीं होता है।

बहुत समय तक बड़ी भारी तपस्या करने से ब्राह्मण का शरीर मिलता है। उसे पाकर विषयानुराग में फंसकर उसे व्यर्थ नहीं करना चाहिए। अतः यदि तुम अपना कल्याण चाहते हो

तो कुशलप्रद कर्म में संलग्न हो सदा स्वाध्याय, तपस्या और इन्द्रिय संयम में पूर्णतः तत्पर रहने का प्रयत्न करो ।.....

देखिये, श्री भगवान कहते हैं कि **"बहूनां जन्मनावन्तो ज्ञानवान मां प्रपद्यते"** बहुत से जन्मों के पश्चात् ज्ञानवान अर्थात ब्राह्मण का जन्म मिलता है; ऐसा क्यों ? ब्राह्मण कौन है ? अरे इस संसार पर अनुग्रह करने की इच्छा से ब्रह्म ने जो ईश्वरीय अद्वैत ज्ञान के साथ पृथ्वी पर भेजे हैं, वे ब्राह्मण हैं **"ईश्वरानुग्रहादेवपुंसां ऽद्वैतवासन महद्रय परित्राणाद विप्राणामुपजायते।।"** ब्रह्म की तो महिमा ही ऐसी है कि जब उसने ब्रज में जन्म लिया तो साधारण ब्रज गोपी जो अहीरिन थीं, वे भी कहने लगी कि **''कृष्णोऽहम पश्चतगतिं ललितां इति तन्मनाः** – अरी सखी, देख देख मैं कृष्ण हूं! कितनी ललित गति से चलता हूं।

परिणाम में महान आचार्यों ने भी उन्हें अपना गुरु माना। तो कहने का आशय यह है कि यह जो ब्राह्मण जन्म मिला है जिसमें ब्रह्माद्वैत का अनुभव संभव है उसका सदुपयोग करो। हमारे पितामह महाराज कहा करते थे कि ब्राह्मण का जन्म पाकर भी यदि ब्रह्म न हो सके, ब्रह्म को न पा सके तो सबकुछ व्यर्थ है।

इस सम्पूर्ण सृष्टि के अन्तर्गत आत्मा ही एकमात्र ऐसा तत्व है जो कि नित्य, शुद्ध, बुद्ध एवं शाश्वत है। अन्य सभी उसी के स्वरूप हैं जो उससे सर्वथा अभिन्न हैं। वही विशुद्ध चैतन्य आत्मा जब प्रकृति के गुण धर्मों से संयुक्त बनता है तो वह अपने वास्तविक मूल स्वरूप को विस्मृत करके प्रकृति को ही निज का स्वरूप–केन्द्र मानने लगता है। यही उसकी भ्रान्ति है, जिसे ही अविद्या माया की संज्ञा कहा है। इसी अविद्या के कारण उसकी जीव संज्ञा बनती है तथा इसी के कारण स्वरूप उसे अनेक सांसारिक मायावी क्लेशों को भोगना होता है। महर्षि पतंजलि योगीराज ने अपने योग दर्शन में पाँच प्रकार के सांसारिक प्रपंचजनक क्लेशों का वर्णन किया है। यथा अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश। साथ ही इनकी उत्पत्ति भूमि को अविद्या का नामकरण किया है। इसी अविद्या माया के कारण ही पंचभौतिक तत्व वाला जीव इस प्रकृति का जो अनित्य–अपवित्र दुःख और अनात्म रूप है उसे वह जीव नित्य–पवित्र सुख एवं आत्मभाव रूप समझकर विभ्रान्त बनते–पतित होता है। इस भ्रान्ति का मूल वैचारिक शक्ति माध्यम से जब जीवात्मा पुनः अपने मूल आत्म स्वरूप का बोध कर लेता है उस ज्ञान स्थिति की रचना होते ही वह शाश्वत एवं परम सुख संरचना को संप्राप्त कर लेता है। इस आत्मतत्व प्रक्रिया को जानने का नाम ही भारतीय दर्शन में योग संज्ञक वर्णित किया गया है।

यदि हम यह भली प्रकार समझ गये की मनुष्य जीवन का एक मात्र उद्देश्य स्वस्वरूपनुसन्धान है तब सब कुछ बड़ा आसान हो जाएगा– 'स्वस्वरूपानुसंधान धर्म इत्य भिदीयते'। जिस अंतर को जानने के लिये हम परेशान हैं, वह स्वयमेव ही हमें स्पष्ट हो जाएगा। मानव मात्र का धर्म सनातनधर्म है, सृष्टि के आदि से ही स्वस्वरूप का अनुसंधान ही धर्म है और यही वैदिक सनातन धर्म का मूल उद्देश्य है। सम्प्रदाय मार्ग हैं, गंतव्य नहीं; साधन हैं, साध्य नहीं ।

अहं हरिः सर्वमिदम् जनार्दनः नान्यत्तः कारणकार्यजातम्। ईदृग्मनो यस्य न तस्य भूयो भवोद्भवा द्वंदगता भवन्ति – मैं तथा सम्पूर्ण जगत जनार्दन श्री हरिः ही हैं। उनसे भिन्न कुछ भी कार्य–कारणादि नहीं है, जिसके चित्त में ऐसी भावना है, उसे फिर देहजन्य राग–द्वेषादि द्वंदरूप रोग की प्राप्ति नहीं होती है।

प्रस्तुतीः
श्री वैदिक सनातन धर्म प्रकाशन
यज्ञशाला/सत्संगभवन, श्रीपीठ, श्री श्रीजी मंदिर,
बड़ी हवेली– श्रीजी दरबार,
महाराजश्री की ठेक, गतश्रम टीला, मथुरा

श्री वैदिक सनातन धर्म परिषद् के उद्देश्य
(श्री श्रीजी दरबार धर्मार्थ न्यास द्वारा गठित एवं संचालित)

श्री वैदिक सनातन धर्म परिषद मानव कल्याण के महाव्रत के साथ श्री श्रीजी दरबार धर्मार्थ न्यास द्वारा गठित की गयी है। महाव्रत की शास्त्रीय परिभाषानुसारः

'जातिदेशकाल समयानवच्छिन्नाः सार्वभौमा महाव्रतम् ।'

अर्थात् जाति, देश और काल के नियम से अविच्छिन्न महाव्रत हैं। अतः स्पष्ट है कि श्री वैदिक सनातनधर्म परिषद् का गठन जाति, देश और काल के नियम से अविच्छिन्न है।

1. विश्वकल्याणः सम्पूर्ण विश्व को सुख पहुँचाना इस सभा का मुख्य उद्देश्य है।
2. 'मध्यते तु जगत्सर्व ब्रह्म ज्ञानेन येन हि । तत्सार भूतं यद्यत् स्यात् मथुरा स निगद्यते।' आदि श्रुति वाक्यों के अनुसार मथुरा के ऐतिहासिक वैदिक एवं ब्रह्मनिष्ठ स्वरूपानुकूल वेद वेदान्त, धर्मशास्त्र आदि के अध्ययन–अध्यापन की निःशुल्क व्यवस्था करना एवं समाज के बौद्धिक आध्यात्मिक विकास हेतु पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन की व्यवस्था करना।
3. 'गावो लोकपरायणाः । गावः परमं महत् ।'–गौ लोक का आश्रय हैं, गौ महान देवता है। आदि शास्त्रवाक्यों के अनुसार गौ–संरक्षण के उद्देश्य से विशाल गौशालाओं का निर्माण करना एवं असहाय, बीमार एवं वृद्ध गायों का पालन–पोषण, सेवा तथा बीमार गायों के उपचार हेतु व्यवस्था करना ।
4. ब्रज क्षेत्र की जीवनधारा ' श्री यमुना' की प्रदूषण मुक्ति हेतु यथासंभव प्रयास करना एवं इस हेतु प्रयासरत अन्य संस्थाओं से सहयोग करना ।
5. असहाय व्यक्तियों के लिए अन्नक्षेत्र, पेयजल आदि की व्यवस्था एवं उनके ठहरने के लिए आश्रम, आलय आदि का निर्माण एवं व्यवस्था ।
6. श्रीपीठ– श्रीजी मंदिर द्वारा समय–समय पर आयोजित जयन्तियों, पर्वो एवं रथयात्रादि अन्य उत्सवों के आयोजन में सहयोग।
7. जो–जो मनुष्य इस परमहितकारी कार्य में तन–मन–धन से प्रयत्न और सहायता करें, वह वह इस सभा में प्रतिष्ठा के योग्य होंगे।
8. यह कार्य सर्वहितकारी है– इसलिये सह सभा भूगोलस्थ मनुष्यजाति से सहायता की पूरी आशा रखती है।
9. जो–जो सभा देश–देशान्तर और द्वीप–द्वीपान्तर में परोपकार करना अभीष्ट रखती है, वह वह इस सभा की सहायकारिणी समझी जायेगी।
10. जो–जो मनुष्य राजनीति एवं प्रजा के अभीष्ट से विरुद्ध स्वार्थी, क्रोधी और अविद्यादि दोषों से प्रमत्त होकर राष्ट्र, राष्ट्राधिप और राष्ट्रवासियों के लिये अनिष्ट कर्म करे, वह वह इस सभा से सम्बन्धित न समझा जाये।
11. समान उद्देश्य की अन्य संस्थाओं का उनके उद्देश्य प्राप्ति में सहयोग एवं लोक–कल्याण के उद्देश्य हेतु प्रकाश, स्वच्छता एवं पेयजलादि की व्यवस्था ।

यदि आप परिषद् की उक्त उद्देश्यों में किसी भी प्रकार का सहयोग करना चाहते हैं तो कृपया परिषद् के पदाधिकारियों से सम्पर्क करें।

अखण्ड भूमण्डलाचार्य प्रातः स्मरणीय अनन्त श्री विभूषिताचार्य
ऊर्ध्वाम्नाय सिद्ध श्रीपीठाधीश्वर श्री श्री श्रीपाद् आचार्य

श्री श्री 1008 श्री सुरेश जी बाबा महाराज
(गुरुजी महाराज)

श्रीपाद् आचार्य श्रीकान्त श्रीजी महाराज
(वर्तमान पीठाधीश्वर)

|| श्री मन्महागणाधिपतये नमः ||

|| श्री बाबा महाराजाय नमः ||